जिनसहस्रनाम - एक परिचय

(प्रस्तावना - प्रथम संस्करण)

महाकवि आचार्य जिनसेन स्वामी ने श्री आदिनाथ भगवान के संपूर्ण जीवन को महापुराण ग्रंथ में गुंथित किया है, जिसमें अष्टाधिक सहस्रनाम रूप पुष्पों की पुष्पमाला भगवान के चरणों में श्रद्धा, भक्तिपूर्वक समर्पित की है।

संसार के समस्त देवी–देवताओं के नाम आदिनाथ भगवान के लिये सार्थक हैं। जैन दर्शन में नाम की अथवा व्यक्ति की पूजा नहीं अपितु गुणों की पूजा की गई है – गुण ही पूज्य हैं। गुणों की ही शब्दों में रचना भगवान के नाम हैं। अरहंत भगवान में अनंत गुण हैं। अतः भगवान के अनंत नाम हैं। इस स्तोत्र में आचार्य भगवन् ने उन अनन्त नामों में से १००८ नामों से भगवान की स्तुति की है। सहस्रनाम स्तोत्र की प्रस्तावना में आचार्य जिनसेन महाराज लिखते हैं –

अलमास्तां गुणस्तोत्र, मनन्तास्तावका गुणाः।
त्वां नाम स्मृति मात्रेण, पर्युपासि–सिषामहे।।

''हे जिनेन्द्र! आपके गुणों का कथन असंभव है, क्योंकि आपके गुण अनन्त हैं। अतः हम आपके नामों के स्मरण मात्र से आपकी उपासना करते हैं।''

प्रश्न हो सकता है कि यह स्तुति १००८ नामों द्वारा ही क्यों की गई है। भगवान के नाम १००८ से कम या अधिक भी हो सकते हैं। छद्मस्थ व्यक्तियों के द्वारा भगवान के अनन्तगुणों की अनन्त नामों से स्तुति करना या लिखना संभव नहीं है। यदि आचार्य भगवन् अधिक लिखते तो पूरा महापुराण ग्रंथ स्तुति से ही पूर्ण हो जाता। द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव की अनुकूलता को दृष्टि में रखते हुये आचार्य भगवन् ने १००८ नामों से भगवान की स्तुति की है। इस विषय में ऐसा भी कहा जाता है कि तीर्थंकर भगवान के शरीर में ९०० व्यंजन तथा १०८ लक्षण होते हैं। इनको मिलाने पर १००८ की संख्या प्राप्त होती है तथा भगवान के नाम के आगे १००८ लगाया जाता है। सौधर्म इन्द्र समवशरण में साक्षात् जिनेन्द्र भगवान के दर्शन करके १००८ नामों से तीर्थंकर भगवान की स्तुति करता है इसीलिये जिनसेन महाराज ने १००८ नामों से भगवान की स्तुति की है।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

जिनसेन महाराज कहते हैं कि भव्य जीवों को अपने पापों की शांति के लिये भगवान के सहस्रनामों को स्मरण करना चाहिये।

आराधना कथा कोष में ब्र० ब्रह्मदत्त जी ने राजा श्रेणिक की कथा में लिखा है – भगवान महावीर स्वामी का उपदेश सुनने के बाद राजा श्रेणिक तीर्थंकर भगवान की उपासना तीनों काल सहस्रनामों के द्वारा करता था। **जिनेन्द्र की सहस्रनामों से त्रिकाल उपासना करने से राजा श्रेणिक का सातवें नरक का ३३ सागर का आयु कर्म बंध घटकर प्रथम नरक में ८४००० वर्ष का हो गया था तथा भगवान की भक्ति से श्रेणिक ने तीर्थंकर प्रकृति का बंध कर लिया। राजा श्रेणिक इसी भरत क्षेत्र में आगामी चतुर्थकाल में महापद्म नाम के प्रथम तीर्थंकर बनेंगे।**

आचार्य वीरसेन महाराज ने धवल ग्रंथ में कहा है –

जिणबिंब दंसणेण णिधत्तंणिकाचिदस्य।
विमिच्छत्तदि कम्म कलावस्य खय दंसणादो। ध. ग्र.

''जिनेन्द्र भगवान के दर्शन मात्र से निधत्ति व निकाचित कर्म भी क्षय को प्राप्त हो जाते हैं।''

विघ्नौघा प्रलयं यान्ति शाकिनी भूत पन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे।।
एकापि समर्थेयं जिनभक्ति दुर्गति निवारयितुं।
पुण्यानि च पूरयितुं दातुं मुक्तिश्रियं कृतिना।।

जिनेन्द्र भगवान की स्तुति करने वाले भक्त के विघ्न शांत हो जाते हैं। शाकिनी, भूत, पिशाच दूर हो जाते हैं। विष निर्विष हो जाता है। एक जिनेन्द्र भक्ति दुर्गति का निवारण करने में समर्थ है। संपूर्ण पुण्य को देने में समर्थ है। तथा मुक्ति लक्ष्मी प्रदान करने में समर्थ है।

भगवान का नाम ही मंत्र, तंत्र, औषधि तथा समस्त मनोरथों को पूर्ण करने वाला चिंतामणि रत्न है। कवि धनञ्जय ने विषापहार स्तोत्र में कहा है –

विषापहारं मणिमौषधानि, मंत्रं समुद्दिश्य रसायनं च।
भ्राम्यन्त्यहो न त्वमिति स्मरंति पर्यायनामानि तवैव तानि।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

''हे भगवन्! विष दूर करने के लिये लोग मणि, औषधि, मंत्र तथा रसायन को खोजते हुये भटका करते हैं। वे यह नहीं जानते हैं कि **मणि, यंत्र, औषधि, रसायन आदि यथार्थ में आपके ही नामान्तर हैं।** अर्थात्, आपके नाम की महिमा से भयानक रोग तथा प्राणान्तक सर्प का विष भी दूर हो जाता है।'' इस स्तुति को पढ़ते ही कवि का पुत्र विषमुक्त हो गया था। जिनाभिषेक से अनेक लोगों के विषमुक्ति की घटनाओं का उल्लेख मिलता है।

आचार्य मानतुंग महाराज ने भी कहा है कि भगवान की भक्ति से संसार के समस्त भय दूर हो जाते हैं तथा परमार्थ की सिद्धि होती है।

एक बार लंकाधिपति की भक्ति से प्रसन्न होकर नागेन्द्र कुछ विद्या देने की दृष्टि से कहने लगा – ''तुम्हारी भक्ति से मेरा हृदय अत्यंत आनंदित है, बोलो तुम्हें मैं क्या भेंट दूँ''। तब लंकाधिपति बोले – ''जिनेन्द्र भगवान की आराधना से बढ़कर क्या कोई वस्तु है जिसे आप देना चाहते हैं''। तब नागेन्द्र ने उत्तर दिया – ''जिनवंदनातुल्यं अन्यं किमपि न विद्यते'' **जिनेन्द्र भक्ति से बढ़कर अन्य कोई वस्तु नहीं है।**

संसार में जिनेन्द्र भक्ति से बढ़कर कुछ भी नहीं है। **जिस व्यक्ति के हृदय में सदैव जिनदेव का निवास रहता है वह परम सौभाग्यशाली है।** भक्त भक्ति के फलस्वरूप भगवान से यही प्रार्थना करता है कि हे प्रभो!

तव पादौ मम – हृदये मम हृदयं पद द्वये लीनं।
तिष्ठतु जिनेन्द्र तावत यावन्निर्वाण संप्राप्ति।।

''हे प्रभो! आपके चरण कमल मेरे हृदय में रहें तथा मेरा हृदय आपके श्री चरणों में तब तक रहे जबतक कि मुझे मोक्ष की प्राप्ति न हो जाये।''

भरत चक्रवर्ती आदिनाथ भगवान के चरणों में प्रार्थना करते हैं –

भगवन्! त्वद्गुणस्तोत्रात् यन्मया पुण्यमर्जितम्।
तेनास्तु त्वद्पादाम्भोजे परा भक्तिः सदाऽपि मे। (महापुराण)

''हे आदिनाथ भगवन्! आपके गुणों का स्तवन करने से मुझे जो पुण्य का लाभ हुआ है उससे मैं इस फल की अभिलाषा करता हूँ कि मुझको आपके प्रति सदा उत्कृष्ट भक्ति प्राप्त होवे।''

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

भगवान वीतरागी हैं, वे कुछ नहीं देते हैं। परन्तु भक्त उनकी भक्ति में लीन होकर सब कुछ पा लेता है। इसलिये भक्त सदैव भगवान में लीन रहना चाहता है।

जिनसेन स्वामी द्वारा रचित ''सहस्रनाम स्तोत्र'' सर्वोत्कृष्ट भक्ति का स्तोत्र है। प्रस्तुत कृति में उन १००८ नामों की मंत्रावली है। इसको जो भव्य प्रतिदिन स्मरण करता है, प्रतिदिन जाप करता है, वह भक्ति के उत्कृष्ट फल को अवश्य प्राप्त करता है।

जो भव्य प्रतिदिन त्रिकाल दीप, धूप के साथ इन सहस्र मंत्रो का जाप करता है उसके समस्त मनोरथों की सिद्धि होती है।

प्रतिदिन सहस्र मंत्रों के जाप से स्मरण शक्ति भी बढ़ती है।

धाम्नांपते तवामूनि, नामान्यागम – कोविदैः।
समुच्चितान् – यनुध्यायन, पुमान् पूतस्मृति – र्भवेत्।।

हे महातेजस्वी जिनेन्द्र! आगम के ज्ञाता विद्वानों के द्वारा संकलित इन १००८ नामों का जो मानव ध्यान करता है उसकी स्मरण शक्ति विशेष पवित्र हो जाती है।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

जिनसहस्रनाम

(प्रस्तावना - द्वितीय संस्करण)

जिनसहस्रनाम स्तोत्र आचार्य जिनसेन स्वामी की सर्वोत्कृष्ट भक्ति रचना है। इसमें जिनसेन महाराज ने प्रस्तावना के रूप में 34 श्लोकों में जिनेन्द्र भगवान के गुणों की स्तुति की है। पुनः 10 अध्यायों में 119 श्लोकों में 1008 नामों से जिनेन्द्र भगवान की स्तुति की है तथा अंतिम उपसंहार के रूप में 13 श्लोकों में पुनः स्तुति करके भक्ति के फल का वर्णन किया है।

जिस प्रकार से गेहूँ एक अनाज है किंतु उसे अनेक प्रकार के व्यंजन रोटी, पराठे, पूड़ी, आदि के रूप में उपयोग किया जाता है, उसी प्रकार जिनेन्द्र भक्त एक सहस्रनाम स्तोत्र से पूजा–पाठ जाप–विधान आदि अनेक रूपों में जिनेन्द्र देव की आराधना करता है। फलस्वरूप, वह अपने पापों को शांत करता है तथा इष्ट फलों को प्राप्त करता है। क्योंकि **जिनेन्द्र देव के नाम स्मरण से भी पापकर्म शीघ्र नष्ट होते हैं, नाम, जाप से मनोवांछित कार्य की सिद्धि स्वतः ही हो जाती है।** जिनसेन स्वामी कहते हैं :–

एवं स्तुत्वा जिनं देवं भक्त्या परमया सुधी।
पठेदष्टोत्तरं नाम्नां सहस्रं पाप शान्तये।।
प्रसिद्धाष्ट सहस्रेद्धलक्षणं त्वां गिरां पतिं।
नाम्नामष्ट सहस्रेण तोष्टुमोऽभीष्टसिद्धये।।

इस प्रकार उत्कृष्ट भक्ति से जिनेन्द्र देव की स्तुति करके बुद्धिमान मनुष्य अपने पापों को क्षय करने हेतु एक हजार आठ (1008) नामों को निरंतर पढ़ें। मनोवांछित पदार्थ की सिद्धि के लिये प्रसिद्ध एक हजार आठ लक्षणों को प्राप्त वाणी के पति (700 लघु भाषा व 18 महाभाषाओं के अधिपति) आपकी 1008 नामों से स्तुति करते हैं।

प्रस्तुत कृति में जिनसेन महाराज के द्वारा रचित 1008 नामों को 1008 मंत्रो के रूप में प्रस्तुत किया गया है तथा **जिनसहस्रनाम पूजा** एवं **जिनसहस्रनाम स्तोत्र** भी दिया गया है।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

प्रत्येक नाम को **"ॐ ह्रीं अर्हं"** इन तीन बीजाक्षरों से संयुक्त किया गया है। प्रत्येक नाम को नमस्कार अर्थ में चतुर्थी विभक्ति के साथ प्रयोग किया है तथा अंत में **"नमः"** द्वारा जिनेन्द्रदेव को भक्ति पूर्वक नमस्कार किया गया है।

जिनेन्द्रदेव के नाम स्वयं मंत्र हैं। नामों के साथ बीजाक्षरों को जोड़कर मंत्र बनाने से उन नामों की शक्ति कई गुणी अधिक बढ़ जाती है। जिस प्रकार राई के दाने के बराबर बड़ के बीज में बड़ का विशाल वृक्ष बनने की शक्ति हैं। सम्पूर्ण बड़ का वृक्ष उस बीज में समाया है। उसी प्रकार **"ॐ ह्रीं अर्हं"** इन तीनों ही बीजाक्षरों में अनन्त शक्ति है। **पंचपरमेष्ठी, चौबीस तीर्थंकर** तथा **सम्पूर्ण द्वादशांग** इसमें समाहित है।

ॐ बीजाक्षर पंच परमेष्ठी वाचक है। **अरिहंत** का **'अ'**, **अशरीरी** (सिद्ध) का **'अ'**, **आचार्य** का **'आ'**, **उपाध्याय** का **'उ'** तथा **मुनि** का **'म्'** – **'ॐ'** बीजाक्षर में बीज रूप से समाहित है। **(अ+अ+आ+उ+म् त्र ओम्)** ॐकार की आराधना **पंच परमेष्ठियों** की आराधना है। **पंचपरमेष्ठियों** की भक्ति से भुक्ति तथा मुक्ति दोनों प्राप्त होती है।

ओकारं बिंदु संयुक्तं नित्यं ध्यायंति योगिना।
कामदं मोक्षदं चैव ओंकाराय नमो नमः।।

योगीजन नित्य बिंदु से संयुक्त ओंकार का ध्यान करते हैं। वह ओंकार कामनाओं (इच्छाओं) तथा मोक्ष को प्रदान करने वाला है। ओंकार को बार–बार नमस्कार हो।

आकृष्टिं सुरसंपदां विदधते, मुक्तिश्रियो वश्यताम्।
उच्चाटं विपदां चतुर्गतिभुवां, विद्वेषमात्मैनसाम्।।
स्तंभं दुर्गमनं प्रति प्रयततो, मोहस्य संमोहनं।
पायात्पंच नमस्क्रियाक्षरमयी, साराधना देवता।।

जो देवों की विभूति का आकर्षण, मुक्ति लक्ष्मी का वशीकरण, चारों गतियों में होने वाली विपत्तियों का उच्चाटन–नाश, आत्मा संबंधी पापों का विद्वेष–अभाव, दुर्गति में जाने वालों का स्तंभन–रोकथाम और मोह का संमोहन करती है, वह पंच परमेष्ठी मंत्र की अक्षर रूप आराधना देवी मेरी रक्षा करे।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

पंच परमेष्ठियों की आराधना की अपूर्व महिमा है। इस एक ही आराधना में एक साथ आकर्षण, वशीकरण, उच्चाटन, विद्वेषण, स्तंभन व सम्मोहन करने की सामर्थ्य है। नवग्रह शांति के मंत्रों में भी पंच परमेष्ठियों की आराधना की जाती है।

ह्रीं बीजाक्षर श्री ऋषभदेव आदि चौबीस तीर्थंकरों का वाचक है। वे अपने–अपने वर्णों से युक्त होकर विराजमान हैं। उनका ध्यान करना चाहिये। इस **ह्रीं** में जो नाद (ँ) है वह चंद्र के समान आकार व वर्ण वाला है। जो बिंदु (ं) है, वह नीलमणि की प्रभा वाला है। जो कला (–) है, वह लालवर्ण की है और जो **'ह'** अक्षर है, वह स्वर्ण के समान आभा वाला है। शिर के उपर जो (ी) ईकार है, वह हरित वर्ण की है। इस तरह उन–उन वर्ण वाले तीर्थंकर देव उन–उन स्थानों में स्थित हैं।

चन्द्रप्रभ और पुष्पदन्त भगवान श्वेत वर्ण वाले होने से ये दोनों नाद (ँ) में स्थित हैं। नेमिनाथ और मुनिसुव्रत नाथ भगवान नीलवर्ण वाले हैं। अतः वे बिंदु (ं) में विराजमान हैं। पद्मप्रभ और वासुपूज्य भगवान लाल वर्ण वाले होने से वे कला (–) में विराजमान हैं तथा सुपार्श्वनाथ और पार्श्वनाथ भगवान हरित वर्ण के हैं। अतः वे शिर के उपर स्थित ईकार (ी) में स्थित हैं तथा 16 तीर्थंकर सुवर्ण के समान छवि वाले होने से र् और ह् (ह्र) में स्थापित हैं अर्थात् 24 तीर्थंकर इस माया बीजाक्षर **(ह्रीं)** रूप को प्राप्त हो गये हैं। उन सबको मेरा नमस्कार होवे। **ह्रीं** माया बीजाक्षर की आराधना से 24 तीर्थंकरों की आराधना की जाती है। 24 तीर्थंकरों की आराधना से समस्त पापकर्मों का क्षय व नवग्रह की शांति होती है। नवग्रह शांति की पूजा एवं विधान में 24 तीर्थंकरों की आराधना की जाती है।

अर्हं बीजाक्षर – यह **अर्हं** बीजाक्षर अर्हन्तदेव का वाचक है।

अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणिदध्महे।

अर्हं बीजाक्षर शुद्ध आत्म तत्व (ब्रह्म) – परमात्मा का वाचक है,– परमेष्ठी का वाचक है। सिद्ध परमेष्ठी के समूह के समीचीन उत्तम बीजाक्षर **"अर्हं"** इस अक्षर का हम पूर्ण रूप से ध्यान करते हैं।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

आद्यंताक्षरसंलक्ष्यमक्षरं व्याप्य यत्स्थितं।
अग्निज्वाला समं नादं बिंदु रेखा समन्वितं।।
अग्निज्वाला समाक्रांतं मनोमलविशोधनं।
दैदीप्यमानं हृत्पद्मे तत्पदं नौमि निर्मलं।।

अर्हं बीजाक्षर में 'अ' स्वर से प्रारम्भ होकर 'ह' व्यंजन पर्यंत सम्पूर्ण स्वर व व्यंजन समाहित है। अंत के वर्ण के साथ अग्नि ज्वाला अर्थात् 'र्' कार मिलाना और उसका मस्तक बिंदु और अर्ध चंद्रकार से युक्त करना। इस प्रकार अर्हं बन गया।

स्वर – अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः
व्यंजन – क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ़ ण त थ
द ध न प फ ब भ म य र ल व ष श स ह

इन्हीं सम्पूर्ण स्वर व व्यंजनो से द्वादशांग जिनवाणी की रचना होती है। अतः इन स्वर व व्यंजनों की आराधना से संपूर्ण द्वादशांग जिनवाणी की आराधना हो जाती है। जिनवाणी की आराधना से ज्ञानावरणी कर्म का क्षय होता है।

इन स्वर व व्यंजनों से समन्वित एक मातृका मंत्र व यंत्र होता है। जिसकी आराधना एवं एकाग्रध्यान से केवलज्ञान उत्पन्न होता है। पंच कल्याणक महोत्सव में भी मातृका मंत्र का जाप तथा यंत्र की आराधना केवलज्ञान कल्याणक के समय की जाती है।

"अर्हं" बीजाक्षर की आराधना से ज्ञानावरणी कर्म का क्षयोपशम बढ़ता है तथा आत्म ज्ञान प्रकट होता है। आत्म तत्त्व का प्रकाश होता है। यह **अर्हं** पद अग्नि ज्वाला के समान तेज पुंज है, मन के दोषों को धोने वाला है, दैदीप्यमान है। इस परम पवित्र **"अर्हं"** पद को हृदय कमल पर स्थापन करके निर्मल चित्त से नमस्कार करना चाहिये, क्योंकि **यह 'अर्हं' पद अर्हंत पद को प्रदान करने वाला है। "नमः"** यह पद पूजा, भक्ति, वन्दना, आराधना, नमस्कार का वाचक है।

इस प्रकार भगवान के नामों के साथ बीजाक्षरों का समन्वय होने से इस सहस्रमंत्र जाप में मंत्र यंत्र तंत्र की सम्पूर्ण शक्ति समाहित है। जो भव्य

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

प्रतिदिन जिनसहस्र मंत्र जाप अथवा पूजन से जिनेन्द्र भगवान की श्रद्धा भक्ति पूर्वक आराधना करता है, उसके सांसारिक जीवन में आने वाली समस्त आधि–व्याधि, विघ्न, बाधायें तथा भूत–प्रेत आदि का भय नष्ट हो जाता है। इन मंत्रों के जाप से सभी प्रतिकूलतायें धीरे–धीरे अनुकूल हो जाती हैं। जिन–धर्म के प्रति श्रद्धा विश्वास प्रगाढ़ हो जाता है।

जिनसेन महाराज के द्वारा रचित **सहस्रनाम स्तोत्र तथा मंत्र जाप** के प्रति मेरे हृदय में अपरिमित श्रद्धा भक्ति का भाव सदैव रहता है। मैनें अनुभव किया है– अनेक श्रावकों के द्वारा सहस्रमंत्र का जाप करने से मनोवांछित सांसारिक कार्यों की सिद्धि हुई है। अतः पंचमकाल का भोला श्रावक प्रतिकूलताओं से व्यथित होकर मिथ्यात्व का सेवन न करे – जिन धर्म की आराधना करे – इस भावना से कलकत्ता में सन् 2007 में **जिनसहस्रमंत्रो** की लघु पुस्तिका का प्रकाशन हुआ था। पुनः उसी मंत्रावली में **जिनसहस्रनाम** पूजा तथा **जिनसहस्रनाम स्तोत्र** को जोड़कर दैनिक जीवन में पूजा, पाठ एवं जाप के लिए उपयोगी बनाया गया है, जिससे श्रावक अष्टद्रव्य से पूजा के साथ मंत्रजाप करके सातिशय पुण्य का बंध करे।

धर्म प्रभावना हेतु **जिनसहस्रनाम** की इस लघु कृति के प्रकाशन में तन, मन, धन से जिन भव्यात्माओं ने सहयोग देकर जिनेन्द्र भगवान के समक्ष श्रद्धा–भक्ति समर्पित की है, उन सबको मेरा मंगल आशीर्वाद है। वे इसी प्रकार धर्म प्रभावना के कार्यों में सदैव तत्पर रहें, जिसके फलस्वरूप आप सबको मुक्ति मंजिल मिले।

शत इन्द्रों से वंदित, समवशरण आदि वाह्य विभूति तथा अनन्त चतुष्टय रूप अंतरंग विभूति से विभूषित **आदिनाथ भगवान** अथवा **चौबीस तीर्थंकरों** को केवल ज्ञान के अविभाग प्रतिच्छेद प्रमाण बार अर्चना पूजा वंदना नमस्कार समर्पित है।

जिनकी कृपा (लेखनी) से हमें यह **जिनसहस्रनाम स्तोत्र** प्राप्त हुआ है उन **आचार्य जिनसेन स्वामी** के चरणों में त्रय भक्ति पूर्वक अनन्तों बार नमोस्तु समर्पित है।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

जिनकी **जिनसहस्रनाम स्तोत्र** टीका के आधार से नाममंत्रों तथा स्तोत्र का शुद्धिकरण किया है – उन **जिनसहस्रनाम** की टीका करके अमरता पाने वाले परमपूज्य **आचार्य अमरकीर्ति स्वामी** को त्रय भक्तिपूर्वक अनन्तों बार नमोस्तु समर्पित है।

अंत में जिनका मंगल आशीष हम जैसे निर्बल मुक्तिपथ पथिक का संबल है उन परमपूज्य **आचार्य गुरूवर विराग सागर जी महाराज** के श्री चरणों में सिद्ध श्रुत आचार्य भक्ति पूर्वक अनन्तों बार नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु .....

आर्यिका विभाश्री

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

जिनसहस्रनाम - पूजन एवं जाप विधि

जिनसहस्र मंत्र असाधारण मंत्र है। जिनेन्द्र भगवान के नामों की अपरिमित अगाढ़ महिमा है। आत्म विशुद्धि के लिये श्रद्धाभक्ति से विधिपूर्वक किये गये जाप से मन प्रसन्न, शांत व शुद्ध हो जाता है। हजारों देवी–देवता इन मंत्रो के जाप से प्रभावित होते हैं। साधक की मनोकामना सिद्ध (पूर्ण) करते हैं। कर्म सिद्धांत से भी सिद्ध है कि पवित्र भावना से एकाग्रता पूर्वक जिनेन्द्र भगवान की आराधना करने से तत्क्षण पाप कर्मों का विनाश होता है, जिससे विघ्न बाधायें शीघ्र नष्ट हो जाती हैं। इष्ट पदार्थों की प्राप्ति होती है।

जिन भव्यों को पुण्ययोग से सभी अनुकूलतायें प्राप्त हैं, वे भी आत्म कल्याण के लिये तथा पुण्य की वृद्धि के लिये प्रतिदिन मंत्र जाप व पूजा करें और जो पाप कर्मोदय से प्रतिकूल परिस्थितियों से परेशान–दुःखी हैं, वे भी अपने आत्म कल्याण के लिये, पापों को नाश करने के लिये तथा पुण्य संचय करने के लिये प्रतिदिन मंत्र जाप व पूजा अवश्य करें।

पूजा एवं मंत्र जाप विधि – मंत्र जाप एवं पूजा करने के लिये प्रस्तावना पढ़ें। पुनः अष्ट द्रव्यपूजन, जयमाला, सौ–सौ मंत्र जाप के बाद अर्घ चढ़ाकर उपसंहार पूर्वक सम्पूर्ण पूजा व जाप करें।

पूजा विधि – यदि आप केवल पूजा करना चाहते हैं तो स्थापना से आशीर्वाद तक पूजा करें। मंत्रों के जाप छोड़ दें।

मंत्र जाप विधि – यदि आप केवल मंत्र जाप करना चाहते हैं तो **"ॐ ह्रीं अर्हं श्रीमते नमः"** से लेकर अंतिम जाप तक केवल जाप कर लें। पूजन छोड़ दें।

स्थान – यह पूजा व जाप भगवान के सामने मंदिर जी में ही करें तथा मंत्र जाप मंदिर जी में करें तो सर्वोत्तम है। यदि किसी कारण से मंदिर जी में नहीं कर सकते हैं तो घर में शोरगुल रहित शुद्ध स्थान पर भी कर सकते हैं। बाहर जाते समय छोटे हेण्ड बैग में पुस्तक रखकर साथ में ले जा सकते हैं। वहां स्नान करके शुद्ध स्थान पर बैठकर जाप कर सकते हैं।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

जयमाला

श्री अर्हंत जगत हितकारी, समवशरण की महिमा न्यारी।।
अठदश दोष रहित जगतारी, छियालिस मूलगुणों के धारी।।1 ।।
राग द्वेष क्षुत तृष भय शोका, चिंता मोह अरति रति स्वेदा।।
जन्म जरा मृत्यु न रोग हो, मद विस्मय निद्रा न दोष हों।।2 ।।
दर्शन ज्ञान वीर्य सुख नंता, घाति नाश प्रकटे भगवंता।।
वृक्ष अशोक पुष्प की वर्षा, मंडल दिव्यध्वनि मन हर्षा।।3 ।।
छत्र चमर दुंदुभि सिंहासन, प्रतिहार्य केवल्य विभासन।।
स्वेद मूत्र मल जिनके न हो, सुन्दर रूप सुगंधित तन हो।।4 ।।
सम चतुरस्र संहनन शुभ हो, क्षीर रूधिर लक्षण अठशत हो।।
अमित शक्ति प्रिय हित वच धारी, जन्म महोत्सव शोभा न्यारी।।5 ।।
गमनाकाश सुभिक्ष अहिंसा, नहिं उपसर्ग न छाया केशा।।
चहुँ मुख राजे विद्या स्वामी, थिर नयना आहार विरामी।।6 ।।
जगहित अर्धमागधी भाषा, मंदवायु निर्मल आकाशा।।
जल से शोभे कूप सरोवर, सब ऋतु फल शोभित हैं तरूवर।।7 ।।
जगमैत्री दर्पण सम सृष्टि, स्वर्ण कमल गंधोदक वृष्टि।।
रोग शोक बाधानश जाये, रजकण रहित धरा हो जाये।।8 ।।
वृक्ष फलों युत जन आनंदा, धर्मचक्र देवों ने वंदा।।
शत् इन्द्रों से वंदित देवा, देव सदा करते हैं सेवा।।9 ।।
जो अरहंत गुणों को जाने पर्यय द्रव्य सदा पहचाने।।
उसमें आतम ज्ञान प्रकट हो, रत्नत्रय से मोक्ष निकट हो।।1 0 ।।

दोहा

क्षणभंगुर जग, जानकर, 'विराग' हुए भगवंत।
आत्म 'विभा' को प्राप्त कर, पाया पद अरहंत।
वीतराग अरहंत को, नित प्रति ध्याते सन्त।
श्रद्धा भक्ति विनय करुँ, पाऊँ सौख्य अनन्त।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीमदादि अष्टोत्तर सहस्रनामधराऽर्हत् परमेष्ठिने नमः अनर्घ पद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

।। श्री जिनेन्द्र नमः।।

श्री भगवज्जिनसेनाचार्यविरचितम्

श्री जिनसहस्रनाम स्तोत्रम्

स्वयंभुवे नमस्तुभ्य-, मुत्पाद्यात्मान- मात्मनि।
स्वात्म- नैव तथोद्भूत-, वृत्तयेऽचिन्त्य-वृत्तये।।१।।

अन्वयार्थ :- हे जिनेन्द्र ! (स्वात्मना एव) अपने आत्मा के द्वारा ही, (आत्मनि) अपने आत्मा में, (आत्मानम्) अपने आत्मा के स्वरूप को, (उत्पाद्य) उत्पन्न कर, (तथोद्भूत-वृत्तये) अपने स्वरूप को प्रगट करने वाले {च = और} (अचिन्त्यवृत्तये) अन्तःकरण की अगोचरवृत्ति वाले (स्वयम्भुवे) स्वयम्भूस्वरूप (तुभ्यं) आपको (नमः) नमस्कार {अस्तु=हो}।

अर्थ :- हे जिनेन्द्र ! आपने अपने आत्मा के द्वारा अपने आत्मा में, अपने स्वरूप को प्रगट किया है अतः आप 'स्वयम्भू' हैं और आपको आत्मा में ही लीन होने योग्य चरित्र की तथा अचिन्त्य माहात्म्य की प्राप्ति हुई है इसलिये मैं आपको नमस्कार करता हूँ।।१।।

नमस्ते जगतां पत्ये, लक्ष्मी-भर्त्रे नमोऽस्तु ते।
विदावर नमस्तुभ्यं, नमस्ते वदतांवर।।२।।

अन्वयार्थ :- हे जिनेन्द्र ! (जगताम् पत्ये) तीनों लोकों के स्वामी (ते) आपको (नमः) नमस्कार, (लक्ष्मीभर्त्रे) अन्तरङ्ग और बाह्य लक्ष्मी के स्वामी (ते) आपको (नमः) नमस्कार, (विदाम् वर) विद्वानों में श्रेष्ठ (तुभ्यम्) आपको (नमः) नमस्कार{च=तथा} (हे वदताम् वर) हे वक्ताओं के नायक (ते) आपको (नमः) नमस्कार {अस्तु} हो।

अर्थ :- हे जिनेन्द्र ! आप तीनों लोकों के नाथ अन्तरङ्ग ज्ञानादि तथा बहिरङ्ग समवसरणरूप लक्ष्मी के स्वामी, विद्वानों में श्रेष्ठ और वक्ताओं के नायक हैं। आपको मेरा नमस्कार हो।

काम- शत्रु- हणं देव-, मामनन्ति मनीषिणः।
त्वामानमत्- सुरेण्मौलि-, भामालाऽभ्यर्चितक्रमम्।।३।।

अन्वयार्थ :- हे जिनेन्द्र ! (मनीषिणः) विद्वज्जन (देवम्) आपको (कर्मशत्रुहणम्) कर्मरूपशत्रु का संहारकर्त्ता {च=तथा} (त्वाम्) आपको (आनमत्सुरेण्मौलि-भामालीयर्चितक्रमम्) नमस्कार करते हुए इन्द्रवृन्द के मुकुटों की कान्ति-परम्परा से पूज्यपाद (आमनन्ति) मानते हैं।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

अर्थ :- हे जिनेन्द्र ! ज्ञानिजन आपको कर्मरूपशत्रु का संहारकर्त्ता मानते हैं तथा यह भी मानते हैं कि इन्द्रवृन्द अपने मुकुटों की कान्ति-परम्परा से आपके चरणों की पूजा करते हैं।

ध्यान- द्रुर्घण- निर्भिन्न-, घन- घाति- महातरुः।
अनन्त- भव- सन्तान-, जया- दासी-दनन्त-जित्।।४।।

अन्वयार्थ :- हे जिनेन्द्र ! आप (ध्यानद्रुर्घणनि र्भिन्नघनघातिमहातरुः) शुक्लध्यानरूप कुठार के प्रहार से सघन घातिया कर्मरूप महान् वृक्ष के छिन्न-भिन्न कर्त्ता {अस्ति=हैं} तथा (अनन्तभवसन्तानजयात्) अनन्तसंसार की परम्परा के क्षय करने से (अनन्तजित्) अनन्तजित् (आसीत्) थे।

अर्थः- हे जिनेन्द्र ! आपने अपने शुक्लध्यानरूप कुठार के प्रहार से अपने सघन घातिया कर्मरूप महावृक्ष को छिन्न-भिन्न कर दिया है तथा अपनी अनन्त संसार की परम्परा का क्षय करने से आप 'अनन्तजित्' कहे जाते हैं।

त्रैलोक्य-निर्जया-वाप्त-, दुर्दर्प- मति- दुर्जयम्।
मृत्युराजं विजित्या-सीज्, जिन! मृत्युंञ्जयो भवान्।।५।।

अन्वयार्थ :- (जिन) हे जिनेन्द्र ! (भवान्) आप, (त्रैलोक्यनिर्जयावाप्तदुर्दपम्) तीनों लोकों को जीत लेने से अतिशय अभिमानी (अतिदुर्जयम्) अतिशय अजेय, (मृत्युराजम्) काल को (विजित्य) जीतकर (मृत्युञ्जयः) मृत्युञ्जय (आसीत्) विख्याते हुये थे।

अर्थ :- हे जिनेन्द्र ! तीनों लोकों को अपने वश में कर लेने महाभिमानी तथा अतिदुर्जय मृत्युराज को भी आपने पराजित किया है जिससे आप 'मृत्युञ्जय' कहलाते हैं।

विधूता- शेष- संसार-, बन्धनो भव्य- बान्धवः।
त्रिपूराऽरिस्-तवमीशाऽसि, जन्म-मृत्युजराऽन्तकृत्।।६।।

अन्वयार्थ :- हे जिनेन्द्र ! (विधूताशेषसंसारबन्धनः) अपने तथा भव्यों के समस्त बन्धनों के भेदक होने से आप विधूताशेष- संसार- बन्धन, (भव्यबान्धवः) भव्यबन्धु तथा (जन्ममृत्युजरान्तकृत्) जन्म, मृत्यु, जरा के नाशक होने से (त्वम्) आप (एव) ही (त्रिपुरारिः) त्रिपुरारि (असि) हैं।

अर्थ :- हे जिनेन्द्र ! आपने अपने तथा भव्यों के समस्त बन्धनों को नष्ट कर दिया है इससे आप 'भव्यबन्धु' तथा जन्म जरा, नाशक होने से आप ही 'त्रिपुरारि' हैं।

त्रिकाल- विषयाऽशेष-, तत्त्व- भेदात् त्रिधोत्थितम्।
केवलाख्यं दधच्- चक्षुस्-, त्रिनेत्रोऽसि त्वमीशितः।।७।।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

अन्वयार्थ :- (ईशितः) हे जिनेन्द्र ! आप (त्रिकालविषयाशेषतत्त्वभेदात्) त्रिकालगोचार समस्त तत्वों के भेद से (त्रिधा उत्थितम्) उत्पाद, व्यय, ध्रौव्य रूप अवस्थाओं सहित (केवलाख्यम्) केवलज्ञाननामक (चक्षुः) नेत्र को (दधत्) धारण करते हुए (त्रिनेत्रः) त्रिनेत्रनामधरक (असि) हैं।

अर्थ :- हे जिनेन्द्र आप 'त्रिनेत्र' कहे जाते हैं क्योंकि आपके केवलज्ञानरूप नेत्र का सद्भाव है जिसमें त्रिकालगोचर समस्त तत्व अपनी उत्पाद, व्यव, ध्रौव्य रूप अवस्थाओं सहित प्रकाशमान होते हैं।

त्वामन्ध-काऽन्तकं प्राहु-, र्मोहान्धासुर-मर्दनात्।
अर्द्धं ते नारयो यस्मा-, दर्ध-नारीश्वरोऽस्यतः।।८।।

अन्वयार्थ :- हे जिनेन्द्र ! {महर्षयः = महर्षिजन} (मोहान्धासुरमर्दनात्) मोहरूप अन्धासुर के नाशक होने से (त्वाम्) आपको (अन्ध्कान्तकम्) अन्ध्कान्तक (प्राहुः) कहते हैं {च = और} (यस्मात्) जिस कारण से (ते) आपके (अर्द्धम्) आधे (अरयः) कर्मरूप शत्रु (न) नहीं {सन्ति = हैं} (अतः) इससे (त्वम्) तुम (अर्धनारीश्वरः) अर्धनारीश्वर (असि) हैं।

अर्थ :- हे जिनेन्द्र ! आपने मोहरूप अन्धासुर का नाथ किया है इससे आप 'अन्धकान्तक' कहलाते हैं तथा आपके आठ कर्मों में अर्ध अर्थात् चार घातिया कर्म नहीं हैं इससे आप 'अर्धनारीश्वर' (अर्ध + न + अरि = ईश्वर) कहे जाते हैं।

शिवः शिव-पदाध्यासाद्, दुरिताऽरि-हरो हरः।
शङ्करः कृतशं लोके, शंभवस्त्वं भवन्सुखे।।९।।

अन्वयार्थ :- हे जिनेन्द्र ! आप (शिवपदाध्यासात्) मोक्षस्थान में निवास करने से (शिवः) शिव (दुरितारिहरः) पापरूप शत्रुओं के नाशक होने से (हरः) हर (लोके) लोक में (कृतशम्) आनन्ददायक होने से (शंङ्कर) शंङ्कर {च = और} (सुखे) सुख में (भवन) उत्पन्न होने से (शम्भवः) शम्भव {कथ्यते = कहे जाते हैं।}

अर्थ :- हे जिनेन्द्र ! आप मुक्तिस्थल में निवास करने से 'शिव', पापरूप शत्रुओं के नाशक होने से 'हर', जगत को आनन्ददायक होने से 'शंङ्कर' तथा अनन्तसुख में निमग्न होने से 'शम्भव' कहे जाते हैं।

वृषभोऽसि जगज्ज्येष्ठः, पुरुः पुरुगुणो- दयैः।
नाभेयो नाभि-सम्भूते-, रिक्ष्वाकु- कुल- नन्दनः।।१०।।

अन्वयार्थ :- हे जिनेन्द्र ! आप (जगज्ज्येष्ठः) जगत में श्रेष्ठ होने के कारण (वृषभः) वृषभ, (पुरुगुणोदयैः) महान् गुणों को उत्पन्न करने से (पुरुः) पुरु (नाभिसम्भूतेः)

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

महाराज नाभिराज के सुपुत्र होने से (नाभेयः) नाभेय {तथा} (इक्ष्वाकुकुलनन्दनः) इक्ष्वाकुकुलनन्दन {अस्ति = कहलाते हैं।}

अर्थ :- हे जिनेन्द्र ! आप जगत में सर्वश्रेष्ठ होने से 'वृषभ' महान गुणों को उत्पन्न करने से 'पुरु', महाराज नाभिराज के पुत्र होने से 'नाभेय' तथा इक्ष्वाकुवंश में उत्पन्न होने से इक्ष्वाकुकुलनन्दन कहलाते हो।

त्वमेकः पुरुषस्कन्धस्, त्वं द्वे लोकस्य लोचने।
त्वं त्रिधा बुद्ध सन्मार्गस्-, त्रिज्ञस्त्रिज्ञान- धारकः।।११।।

अन्वयार्थ :- हे जिनेन्द्र (एकः) एक (त्वम्) तुम {एव=ही} (पुरुषस्कन्धः) पुरुषोत्तम (लोकस्य) जनता के (द्वे लोचने) दो नेत्रस्वरूप (त्रिधा) सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्ररूप से (बुद्धसनमार्गः) मोक्षमार्ग के ज्ञाता होने से (त्रिज्ञः) त्रिज्ञ {तथा} (त्रिज्ञानधारकः) त्रिलोक वा त्रिकाल के ज्ञानधारक होने त्रिज्ञानधारक {कथ्यसे = कहे जाते हो।}

अर्थ :- हे जिनेन्द्र ! सभी पुरुषों में श्रेष्ठ होने से एक आप ही पुरुषस्कन्ध (पुरुषोत्तम), जनता को मार्गदर्शक होने से जगत के दो नेत्रस्वरूप, सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र रूप मोक्षमार्ग के ज्ञाता होने से 'त्रिज्ञ' तथा त्रिलोक वा त्रिकाल के ज्ञानधारक होने से 'त्रिज्ञानधारक' कहे जाते हो।

चतुःशरण माङ्गल्य-,मूर्तिस्त्वं चतुरस्रधीः।
पञ्च-ब्रह्ममयो देव, पावनस्-त्वं पुनीहि माम्।।१२।।

अन्वयार्थ :- (देव) हे जिनेन्द्र ! (त्वम्) आप {एव = ही} (चतुःशरणमाङ्गल्यमूर्तिः) अरिहन्त, सिद्ध, साधु, केवलिप्रणीत धर्मरूप शरणचतुष्टय तथा मङ्गलचतुष्टय की मूर्तिरूप (चतुरस्रधीः) द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव रूप से समस्त पदार्थों के ज्ञाता होने से चतुरस्रधी (पञ्चब्रह्ममयः) पञ्चपरमेष्ठिस्वरूप {तथा} (पावनः) परम पवित्र {असि=हो} (अतः माम्) मुझको (पुनीहि) पवित्र करो।

अर्थ :- हे जिनेन्द्र ! आप ही अरिहन्त, सिद्ध, साधु, केवलिप्रणीत धर्म रूप शरणचतुष्टय तथा मङ्गलचतुष्टय की मूर्तिरूप हैं। आप ही द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव रूप से समस्त पदार्थों के ज्ञाता होने से 'चतुस्रधी' कहे जाते हैं आप ही पञ्चपरमेष्ठि स्वरूप तथा परम पवित्र हैं। हे देव आप मुझे भी पवित्र कीजिये।

स्वर्गाऽवत-रिणे तुभ्यं, सद्यो- जातात्मने नमः।
जन्माभिषेक- वामाय, वामदेव नमोऽस्तु ते।।१३।।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

अन्वयार्थ :- हे जिनेन्द्र ! (स्वार्गावतरिणे) स्वर्ग से अवतरण समय (सद्योऽजातात्मने) फिर भवधारण नहीं करने वाले (तुभ्यम्) आपको (नमः) नमस्कार {अस्तु = हो}, तथा (वामदेव) हे अनुपम-सौन्दर्य-सम्पूर्ण (जन्माभिषेकवामाय) जन्माभिषेक के समय अतिशय-सौन्दर्य-सम्पन्न (ते) आपको (नमः) नमस्कार {अस्तु = हो}।

अर्थ :- हे जिनेन्द्र ! आप स्वर्ग से अवतरण के समय ही पुनः भव नहीं धारण करने वाले होने से 'सद्योऽजातात्मा' कहलाते हो तथा जन्माभिषेक के समय आप बहुत ही सुन्दर दिखलाई पड़ते थे इसलिये आप 'वामदेव' कहलाते हैं। आपको मेरा प्रमाण है।

सन्निष्क्रान्ताव-घोराय, परं- प्रशम- मीयुषे।
केवलज्ञान- संसिद्धा-, वीशानाय नमोऽस्तु ते।।१४।।

अन्वयार्थ :- हे जिनेन्द्र (परम् पशमम् विशेष उपशान्तकषाय भाव को (ईयुषे) प्राप्त, अतः (सन्निष्क्रान्तवघोराय) दीक्षा के समय परम प्रशान्त मुद्रा के धारक, तथा (केवलज्ञानसंसिद्धौ) केवलज्ञान की उपलब्धि होने पर (ईशानाय) सर्वशक्तिमान ईश्वर (ते) आपको (नमः) नमस्कार (अस्तु) हो।

अर्थ :- हे जिनेन्द्र ! आप परम उपशान्तकषाय भाव को प्राप्त अतः दीक्षादान के समय परम प्रशान्तमुद्रा के धारक तथा केवलज्ञान की उपलब्धि होने पर सर्व शक्तिमान् ईश्वर कहे जाने वाले हैं। आपको मेरा नमस्कार है।

पुरस्तत्पुरु- षत्वेन, विमुक्ति- पद- भागिने
नमस्तत्पुष्रुषाऽवस्थां, भाविनीं तेऽद्य बिभ्रते।।१५।।

अन्वयार्थ :- हे जिनेन्द्र ! (पुरः) भविष्य में (तत्पुरुषत्वेन) शुद्ध आत्मस्वरूप के द्वारा (विमुक्तिपदभाजिने) सिद्धावस्था को पात्र {तथा} (अद्य) अभी (भाविनीम्) आगामी (तत्पुरुषावस्थाम्) सिद्धावस्था को, (विभ्रते) धारण करने वाले (ते) आपको (नमः) नमस्कार {अस्तु = हो}।

अर्थ :- हे जिनेन्द्र ! आप भविष्य में शुद्ध आत्मस्वरूप के द्वारा सिद्धावस्था के पात्र होंगे इससे आगामी सिद्धावस्था के धारक आपको मेरा नमस्कार है।

ज्ञानावरण- निर्ह्रासान्-, नमस्तेऽनन्त- चक्षुषे।
दर्शाना- वरणोच्छेदान्, नमस्ते विश्व दृश्वने।।१६।।

अन्वयार्थ :- हे जिनेन्द्र ! (ज्ञानावरणनिर्ह्रासात्) ज्ञानाधरण कर्म के क्षय से (अनन्तचक्षुषे) अनन्तज्ञानी तथा (दर्शनावरणोच्छेदात्) दर्शनावरणकर्म के क्षय से (विश्वदृश्वने) विश्वदृश्वा (ते) आपको (नमः) नमस्कार {अस्ति = है}।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

अर्थ :- हे जिनेन्द्र ! आप ज्ञानावरण कर्म के क्षय से अनन्तचक्षु (अनन्तज्ञानी) तथा दर्शनावरणकर्म के क्षय से विश्वदृश्वा (समस्त विश्व के दृष्टा) कहे जाते हैं। अतः आपको नमस्कार है।

नमो दर्शन- मोहघ्ने, क्षायिकाऽमल- दृष्टये।
नमश्चारित्र- मोहघ्ने, विरागाय महौजसे।।१७।।

अन्वयार्थ :-हे जिनेन्द्र ! (दर्शनमोहघ्ने) दर्शन मोहनीयकर्म के नाशक (क्षायिकामलदृष्टये) क्षायिक सम्यग्दर्शन के धारक (चारित्रमोहघ्ने) चारित्रमोहनीय कर्म के नाशक (विरागाय) वीतराग तथा (महौजसे) अतिशय, तेजस्वी {ते = आपको} (नमः) नमस्कार {अस्ति = है}

अर्थ :- हे जिनेन्द्र ! आप दर्शनमोहनीय कर्म के नाशक, निर्मल क्षायिक सम्यग्दर्शन सहित, चारित्रमोहनीयकर्म के नाशक, वीतराग तथा अतिशय तेजस्वी हैं अतः आपको नमस्कार है।

नमस्तेऽनन्त- वीर्याय, नमोऽनन्त- सुखात्मने।
नमस्तेऽनन्तलोकाय, लोका- लोकाव- लोकिने।।१८।।

अन्वयार्थ :- हे जिनेन्द्र ! (अनन्तवीर्याय) अनन्तशक्ति के धारक (अनन्तसुखात्मने) अनन्तसुखस्वरूप (अनन्तलोकाय) अनन्तदर्शनसहित तथा (लोकालोकावलोकिने) लोक और अलोक के ज्ञाता, (ते) आपको (नमः) नमस्कार {अस्ति = है}।

अर्थ :- हे जिनेन्द्र ! आप अनन्तशक्ति के धारक, अनन्त सुखस्वरूप, अनन्तदर्शन सहित तथा लोकालोक के ज्ञाता हैं। अतः आपको नमस्कार है।

नमस्तेऽनन्त- दानाय, नमस्तेऽनन्त- लब्धये।
नमस्तेऽनन्तभोगाय, नमोऽनन्तोप- भोगिने।।१९।।

अन्वयार्थ :- हे जिनेन्द्र ! (अनन्तदानाय) अनन्तदानगुण सहित (अनन्तलब्धये) अनन्तलब्धियों के धारक (अनन्तभोगाय) अनन्तभोगों के भोक्ता तथा (अनन्तोपभोगिने) अनन्त उपभोगों के उपभोक्ता (ते) आपको (नमः) नमस्कार {अस्ति = है}

अर्थ :- हे जिनेन्द ! आप अनन्तदानगुणयुक्त, अनन्तलब्धिसहित, अनन्तभोगरूप क्षायिक भावयुक्त तथा अनन्त उपभोगयुक्त हैं। अतः आपको नमस्कार है।

नमः परम- योगाय, नमस्तुभ्य- मयोनये।
नमः परमपूताय, नमस्ते परमर्षये।।२०।।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

अन्वयार्थ :- हे जिनेन्द्र ! (परमयोगाय) परमध्यानी (अयोनये) चौरासी लाख योनियों से रहित (परमपूताय) परमपवित्र तथा (परमर्षये) सर्वोत्कृष्ट ऋषिरूप (ते) आपको (नमः) नमस्कार {अस्ति = है}।

अर्थ :- हे जिनेन्द्र ! आप परमध्यानी, चौरासी लाख योनियों से रहित होने से आयानिरूप, परमपवित्र तथा परमर्षि रूप हैं। अतः आपको नमस्कार है।

नमः परमविद्याय, नमः पर- मतच्छिदे।
नमः परम- तत्त्वाय, नमस्ते परमात्मने।।२१।।

अन्वयार्थ :- हे जिनेन्द्र (परमविद्याय) केवलज्ञानपरम विद्यारूप (परमताच्छिदे) अन्य एकान्तमतों के उच्छेदक (परमतत्त्वाय) परम आत्मतत्वस्वरूप तथा (परमात्मने) परमात्मस्वरूप (ते) आपको (नमः) नमस्कार हो।

अर्थ :- हे जिनेन्द्र ! आप केवलज्ञानविद्या के धारक होने से 'परमविद्या', अन्य एकान्त मतों के उच्छेदक होने से परमतच्छिद्, परम आत्मतत्वरूप होने से परमतत्व तथा परमात्मा हैं अतः आपको नमस्कार है।

नमः परम- रूपाय, नमः परम- तेजसे।
नमः परम- मार्गाय, नमस्ते परमेष्ठिने।।२२।।

अन्वयार्थ :- हे जिनेन्द्र ! (परमरूपाय) अतिशय सुन्द्रर (परमतेजसे) अतितेजस्वी (परममार्गाय) मोक्षमार्ग स्परूप तथा (परमेष्ठिने) परमपद में स्थित, (ते) आपको (नमः) नमस्कार हो।

अर्थ :- हे जिनेन्द्र ! आप अति सुन्द्रर, विशाल तेजस्वी, मोक्षमार्ग स्वरूप और परमेष्ठी हैं। अतः आपको नमस्कार है।

परमर्धिजुषे धाम्ने, परम- ज्योतिषे नमः।
नमः पारेतमः प्राप्त-, धाम्ने परतराऽऽत्मने।।२३।।

अन्वयार्थ :- हे जिनेन्द्र ! (परमर्धिजुषे) सर्वोत्कृष्ट ऋद्धियुक्त मोक्षस्थान के अधिवासी (धाम्ने) अतितेजस्वी (परमज्योतिषे) उत्कृष्ट ज्योतिस्वरूप (पारेतमः प्राप्तधाम्ने) अज्ञानरूप अन्धकार से मुक्त तेजः पुञ्ज तथा (परतरात्मने) श्रेष्ठ आत्मस्वरूप {ते = आपको} (नमः) नमस्कार हो।

अर्थ :- हे जिनेन्द्र ! आप सर्वोत्कृष्ट ऋद्धियुक्त, मोक्ष के अधिवासी, अति तेजस्वी परमज्योतिस्वरूप, अज्ञानरूप अन्धकार से मुक्त तेजः पुञ्ज तथा आत्मस्वरूप हैं। इससे आपको नमस्कार है।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

नमः क्षीण- कलंकाय, क्षीण- बन्ध! नमोऽस्तु ते।
नमस्ते क्षीण-मोहाय, क्षीण- दोषाय ते नमः।।२४।।

अन्वयार्थ :-(क्षीणबन्ध) कर्मबन्धविहीन हे जिनेन्द्र (क्षीणकलङ्काय) कर्मकलङ्कमुक्त (क्षीणमोहाय) मोहनीय कर्म विमुक्त तथा (क्षीणदोषाय) दोषविहीन (ते) आपको (नमः) नमस्कार हो।

अर्थ :- हे कर्मबन्धविहीन जिनेन्द्र ! आप कर्मकलङ्कमुक्त, क्षीणमोह और क्षीणदोष हैं। इससे आपको नमस्कार है।

नमः सुगतये तुभ्यं, शोभनां गति- मीयुषे।
नमस्तेऽतीन्द्रिय- ज्ञान-, सुखायाऽनिन्द्रियात्मने।।२५।।

अन्वयार्थ :- हे जिनेन्द्र ! (सुगतये) मुक्तिरूप शुभगति को प्राप्त (शोभनाम् गतिम्) प्रशस्तसिद्धगति को प्राप्त (अतीन्द्रियज्ञानसुखाय) अतीन्द्रियज्ञान और सुख के धारक, तथा (अनिंद्रियात्मने) अतीन्द्रिय आत्मस्वरूप (ते) आपको (नमः) नमस्कार हो।

अर्थ :- हे जिनेन्द्र ! आप मुक्तिरूप शुभगति को प्राप्त, प्रशस्त सिद्धगति को प्राप्त, अतीन्द्रिय ज्ञान और सुख के धारक तथा अतीन्द्रिय आत्मस्वरूप हैं। इससे आपको नमस्कार है।

काय- बन्धन- निर्मोक्षा-, दकायाय नमोऽस्तु ते।
नमस्तुभ्य- मयोगाय, योगिना- मधि योगिने।।२६।।

अन्वयार्थ :- हे जिनेन्द्र ! (कायबन्धननिर्मोक्षाद्) शरीररूप बन्धन से छूट जाने से (अकायाय) अशरीर (आयोगाय) मन, वचन, काय रूप योगों से रहित तथा (योगिनाम्) योगियों के (अध्योगिने) प्रमुख (ते) आपको (नमः) नमस्कार हो।

अर्थ :- हे जिनेन्द्र ! आप शरीररूप बन्धन से छूट जाने से अशरीर, मन, वचन, काय रूप योगों से रहित तथा योगियों के प्रमुख हैं। अतः आपको नमस्कार है।

अवेदाय नमस्तुभ्य-, मकषायाय ते नमः।
नमः परम- योगीन्द्र-, वन्दिताङ्घ्रि- द्वयाय ते।।२७।।

अन्वयार्थ :- हे जिनेन्द्र ! (अवेदाय) स्त्री, पुरुष, नपुंसक तीनों वेदों से रहित (अकषायाय) कषायों से विहीन तथा (परमयोगीन्द्रवन्दिताङ्घ्रिद्वयाय) महान योगीश्वरों के द्वारा जिनके चरणयुगल वन्दित हैं ऐसे (ते) आपको (नमः) नमस्कार हो।

अर्थ :- हे जिनेन्द्र ! आप वेदरहित होने से अवेद, काषायरहित होने से अकषाय कहे जाते हैं तथा आपके चरणयुगल महान् योगीश्वरों के द्वारा वन्दित हैं अतः आपको नमस्कार है।

For correction contact Ahimsa forum (www.ahimsaforum.net)

नमः परम- विज्ञान!, नमः परम- संयम।
नमः परम-दृग्रदृष्ट-, परमार्थाय तायिने।।२८।।

अन्वयार्थ :- (परमविज्ञान) श्रेष्ठविज्ञानरूप, (परमसंयम) श्रेष्ठ संयम रूप तथा (परमदृक्) परमार्थ के दृष्टा (परमार्थाय) परमार्थ के (तायिने) ज्ञाता हे जिनेन्द्र! (ते) आपको (नमः) नमस्कार हो।

अर्थ :- हे जिनेन्द्र ! आप क्षेष्ठविज्ञानवान् श्रेष्ठसंयमी परमार्थ के दृष्टा तथा परमार्थ के ज्ञाता हैं अतः आपको नमस्कार है।

नमस्तुभ्य- मलेश्याय, शुक्ल- लेश्यांशक- स्पृशे।
नमो भव्ये- तराऽवस्था-, व्यतीताय विमोक्षणे।।२९।।

अन्वयार्थ :- हे जिनेन्द्र ! (अलेश्याय) लेश्याओं से रहित (शुक्ललेश्यांशकस्पृशे) शुक्ललेश्या के अंशयुक्त (भव्येतरावस्थाव्यतीताय) भव्य और अभव्य दोनों अवस्थाओं से रहित तथा (विमोक्षणे) मुक्तरूप (तुभ्यम्) आपको (नमः) नमस्कार हो।

अर्थ :- हे जिनेन्द्र ! आप लेश्याओं से रहित, शुभलेश्या के अंशों से युक्त, भव्य व अभव्यरूप संज्ञा से रहित तथा मुक्तरूप हैं। अतः आपको नमस्कार है।

संज्ञ्य- संज्ञि-, द्वया- वस्था-, व्यति- रिक्ताऽमलात्मने।
नमस्ते वीत-संज्ञाय, नमः क्षायिक- दृष्टये।।३०।।

अन्वयार्थ :- हे जिनेन्द्र ! (संज्ञ्यसंज्ञिद्वयावस्थाव्यतिरिक्तामलात्मने) संज्ञी तथा असंज्ञी रूप अवस्थारहित निर्मल शुद्ध आत्मा के धारक (वीतसंज्ञाय) आहारादि संज्ञाओं से रहित तथा (क्षायिकदृष्टये) क्षायिकसम्यक्त्वी (ते) आपको (नमः) नमस्कार हो।

अर्थ :- हे जिनेन्द्र ! आप न संज्ञी हैं न असंज्ञी हैं, आपकी आत्मा निर्मल व शुद्ध है। आपके आहारादि चार संज्ञाओं का अभाव है तथा आप क्षायिक सम्यग्दृष्टि हैं। अतः आपको नमस्कार है।

अना- हाराय तृप्ताय, नमः परम- भाजुषे
व्यतीताऽशेष- दोषाय, भवाब्धेः पार- मीयुषे।।३१।।

अन्वयार्थ :- हे जिनेन्द्र ! (अनाहाराय) आहाररहित (तृप्ताय) परमसन्तुष्ट (परमभाजुषे) अतिशय कान्तियुक्त (व्यतीताशेषदोषाय) अष्टादशदोषरहित तथा (भवाब्धेः) संसारसिन्धु के (पारम् ईयुषे) पार को प्राप्त [ते = आपको] (नमः) नमस्कार हो।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

अर्थ :- हे जिनेन्द्र ! आप आहार रहित होकर भी सदा तृप्त, अतिशयकान्तियुक्त, अष्टादशदोषरहित और संसार- सिन्धु के पारगामी हैं। अतः आपको नमस्कार है।

अजराय नमस्तुभ्यं, नमस्ते वीत जन्मने।
अमृत्यवे नमस्- तुभ्य-, मचलायाऽक्षरात्मने।।३२।।

अन्वयार्थ :- हे जिनेन्द्र ! (अजराय) जरारहित (स्तादजन्मने) जन्मरहित (अमृत्यवे) मृत्युरहित (अचलाय) अचल तथा (अक्षरात्मने) अवनिश्वर (तुभ्यम्) आपको (नमः) नमस्कार हो।

अर्थ :- हे जिनेन्द्र ! आप अजर, अजन्मा, अमर, अचल और अविनश्वर हैं। अतः आपको नमस्कार है।

अलमास्तां गुणस्तोत्र-, मनन्तास्तावका- गुणाः।
त्वां नाम- स्मृति- मात्रेण, पर्यु- पासि- सिषामहे।।३३।।

अन्वयार्थः- हे जिनेन्द्र ! (गुणस्तोत्रम्) आपके गुणों का कथन (अलम् आस्ताम्) असम्भव है {यतः = क्योंकि} (तावकाः गुणा) आपके गुण (अनन्ताः) अनन्त {सन्ति = हैं} (अतः) आपको (नामस्मृतिमात्रेण) नामों के स्मरणमात्र से (पर्युपासि सिषामहे) उपासना करते हैं।

अर्थ :- हे जिनेन्द्र ! आपके गुणों का कथन असम्भव है क्योंकि आपके गुण अनन्त हैं। अतः आपके नामों का स्मरण करके ही हम आपकी उपासना करना चाहते हैं।

एवं स्तुत्वा जिनं देवं, भक्त्या परमया सुधीः।
पठे- दष्टोत्तरं नाम्नां, सहस्रं पाप- शान्तये।।३४।।

अन्वयार्थ :- (परमया भक्त्या) उत्कृष्टभक्ति से (जिनम् देवम्) जिनेन्द्रदेव की (एवम्) पूर्व प्रकार (स्तुत्वा) स्तुति करके (सुधीः) बुद्धिमान मनुष्य (पापशान्तये) अपने पापों के क्षय के हेतु (नाम्नाम् अष्टोत्तरं सहस्रम्) एक हजार आठ नामों को (पठेत्) निरन्तर पढ़े।

अर्थ :- उत्कृष्ट भक्ति से जिनेन्द्रदेव की पूर्व प्रकार स्तुति कर बुद्धिमान मनुष्य पापों के क्षय के हेतु इस 'सहस्रनामस्तवन' का निरन्तर पाठ करें।

।। इति श्रीसहस्रनामस्तोत्र प्रस्तावना समाप्ता।।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

प्रसिद्धाऽष्ट- सहस्रेद्ध, लक्षणं त्वां गिरां पतिम्।
नाम्ना- मष्ट- सहस्रेण, तोष्टुमोऽभीष्ट- सिद्धये।।३४।।

अन्वयार्थ :- {वयम् = हम जिनसेन} (अभिष्टसद्धिये) अपने अभीष्ट की सिद्धि के लिये (प्रसिद्धाटसहस्रेद्धलक्षणम्) आगमप्रसिद्ध एक हजार आठ नामधारक तथा (गिराम् पतिम्) सर्वविद्याधिपति (त्वाम्) आपकी (नाम्नाम् अष्टसहस्रेण) एक हजार आठ नामों से (तोष्टुमः) स्तुति करते हैं।

अर्थ :- हे जिनेन्द्र ! आप आगम प्रसिद्ध एक हजार आठ विशेष लक्षणों से संयुक्त हैं तथा आप द्वादशाङ्गवाणी के अधिपति हैं। अतः हम अपने अभीष्ट की सिद्धि के लिये एक हजार आठ नामों से आपकी स्तुति करते हैं।

श्रीमान् स्वयम्भू- र्वृषभः, शम्भवः शम्भु- रात्मभूः।
स्वयंप्रभः प्रभुर्भोक्ता, विश्वभू- रपुन- र्भवः।।३५।।

अन्वयार्थ :- हे जिनेन्द्र ! आप (श्रीमान) अन्तरङ्ग और बहिरङ्ग, लक्ष्मी के स्वामी (स्वयम्भूः) गुरूपदेश के बिना स्वयं प्रबुद्ध (वृषभः) धर्म से शोभायमान (शम्भवः) अतीन्द्रिय सुख सम्पन्न (शम्भुः) परमानन्द प्रदाता (आत्मभूः) स्वयं उत्कृष्ट पद प्राप्त (स्वयम्प्रभः) स्वयं प्रकाशमान (प्रभुः) समर्थ (भोक्ता) आत्मसुखानुभवकर्त्ता (विश्वभूः) विश्वव्यापी तथा (अपुनर्भवः) अजन्मा {अस्ति = हैं}।

अर्थ :- हे जिनेन्द्र ! आप अन्तरङ्ग और बहिरङ्ग लक्ष्मी सहित होने से श्रीमन् स्वयमेव प्रबुद्ध होने से स्वयम्भू, वृष अर्थात् धर्म से सुशोभित होने से वृषभ, अतीन्द्रिय सुखसम्पन्न होने से सम्भव, परमानन्द प्रदाता होने से शम्भु, उत्कृष्ट पद प्राप्त करने से आत्मभू, स्वयं प्रकाशमान होने से स्वयम्प्रभ, समर्थ होने से प्रभु, आत्मसुखानुभवकर्त्ता होने से भोक्ता, केवलज्ञान द्वारा विश्वव्यापी होने से विश्वभू तथा कर्मक्षय होने से अपुनर्भव हैं।

विश्वात्मा विश्व- लोकेशो, विश्व- तश्चक्षु- रक्षरः।
विश्वविद् विश्व- विद्येशो, विश्व योनिरनश्वरः।।३६।।

अन्वयार्थ :- हे जिनेन्द्र ! आप (विश्वात्मा) अपने आत्मा में विश्व के प्रतिबिम्बित होने से विश्वात्मा (विश्वलोकेशः) समस्त लोक के ईश होने से विश्वलोकेश (विश्वतश्चक्षुः) केवलदर्शन रूप चक्षु के समस्त विश्व में व्याप्त होने से विश्वतश्चक्षु (अक्षरः) विनाशरहित होने से अक्षर (विश्ववित्) विश्व के ज्ञाता होने से विश्ववित्

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

(विश्वविद्येशः) समस्त विद्याओं के ईश्वर होने से विश्वविद्येश (विश्वयोनिः) समस्त पदार्थों के उपदेशक होने से विश्वयोनि तथा (अनश्वरः) अविनाशी {अस्ति = हैं}।

अर्थ :- हे जिनेन्द्र ! आप अपनी आत्मा में विश्व के प्रतिबिम्बित होने से विश्वात्मा, समस्त लोक के ईश होने से विश्वलोकेश, आपका केवल दर्शनरूप चक्षु समस्त विश्व में व्याप्त होने से विश्वतश्चक्षु, विनाशरहित होने से अक्षर, विश्व के ज्ञाता होने से विश्ववित्, समस्त विद्याओं के ईश्वर होने से विश्वविद्येश, समस्त पदार्थों के उपदेशक होने से विश्वयोनि तथा विनाशरहित होने से अविनाशी हैं।

विश्व- दृश्वा विभुर्धाता, विश्वेशो विश्व-लोचनः।
विश्वव्यापी विधुर्वेधाः, शाश्वतो विश्वतोमुखः।।३७।।

अन्वयार्थ :- हे जिनेन्द्र ! आप (विश्वदृश्वा) लोकालोक के दर्शन होने से विश्वदृश्वा (विभुः) केवलज्ञान द्वारा सर्वत्र व्याप्त होने से विभु (धाता) मोक्षमार्ग के दर्शक होने से धाता (विश्वेशः) सम्पूर्ण जगत के स्वामी होने से विश्वेश (विश्वलोचनः) सम्पूर्ण जीवों के हितमार्ग प्रदर्शक होने से उनके नेत्र समान होने से विश्वलोचन (विश्वव्यापी) केवलज्ञान के समस्त विश्व में व्याप्त होने से विश्वव्यापी (विधिः) निर्वाणमार्ग के निरूपण करने से विधि, (वेधाः) धर्मरूप जगत की सृष्टि करने से वेधा (शाश्वतः) अविनाशी होने से शाश्वत् तथा (विश्वतोमुखः) समवशरण में चारों ओर मुखों के दिखने से विश्वतोमुख {अस्ति = हैं}।

अर्थ :- हे जिनेन्द्र ! आप लोकालोक के दर्शक होने से विश्वदृश्वा, केवलज्ञान के द्वारा सर्वत्र व्याप्त होने से विभु, मोक्षमार्ग के दर्शक होने से धाता, सम्पूर्ण जगत के स्वामी होने से विश्वेश, सम्पूर्ण जीवों के हितमार्ग- प्रदर्शक होने से (उनके नेत्रों के समान होने से) विश्वलोचन, केवलज्ञान के द्वारा समस्त लोकालोक में व्याप्त होने से विश्वव्यापी, निर्वाणमार्ग का निरूपण करने से विधि, धर्मरूप जगत की सृष्टि करने से वेधा, अविनाशी होने से शाश्वत् तथा समवसरण में चारों ओर मुखों के दिखने से विश्वतोमुख कहे जाते हैं।

विश्व- कर्मा जगज्ज्येष्ठो, विश्व- मूर्ति र्जिनेश्वरः।
विश्वदृग् विश्व-भूतेशो, विश्वज्योति- रनीश्वरः।।३८।।

अन्वयार्थ :- हे जिनेन्द्र ! आप (विश्वकर्मा) कर्मभूमि के प्रारम्भ में षट्कर्म का उपदेश देने से विश्वकर्मा (जगज्ज्येष्ठः) समस्त प्राणियों में श्रेष्ठ होने से जगज्ज्येष्ठ (विश्वमूर्तिः) अपने शुद्धज्ञान में समस्त पदार्थों के प्रतिबिम्बित होने से विश्वमूर्ति (जिनेश्वरः) कर्मशत्रुओं के विजेताओं के स्वामी होने से जिनेश्वर (विश्वदृक्) सम्पूर्ण जगत के दृष्टा होने

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

से विश्वदृक् (विश्वभूतेशः) प्राणिमात्र के स्वामी होने से विश्वभूतेश (विश्वज्योतिः) केवलज्ञानज्योति के विश्व में व्याप्त होने से विश्वज्योति तथा (अनीश्वरः) आपसे कोई अधिक शक्तिमान नहीं होने से अनीश्वर {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे जिनेन्द्र ! आप कर्मभूमि के प्रारम्भ में षट्कर्म का उपदेश देने से विश्वकर्मा, समस्त प्राणियों के श्रेष्ठ होने से जगज्ज्येष्ठ, अपने विशुद्धज्ञान में सर्व पदार्थों के प्रतिबिम्बित होने से विश्वमूर्ति, कर्मशत्रुओं के विजेताओं के स्वामी होने से जिनेश्वर, सम्पूर्ण जगत के दृष्टा होने से विश्वदृक, प्राणिमात्र के स्वामी होने से विश्वभूतेश, केवलज्ञान ज्योति के विश्व में व्याप्त होने से विश्वज्योति तथा आप से अधिक कोई शक्तिमान् नहीं होने से अनीश्वर कहे जाते हैं।

जिनो जिष्णु- रमेयात्मा, विश्व- रीशो जगत्पतिः।
अनन्तजि- दचिन्त्यात्मा, भव्य- बन्धु- रबन्धनः।।३९।।

अन्वयार्थ :- हे जिनेन्द्र ! आप (जिनः) घातियाकर्मरूप शत्रु के विजेता होने से जिन (जिष्णुः) कर्मो का जीतना स्वभाव होने से जिष्णु (अमेयात्मा) दूसरों के द्वारा अज्ञेय आत्मा होने से अमेयात्मा (विश्वरीशः) पृथिवी के स्वामी होने से विश्वरीश (जगत्पतिः) लोकत्रय के स्वामी होने से जगत्पति (अनन्तजित्) अनन्त अर्थात् संसार के विजेता होने से अनन्तजित् (अचिन्त्यात्मा) आपकी निर्मल आत्मा का अल्पज्ञ संसारी जीवों द्वारा चिन्तवन नहीं हो सकने से अचिन्त्यात्मा (भव्यबन्धुः) भव्यजीवों के हितकारी होने से भव्यबन्धु तथा (अबन्धनः) कर्मबन्धनरहित होने से अबन्धन {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे जिनेन्द्र ! आप घातियाकर्मरूप शत्रु के विजेता होने से जिन, कर्मों का जीतना आपका स्वभाव होने से जिष्णु, दूसरों के द्वारा अजेय होने से अमेयात्मा, पृथिवी के स्वामी होने से विश्वरीश, लोकत्रय के स्वामी होने से जगत्पति, अनन्त अर्थात् संसार के विजेता होने से अनन्तजित्, आपकी निर्मल आत्मा का अल्पज्ञ संसारी जीवों द्वारा चिन्तवन नहीं हो सकने से अचिन्त्यात्मा, भव्य जीवों के हितकारी होने से भव्यबन्धु तथा कर्मबन्धनरहित होने से 'अबन्धन' कहे जाते हैं।

युगादि- पुरुषो ब्रह्मा, पञ्च- ब्रह्म- मयः शिवः।
परः परतरः सूक्ष्मः, परमेष्ठी सनातनः।।४०।।

अन्वयार्थ :- हे जिनेन्द्र ! आप (युगादिपुरुषः) कर्म भूमि के प्रारम्भ में जन्मधारण करने से युगादिपुरुष (ब्रह्मा) अनन्तज्ञानादि समस्तगुणों की वृद्धि से ब्रह्म (पञ्चब्रह्ममयः) पञ्चपरमेष्ठिस्वरूप होने से पञ्चब्रह्ममय (शिवः) परमानन्द निमग्न होने शिव (परः) गुणों की

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

परिपूर्णता को प्राप्त होने से पर (परतरः) जगत में सबसे श्रेष्ठ होने से परतर (सूक्ष्मः) इन्द्रियों के अगोचर होने से सूक्ष्म (परश्रेष्ठी) परमपद में स्थित होने से परमेष्ठी तथा (सनातनः) सतत् विकाररहित होने से सनातन {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे जिनेन्द्र ! आप कर्मभूमि के प्रारम्भ में जन्म धारण करने से युगादिपुरुष, अनन्तज्ञानादि समस्त गुणों की वृद्धि से ब्रह्म, पञ्चपरमेष्ठिस्वरूप होने से पञ्चब्रह्ममय, परमानन्द निमग्न होने से शिव, गुणों की परिपूर्णता को प्राप्त होने से पर, जगत में सबसे श्रेष्ठ होने से परतर, इन्द्रियों के अगोचर होने से सूक्ष्म, परमपद में स्थित होने से परमेष्ठी तथा सतत् विकाररहित होने से 'सनातन' कहे जाते हैं।

स्वयं ज्योति- रजोऽजन्मा, ब्रह्म- योनि- रयो- निजः।
मोहारि- र्विजयी जेता, धर्म- चक्री दया- ध्वजः।।४१।।

अन्वयार्थ :- हे जिनेन्द्र ! आप (स्वयंज्योतिः) स्वयं प्रकाशमान होने से स्वयंज्योति (अजः) संसार में उत्पन्न नहीं होने से अज (अजन्मा) जन्मरहित होने से अजन्मा (ब्रह्मयोनिः) द्वादशाङ्ग श्रुतरूप वेद की उत्पत्ति के कारण होने से ब्रह्मयोनि (अयोनिजः) चौरासी लाख योनियों में उत्पन्न नहीं होने से अयोनिज (मोहारिर्विजयी) मोहनीय कर्मरूप शत्रु के विजेता होने से तथा विजय प्राप्त करने से विजयी (जेता) सदा जयशील रहने से जेता (धर्मचक्री) धर्मचक्र नामक प्रातिहार्य विभूषित होने से धर्मचक्री तथा (दयाध्वजः) दया का पाठ पढ़ाने वाली ध्वजावान होने से दयाध्वज {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे जिनेन्द्र ! आप स्वयं प्रकाशमान होने से स्वयं ज्योति, संसार में उत्पन्न नहीं होने से अज, जन्मरहित होने से अजन्मा, द्वादशाङ्ग श्रुतरूप वेद की उत्पत्ति के कारण होने से ब्रह्मयोनि, चौरासी लाख योनियों में उत्पन्न नहीं होने के कारण अयोनिज, मोहनीय कर्मरूप शत्रु के विजेता होने से मोहारि, जय को प्राप्त करना उसे विजय कहते हैं, ऐसी विजय प्रभु को प्राप्त होने से विजयी, सदा जयशील रहने से जेता, धर्मचक्रनामक प्रातिहार्य विभूषित होने से धर्मचक्री तथा करुणा का पाठ पढ़ाने वाली ध्वजावान होने से दयाध्वज कहे जाते हैं।

प्रशान्तारि- रनन्तात्मा, योगी योगीश्वरार्चितः।
ब्रह्म- विद्ब्रह्म- तत्वज्ञो, ब्रह्मोद्या- विद्यतीश्वरः।।४२।।

अन्वयार्थ :- हे जिनेन्द्र ! आप (प्रशान्तारिः) कर्मरूपः शत्रुओं के संहारकर्त्ता होने से प्रशान्तारि (अनन्तात्मा) आत्मा का कभी अन्त न होने से अनन्तात्मा (योगी) शुक्लध्यानी होने से योगी (योगीश्वरार्चितः) गणधरादि योगीश्वरों से पूजित होने से योगीश्वरार्चित (ब्रह्मविद्) ब्रह्म अर्थात् आत्मतत्व के ज्ञाता होने से ब्रह्मतत्वज्ञ (ब्रह्मोद्यावित्) केवलज्ञानरूप

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

आत्मविद्या के वेत्ता होने से ब्रह्मोद्यावित् तथा (यतीश्वरः) यतियों के ईश्वर होने से यतीश्वर {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे जिनेन्द्र ! आप कर्मरूप शत्रुओं के संहारकर्त्ता होने से प्रशान्तारि,आत्मा का कभी अन्त न होने से अनन्तात्मा, शुक्लध्यानी होने से योगी, गणधरादि योगीश्वरों से पूजित होने से योगीश्वरार्चित, ब्रह्म (आत्मा) का स्वरूप जानने से ब्रह्मवित्, ब्रह्मतत्वज्ञ (आत्मतत्व) के वेत्ता होने से ब्रह्मतत्वज्ञ, केवलज्ञानरूप आत्मविद्या के वेत्ता होने से ब्रह्मोद्यावित् तथा योगियों के ईश्वर होने से योगीश्वर कहे जाते हैं।

सिद्धो बुद्धः प्रबुद्धात्मा सिद्धार्थः सिद्ध- शासनः।
सिद्धसिद्धान्तविद् ध्येयः सिद्धसाध्यो- जगद्धितः।।४३।।

अन्वयार्थ :- हे जिनेन्द्र ! आप (सिद्धः) अघातिया कर्मों को क्षयकर नियम से सिद्ध होने के कारण सिद्ध (बुद्धः) सम्पूर्ण तत्वों के वेत्ता होने से बुद्ध (प्रबुद्धात्मा) आत्मस्वरूप के विज्ञ होने से प्रबुद्धात्मा (सिद्धार्थः) चारों पुरुषार्थों के सिद्ध होने से सिद्धार्थ (सिद्धशासनः) अखण्डनीय सिद्धान्त वाले होने से सिद्धशासन (सिद्धसिद्धान्तवित्) सिद्ध-परिपूर्ण ऐसा जो सिद्धान्त {परमागम} के वेत्ता होने से सिद्ध सिद्धान्तवित् (ध्येयः) योगियों के ध्यान के प्रमुख लक्ष्य होने से ध्येय (सिद्धसाध्यः) साध्य {कर्तव्य} सिद्ध हो जाने से सिद्धसाध्य तथा जगद्धितः जगत के हितकारी होने से जगद्धित {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे जिनेन्द्र ! आप, अघातिया कर्मों को क्षयकर नियम से सिद्ध होने के कारण सिद्ध, सम्पूर्ण तत्वों के वेत्ता होने से बुद्ध, आत्मस्वरूप के विज्ञ होने से प्रबुद्धात्मा, चारों पुरुषार्थों के सिद्ध हो जाने से सिद्धार्थ, अखण्डनीय सिद्धान्त वाले होने से सिद्धशासन, परिपूर्ण ऐसा जो सिद्धान्त (परमागम) के वेत्ता होने से सिद्ध सिद्धान्तवित्, योगियों के ध्यान के प्रमुख लक्ष्य होने से ध्येय, साध्य (कर्तव्य) सिद्ध हो जाने से सिद्ध साध्य तथा जगत के हितकारी होने से जगद्धित कहे जाते हैं।

सहिष्णु- रच्युतोऽनन्तः प्रभविष्णु- र्भवोद्भवः।
प्रभूष्णु- रजरोऽजर्यो, भ्राजिष्णुर्धीश्वरोऽव्ययः।।४४।।

अन्वयार्थ :- हे जिनेन्द्र ! आप (सहिष्णुः) क्षमा के भण्डार होने से सहिष्णु (अच्युतः) आत्मस्वरूप से विचलित न होने के कारण अच्युत (अनन्तः) विनाशरहित होने से अनन्त (प्रभविष्णुः) प्रभावशाली होने से प्रभविष्णु (भवोद्भवः) सर्वश्रेष्ठ जन्मधारक होने भवोद्भव (प्रभूष्णुः) सर्वोत्तम शक्तिमान होने से प्रभूष्णु (अजरः) जरामुक्त होने से अजर (अजर्यः) जीर्णता रहित होने से अजर्य (भ्राजिष्णुः) करोड़ों सूर्यों से भी अधिक कान्तिमान

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

होने से भ्राजिष्णु (धीश्वरः) केवलज्ञानरूप बुद्धि के स्वामी होने से धीश्वर तथा (अव्ययः) अविकार होने से अव्यय {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे जिनेन्द्र ! आप क्षमा के भण्डार होने से सहिष्णु, आत्मस्वरूप से विचलित न होने के कारण अच्युत, विनाशरहित होने से अनन्त, प्रभावशील होने से प्रभविष्णु, सर्वश्रेष्ठ जन्म धारक होने से भवोद्भव, सर्वोत्तम शक्तिमान होने से प्रभूष्णु, जरामुक्त होने से अजर, जीर्णतारहित होने से अजर्य, करोड़ों सूर्यों से भी अधिक कान्तिमान होने से भ्राजिष्णु, केवलज्ञानरूप बुद्धि के स्वामी होने से धीश्वर तथा अविकार होने से अव्यय कहे जाते हैं।

विभाव- सूर- सम्भूष्णुः, स्वयम्भूष्णुः पुरातनः।
परमात्मा परंज्योतिस्, त्रिजगत्परमेश्वरः।।४५।।

अन्वयार्थ :- हे जिनेन्द्र ! आप (विभावसुः) कर्मरुप ईंधन को भस्म करने के लिये अग्निसमान होने से विभावसु (असम्भूष्णुः) पुनर्जन्म न होने से असम्भूष्णु (स्वयंभूष्णुः) अपने ही पुरुषार्थ से परमपद को प्राप्त होने के कारण स्वयंभूष्णु (पुरातनः) शुद्धनय की अपेक्षा अनादिसिद्धि होने से पुरातन (परमात्मा) त्रिविध आत्माओं में उत्कृष्ट होने से परमात्मा (परंज्योतिः) उत्कृष्ट ज्योतिस्वरूप होने से परंज्योति तथा (त्रिजगत्परमेश्वरः) तीनों लोकों के स्वामी होने से त्रिजगत्परमेश्वर {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे जिनेन्द्र ! आप कर्मरूप ईंधन को भस्म करने के लिये अग्निसमान होने से विभावसु, पुनर्जन्म न होने से असम्भूष्णु, अपने ही पुरुषार्थ से परमपद को प्राप्त होने से स्वयंभूष्णु, शुद्धनय की अपेक्षा अनादि सिद्ध होने से पुरातन, त्रिविध आत्माओं में उत्कृष्ट होने से परमात्मा, उत्कृष्ट ज्योतिस्वरूप होने से परंज्योति तथा तीनों लोकों के स्वामी होने से त्रिजगत्परमेश्वर कहे जाते हैं।

।। इति श्रीमदादिशतम् ।।१।।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

दिव्य- भाषा- पतिर्दिव्यः, पूत- वाक्पूत- शासनः।
पूतात्मा परमज्योति-, र्धर्माध्यक्षो दमेश्वरः।।४६।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (दिव्यभाषापतिः) दिव्यध्वनि के स्वामी होने से दिव्यभाषापति (दिव्यः) अनुपम सौन्दर्य-समन्वित होने से दिव्य (पूतवाक्) वाणी के पवित्र होने से पूतवाक् (पूतशासनः) उपदेश या सिद्धान्त पवित्र होने से पूतशासन् (पूतात्मा) आत्मा के पवित्र होने से पूतात्मा (परज्योतिः) श्रेष्ठ ज्योतिस्वरूप होने से परमज्योति (धर्माध्यक्षः) धर्माधिकारी होने से धर्माध्यक्ष तथा (दमेश्वरः) इन्द्रियों के दमनकर्त्ता होने से दमेश्वर {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप, दिव्यध्वनि के स्वामी होने से दिव्यभाषापति, अनुपम सौन्दर्य समन्वित होने से दिव्य, वाणी के पवित्र होने से पूतवाक्, उपदेश या सिद्धान्त के पवित्र होने से पूतशासन, आत्मा के पवित्र होने से पूतात्मा, श्रेष्ठ ज्योतिस्वरूप होने से परमज्योति, धर्माधिकारी होने से धर्माध्यक्ष तथा इन्द्रियों के दमनकर्त्ता होने से दमेश्वर कहे जाते हैं।

श्रीपति र्भगवा- नर्हन्, नरजा विरजाः शुचिः।
तीर्थकृत् केवलीशानः पूजार्हः स्नातकोऽमलः।।४७।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (श्रीपतिः) केवलज्ञानादि लक्ष्मी के स्वामी होने से श्रीपति (भगवान) महान् ज्ञानवान होने से भगवान् (अर्हन्) विश्ववन्द्य होने से अर्हन् (अरजाः) कर्मरूप धूलि रहित होने से अरजा (विरजाः) भव्यों को कर्ममल दूर करने में सहायक होने से विरजा (शुचिः) परम पवित्र होने से शुचि (तीर्थकृत्) धर्मरूपतीर्थ के कर्त्ता होने से तीर्थकृत् (केवली) केवलज्ञान से विभूषित होने से केवली (ईशानः) अनन्त शक्तिमान् या सब के ईश्वर होने से ईशान (पूजार्हः) पूजायोग्य होने से पूजार्ह (स्नातकः) परिपूर्ण ज्ञानयुक्त होने से स्नातक तथा (अमलः) सप्तधातुरहित होने से अमल {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप केवलज्ञानादि लक्ष्मी के स्वामी होने से श्रीपति, महान् ज्ञानवान होने से भगवान, विश्ववन्द्य, होने से अर्हन् कर्मरूप धूलिरहित होने से अरजा, भव्यों को कर्ममल दूर करने में सहायक होने से विरजा, परमपवित्र होने से शुचि, धर्मरूपतीर्थ के कर्त्ता होने से तीर्थकृत्, केवलज्ञान से विभूषित होने से केवली, अनन्त शक्तिमान या सबके ईश्वर होने से ईशान, पूजायोग्य होने से पूजार्ह, परिपूर्णज्ञानयुक्त होने से स्नातक तथा सप्तधातु रहित होने से अमल कहे जाते हैं।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

अनन्न- दीप्ति- र्ज्ञानात्मा, स्वयंबुद्धः प्रजापतिः।
मुक्तः शक्तो निराबाधो, निष्कलो भुवनेश्वरः।।४८।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (अनन्तदीप्तिः) सर्वोत्तम कान्तिसहित होने से अनन्तदीप्ति (ज्ञानात्मा) ज्ञानस्वरूप होने से ज्ञानात्मा (स्वयंबुद्धः) गुरूपदेश के बिना स्वयम् ही मोक्षमार्ग पर प्रवृत्त होने से स्वयंबुद्ध (प्रजापतिः) समस्त जीवों के रक्षणकर्त्ता होने से प्रजापति (मुक्तः) कर्मरहित होने से मुक्त (शक्तः) अनन्तशक्ति धारक होने से शक्त (निराबाधः) बाधारहित होने से निराबाध (निष्कलः) शरीररहित होने से निष्कल तथा (भुवनेश्वर) तीनों लोकों के स्वामी होने से भुवनेश्वर {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप सर्वोत्तम कान्ति सहित होने से अनन्तदीप्ति, ज्ञानस्वरूप होने से ज्ञानात्मा, गुरूपदेश के बिना स्वयम् ही मोक्षमार्ग पर प्रवृत्त होने से स्वयंबुद्ध, समस्त जीवों के रक्षणकर्त्ता होने से प्रजापति, कर्मरहित होने से मुक्त, अनन्तशक्ति धारक होने से शक्त, बाधारहित होने से निराबाध, शरीररहित होने से निष्कल तथा तीनों लोकों के स्वामी होने से भुवनेश्वर कहे जाते हैं।

निरञ्जनो जगज्ज्योति, र्निरुक्तोक्ति- र्निरामयः।
अचल- स्थितिरक्षोभ्यः, कूटस्थः स्थाणु- रक्षयः।।४९।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (निरञ्जनः) कर्मरूप अञ्जन से रहित होने से निरञ्जन (जगज्ज्योतिः) जगत् को प्रकाशित करने से जगज्ज्योति (निरुक्तोक्ति) वाणी अत्यन्त प्रामाणिक होने से निरुक्तोक्ति (निरामयः) रोगरहित होने से निरामय (अचलस्थितिः) सर्वदा मुक्तिमन्दिर में निवास करने से अचलस्थिति (अक्षोभ्यः) क्षोभरहित होने से अक्षोभ्य (कूटस्थः) अविनाशी होने से कूटस्थ (स्थाणुः) गमनागमन रहित होने से स्थाणु तथा (अक्षयः) कभी भी क्षय न होने से अक्षय {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप कर्मरूप अञ्जन से रहित होने से निरञ्जन, जगत् को प्रकाशित करने से जगज्ज्योति, वाणी अत्यन्त प्रामाणिक होने से निरुक्तोक्ति, रोगरहित होने से निरामय, सर्वदा मुक्तिमन्दिर में निवास करने से अचलस्थिति, क्षोभ रहित होने से अक्षोभ्य, अविनाशी होने से कूटस्थ, गमनागमन रहित होने से स्थाणु तथा कभी भी क्षय न होने से अक्षय कहे जाते हैं।

अग्रणी- र्ग्रामणी- र्नेता, प्रणेता न्याय- शास्त्रकृत्।
शास्ता धर्म- पतिधर्म्यो, धर्मात्मा धर्म- तीर्थकृत्।।५०।।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (अग्रणीः) लोकत्रय के प्रधान होने से अग्रणी (ग्रामणीः) भव्यसमुदाय को मोक्षप्रापक होने से ग्रामणी (नेता) समस्त प्रजा को हितमार्ग में लगाने से नेता (प्रणेता) द्वादशाङ्गरूप आगम के निर्माता होने से प्रणेता (न्यायशास्त्रकृत्) न्यायशास्त्र के वक्ता होने से न्यायशास्त्रकृत् (शास्ता) हितोपदेशी होने से शास्ता (धर्मपतिः) रत्नत्रयरूप धर्म के स्वामी होने से धर्मपति (धर्म्यः) धर्मसहित होने से धर्म्य (धर्मात्मा) धर्मस्वरूप होने से धर्मात्मा तथा (धर्मतीर्थकृत्) धर्मरूप तीर्थ के प्रवर्तक होने से धर्मतीर्थकृत् {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप लोकत्रय के प्रधान होने से अग्रणी, भव्य-समुदाय को मोक्षप्रापक होने से ग्रामणी, समस्त प्रजा को हितमार्ग में लगाने से नेता, द्वादशाङ्ग रूप आगम के निर्माता होने से प्रणेता, न्यायशास्त्र के वक्ता होने से न्यायशास्त्रकृत्, हितोपदेशी होने से शास्ता, रत्नत्रयरूपधर्म के स्वामी होने से धर्मपति, धर्मसहित होने से धर्म्य, धर्मस्वरूप होने से धर्मात्मा तथा धर्मरूपतीर्थ के प्रवर्तक होने से धर्मतीर्थकृत् कहे जाते हैं।

वृषध्वजो वृषा- धीशो, वृष- केतु- र्वृषा- युधः।
वृषो वृष- पति- र्भर्ता, वृषभांको वृषोद्भवः।।५१।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (वृषध्वजः) ध्वजा पर बैल का चिह्न होने से अथवा वृष {धर्म} की ध्वजा फहराने से वृषध्वज (वृषाधीशः) अहिंसारूप धर्म के स्वामी होने से वृषाधीश (वृषकेतुः) धर्म की पताकायुक्त होने से वृषकेतु (वृषायुधः) कर्मरूप शत्रु के विनाश के लिये धर्मरूप शस्त्र के धारक होने से वृषायुध (वृषः) धर्मरूप होने से वृष (वृषपतिः) धर्म के नायक होने से वृषपति (भर्ता) समस्त जीवों के पोषक होने से भर्ता (वृषभाङ्कः) बैल का चिह्न होने से वृषभाङ्क तथा (वृषोद्भवः) पूर्व में धर्म धारण करने से विकास को प्राप्त होने से वृषोद्भव {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन्! आप ध्वजा पर बैल का चिह्न होने से अथवा वृष {धर्म} की ध्वजा फहराने से वृषध्वज, अहिंसारूप धर्म के स्वामी होने से वृषाधीश, धर्म की पताकायुक्त होने से वृषकेतु, कर्मरूपशत्रु के विनाश के लिये धर्मरूप शस्त्र के धारक होने से वृषायुध, धर्मरूप होने से वृष, धर्म के नायक होने से वृषपति, समस्त जीवों के पोषक होने से भर्त्ता, बैल का चिह्न होने से वृषभाङ्क तथा पूर्व में धर्म धारण करने से विकास को प्राप्त होने से वृषोद्भव कहे जाते हैं।

हिरण्य- नाभि- र्भूतात्मा, भूतभृद् भूत- भावनः।
प्रभवो विभवो भास्वान्, भवो भावो भवान्तकः।।५२।।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (हिरण्यनाभिः) सुन्दर नाभि युक्त होने से हिरण्यनाभि (भूतात्मा) आत्मा सत्स्वरूप होने से भूतात्मा (भूतभृत्) समस्त जीवों के रक्षक होने से भूत-भृत् (भूतभावनः) सत्य भावनावान् होने से भूतभावन (प्रभवः) प्रशस्त जन्मा होने से प्रभव (विभवः) संसारातीत होने से विभव (भास्वान्) प्रकाशमान् होने से भास्वान् (भवः) उत्पाद व्यय एवं ध्रौव्य युक्त होने से भव (भावः) आत्मस्वभाव में सदा लीन रहने से भाव तथा (भवान्तकः) संसार परिभ्रमण के नाशक होने से भवान्तक {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप सुन्दर नाभियुक्त होने से हिरण्यनाभि, आपका आत्मा सत्स्वरूप होने से भूतात्मा, समस्त जीवों के रक्षक होने से प्रभव, संसारातीत होने से भास्वान्, उत्पाद, व्यय एवं ध्रौव्य युक्त होने से भव, आत्मस्वरूप में सदा लीन होने से भाव तथा संसारपरिभ्रमण के नाशक होने से भवान्तक कहे जाते हैं।

हिरण्य- गर्भः श्रीगर्भः, प्रभूत- विभतोऽभवः।
स्वयंप्रभः प्रभूतात्मा, भूतनाथो जगत्प्रभूः।।५३।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (हिरण्यगर्भः) गर्भावतार के समय पृथिवी के सुवर्ण होने से हिरण्यगर्भ (श्री गर्भः) अन्तरङ्ग में केवलज्ञानादि लक्ष्मी विद्यमान होने से श्रीगर्भ (प्रभूतविभवः) समवसरणरूप अपूर्व वैभव होने से प्रभूतविभव (अभवः) अजन्मा होने से अभव (स्वयम्प्रभुः) स्वयं समर्थ होने से स्वयम्प्रभु (प्रभूतात्मा) केवलज्ञान की अपेक्षा आपकी आत्मा सर्वत्र व्याप्त होने से प्रभूतात्मा (भूतनाथः) सर्व प्राणियों के स्वामी होने से भूतनाथ तथा (जगत्पतिः) लोकत्रय के स्वामी होने से जगत्पति {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप गर्भावतार के समय पृथिवी के सुवर्णमय होने से हिरण्यगर्भ, अन्तरङ्ग में केवलज्ञानादि लक्ष्मी विद्यमान होने से श्रीगर्भ, समवसरणरूप अपूर्व वैभव होने से प्रभूतविभव, अजन्मा होने से अभव, स्वयं समर्थ होने से स्वयम्प्रभु, केवलज्ञान की अपेक्षा आपकी आत्मा सर्वत्र व्याप्त होने से प्रभूतात्मा, सर्वप्राणियों के स्वामी होने से भूतनाथ तथा लोकत्रय के स्वामी होने से जगत्पति कहे जाते हैं।

सर्वादिः सर्व- दृक, सार्वः सर्वज्ञः सर्व- दर्शनः।
सर्वात्मा सर्व- लोकेशः, सर्ववित् सर्वलोक- जित्।।५४।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (सर्वादिः) सर्वप्रमुख होने से सर्वादि (सर्वदृक्) लोकालोक के दृष्टा होने से सर्वदृक् (सार्वः) सभी के हितकर्त्ता होने से सार्व (सर्वज्ञः) सर्वपदार्थों के ज्ञाता होने से सर्वा (सर्वदर्शनः) परमावगाढ़सम्यक्त्व सम्पन्न होने से सर्वदर्शन (सर्वात्मा) अपने आत्मा में सम्पूर्ण लोक के प्रतिबिम्बित होने से सर्वात्मा (सर्वलोकेशः) सम्पूर्ण लोक के

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

स्वामी होने से सर्वलोकेश (सर्ववित) समस्त तत्त्वों के ज्ञाता होने से सर्ववित् तथा (सर्वलोकजित्) गुणों से समस्त जगत् के विजेता होने से सर्वलोकजित् {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन ! आप सर्वप्रमुख होने से सर्वादि, लोकाकोक के दृष्टा होने से सर्वदृक्, सभी के हितकर्त्ता होने से सार्व, सर्वपदार्थ के ज्ञाता होने से सर्वज्ञ, परमावगाढ़ सम्यक्त्व-सम्पन्न होने से सर्वदर्शन, अपने आत्मा में सम्पूर्ण लोक के प्रतिबिम्बित होने से सर्वात्मा, सम्पूर्णलोक के स्वामी होने से सर्वलोकेश, समस्त तत्वों के ज्ञाता होने से सर्ववित् तथा गुणों के समस्त जगत के विजेता होने से सर्वलोकजित् कहे जाते हैं।

सुगतिः सुश्रुतः सुश्रुत्, सुवाक् सूरिर्बहुश्रुतः।
विश्रुतो विश्वतः पादो, विश्वशीर्षः शुचिश्रवाः।।५५।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (सुगतिः) आपकी पंचम मोक्षगति सर्वश्रेष्ठ होने से अथवा आपका ज्ञान सर्वाधिक होने से आप सुगति (सुश्रुतः) प्रशस्त आगमोपदेशक होने से सुश्रुत (सुश्रुत्) भक्तों की प्रार्थना को भलीभांति सुनने से सुश्रुत् (सुवाक्) वाणी के हितमित प्रिय होने से सुवाक् (सूरिः) गुरुओं के गुरु होने से सूरि (बहुश्रुतः) सम्पूर्ण शास्त्रों के ज्ञाता होने से बहुश्रत (विश्रुतः) कैवल्य की प्राप्ति से श्रुतज्ञान के विलीन होने से विश्रुत (विश्वतः पादः) केवलज्ञानरूप सूर्य की किरणों के सम्पूर्ण लोक में व्याप्त होने से विश्वतः पाद (विश्वर्शीर्षः) लोक के शिखर पर विराजमान होने से विश्वशीर्ष तथा (शुचिश्रवाः) ज्ञान की निर्दोषता से शुचिश्रव {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आपकी पंचम मोक्षगति सर्वश्रेष्ठ होने से अथवा आपका ज्ञान सर्वाधिक होने से आप सुगति, प्रशस्त आगमोपदेशक होने से सुश्रुत, भक्तों की प्रार्थना को भलीभांति सुनने से सुश्रुत, वाणी के हित, मित, प्रिय होने सुवाक्, गुरूओं के गुरू होने से सूरि, सम्पूर्ण शास्त्रों के ज्ञाता होने से बहुश्रुत, कैवल्य की प्राप्ति से श्रुतज्ञान के विलीन होने से विश्रुत, केवलज्ञानरूप सूर्य की किरणों के सम्पूर्ण लोक में व्याप्त होने से विश्वतःपाद, लोक के शिखर (विश्व के अग्रभाग में) विराजमान होने से विश्वशीर्ष तथा ज्ञान की निर्दोषता से शुचिश्रव कहे जाते हैं।

सहस्रशीर्षः क्षेत्रज्ञः, सहस्राक्षः सहस्रपात्।
भूतभव्य- भवद्- भर्ता, विश्व- विद्या- महेश्वरः।।५६।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (सहस्रशीर्षः) अनन्तसुखी होने से सहस्रशीर्ष (क्षेत्रज्ञ) आत्मज्ञानी होने से क्षेत्रज्ञ (सहस्राक्षः) अनन्त पदार्थों के दर्शक होने से सहस्राक्ष (सहस्रपात्) अनन्त शक्तिधारी होने से सहस्रपात् (भूतभव्यभवद्भर्त्ता) भूत, भविष्यत्

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

वर्तमान तीनों कालों के स्वामी होने से भूतभव्यभवद्भर्त्ता तथा (विश्वविद्यामहेश्वरः) सम्पूर्ण विद्याओं के पारङ्गत होने से विश्वविद्यामहेश्वर {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप अनन्तसुखी होने से सहस्रशीर्ष, आत्मज्ञानी होने से क्षेत्रज्ञ, अनन्तपदार्थों के दर्शक होने से सहस्राक्ष, अनन्तशक्तिधारी होने से सहस्रपात्, तीनों कालों के स्वामी होने से भूतभव्यभवद्भर्त्ता तथा सम्पूर्ण विद्याओं के पारङ्गत होने से विश्वविद्यामहेश्वर कहे जाते हैं।

।। इति दिव्यादिशतम् ।।२।।

* डालियों की अनेकता को देख कर तुम चिन्तित मत होओ उनका मूल एक ही है, अनेकता का अर्थ विरोध ही नहीं होता विकाश भी होता है। पानी और दूध का मेल देख कर खुश भी मत होना इनका मूल एक नहीं है, एकता का अर्थ संबर्धन ही नहीं होता, शक्ति का ह्रास भी होता है।

* जितना प्रयत्न पढ़ने-पढ़ाने का होता है उतना शब्दों के आशय को समझने-समझाने का नहीं होता, जितना प्रयत्न लिखने का होता है उतना तथ्यों के संकलन का नहीं होता, अपने प्रति अन्याय न हो इसका जितना प्रयत्न होता है उतना दूसरे के प्रति न्याय करने का नहीं होता है, सागर की गहराई में जाने वाला जो पा सकता है वह फोटो में देखने वाला नहीं पा सकता है।

* कहीं श्रद्धा होती है विवेक नहीं होता, कहीं विवेक होता है श्रद्धा नहीं होती, श्रद्धा अंधी है और विवेक लंगड़ा है। श्रद्धालु चलता है अैर विवेकावान देखता है, ये दोनों अधूरे हैं इन दोनोंके समन्वय से पूर्णता आती है।

* विरोध ज्योति से पूर्व होने वाला धुआँ है, वह क्षण भर के लिए भले लोगों की आँखे चोंधिया दे, पर अन्त में ज्योति जगमगा उठती है। वे आदमी धुएँ से नहीं डरते जिन्हें ज्योति का तलाश है।

* आलोचना दोषों की होनी चाहिए और प्रशांसा गुणों की। दुसरों की आलोचना करने वाला अपने लिए खतरा पैदा करता है, दुसरों के लिए खतरा न भी हो। प्रशंसा करने वाला प्रशस्य के लिए खतरा हो भी सकता है मगर अपने लिए नहीं।

* संसार में सब उपयोगी नहीं होता, कुछ ग्रहण योग्य कुछ छोड़ने योग्य होता है। जानने योग्य सभी होता है, जो छोड़ने योग्य है उसे छोड़ा जाए शेष को नहीं, यही सफलता का मन्त्र है।

नित करो अरहंत का ही ध्यान, सदा रहे संयमी का सम्मान।
हर क्षण हो आचरण का अनुष्ठान, तभी हो सकेगा आत्म कल्याण।।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

स्थविष्ठः स्थविरो ज्येष्ठः, प्रष्ठ- प्रेष्ठो वरिष्ठधीः।
स्थेष्ठो गरिष्ठो बंहिष्ठः, श्रेष्ठोऽणिष्ठो गरिष्ठगीः।।५७।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (स्थविष्ठः) गुणों की अपेक्षा अतिविशाल होने से स्थविष्ठ (स्थविरः) अनन्तज्ञानादि द्वारा वृद्ध होने से स्थविर (ज्येष्ठः) लोक में श्रेष्ठ होने से ज्येष्ठ (प्रष्ठः) सबके अग्रगामी होने से प्रष्ठ (प्रेष्ठः) सबको अतिशय प्रिय होने से प्रेष्ठ (वरिष्ठधीः) श्रेष्ठ मतिसम्पन्न होने से वरिष्ठधी (स्थेष्ठः) अत्यन्त स्थिररूप रहने से स्थेष्ठ (गरिष्ठः) अत्यन्त गुरु होने से गरिष्ठ (बंहिष्ठः) गुणों की अपेक्षा अनेकरूप धारण करने से बंहिष्ठ (श्रेष्ठः) अतिप्रशस्त होने से श्रेष्ठ (अणिष्ठः) अतिसूक्ष्म होने से अणिष्ठ तथा (गरिष्ठगीः) वाणी के गौरवपूर्ण होने से गरिष्ठगी {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप गुणों की अपेक्षा अतिविशाल होने से स्थविष्ठ, अनन्तज्ञानादि द्वारा वृद्ध होने से स्थविर लोक में श्रेष्ठ होने से ज्येष्ठ, सबके अग्रगामी होने से प्रष्ठ, सबको अतिशय प्रिय होने से प्रेष्ठ, श्रेष्ठ मतिसम्पन्न होने से वरिष्ठधी, अत्यन्त स्थिररूप रहने से स्थेष्ठ, अत्यन्तगुरु होने से गरिष्ठ, गुणों की अपेक्षा अनेकरूप धारण करने से बंहिष्ठ, अतिप्रशस्त होने से श्रेष्ठ, अतिसूक्ष्म होने से अणिष्ठ तथा वाणी के गौरवपूर्ण होने से गरिष्ठगी कहे जाते हैं।

विश्वमुट् विश्वसृड् विश्वेड्, विश्वभुग् विश्व-नायकः।
विश्वासीर्विश्वरूपात्मा, विश्वजिद्विजितान्तकः।।५८।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (विश्वमुट्) चतुर्गतिरूप संसार के नाशक होने से विश्वमुट् (विश्वसृट्) विश्व की व्यवस्था के निरूपक होने से विश्वसृट् (विश्वेट्) विश्व के ईश होने से विश्वेट् (विश्वभुक्) विश्व के रक्षक होने से विश्वभुक् (विश्वनायकः) तीनों लोकों के नाथ होने से विश्वनायक (विश्वासीः) विश्वव्यापी ज्ञानवान् होने से विश्वासी (विश्वरूपात्मा) केवलज्ञान के विश्वव्यापी होने से विश्वरूपात्मा (विश्वजित्) विश्व के विजेता होने से विश्वजित् तथा (विजितान्तकः) मृत्यु के विजेता होने से विजितान्तक {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप चतुर्गतिरूप संसार के नाशक होने से विश्वमुट्, विश्व की व्यवस्था के निरूपक होने से विश्वसृट्, विश्व के ईश होने विश्वेट्, विश्व के रक्षक होने से विश्वभुक्, तीनों लोकों के नाथ होने से विश्वनायक, विश्वव्यापी ज्ञानवान् होने से विश्वाशी, केवलज्ञान के विश्वव्यापी होने से विश्वरूपात्मा, विश्व के विजेता होने से विश्वजित् तथा मृत्यु के विजेता होने से विजितान्तक कहे जाते हैं।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

विभवो विभयो वीरो, विशोको विजरन् अजरन्।
विरागो विरतोऽसङ्गो, विविक्तो वीत-मत्सरः।।५९।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (विभवः) संसार से मुक्त होने के कारण विभव (विभयः) भयरहित होने से विभय (वीरः) अनन्त बलशाली होने से वीर (विशोकः) शोकरहित होने से विशोक (विजरः) जरारहित होने से विजर (जरन्) अनादि परम्परा के कारणवृद्ध होने से जरन् (विरागः) रागरहित होने से विराग (विरतः) समस्त विषयों से विरक्त होने से विरत (असङ्गः) परिग्रहरहित होने से असङ्ग (विविक्तः) एकाकी होने से विविक्त तथा वीतमत्सरः ईर्षा व द्वेष नहीं होने से वीतमत्सर {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप संसार से मुक्त होने के कारण विभव, भयरहित होने से विभय, अनन्त बलशाली होने से वीर, शोक रहित होने से विशोक, जरारहित होने से विजर अनादि परम्परा के कारण वृद्ध होने से जरन्, रागरहित होने से विराग, समस्त विषयों से विरक्त होने से विरत, परिग्रहरहित होने से असङ्ग, एकाकी होने से विविक्त तथा ईर्षा या द्वेष नहीं होने से वीतमत्सर कहे जाते हैं।

विनेय- जनता- बन्धु-, र्विलीना- शेष- कल्मषः।
वियोगो योगविद् विद्वान् विधाता सुविधिः सुधीः।।६०।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (विनेयजनतावन्धुः) विनयशील प्राणियों के बन्धु होने से विनेयजनतावन्धु (विलीनाशेषकल्मषः) कर्मकालिमारहित होने से विलीनाशेषकल्मष (वियोगः) आत्मप्रदेश परिस्पन्दरूप योगरहित होने से वियोग (योगवित्) योग अर्थात् ध्यान के ज्ञाता होने से योगवित् (विद्वान्) सर्वपदार्थों के ज्ञाता होने से विद्वान् (विधाता) धर्मरूप सृष्टि के कर्त्ता होने से विधाता (सुविधिः) अनुष्ठान व क्रिया के अत्यन्त प्रशंसनीय होने से सुविधि तथा (सुधीः) अतिशय बुद्धिमान होने से सुधी {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप विनयशील प्राणियों के बन्धु होने से विनयेजनताबन्धु, कर्मकालिमारहित होने से विलीनाशेषकल्मष, आत्मप्रदेश परिस्पन्दरूप योगरहित होने से वियोग, योग अर्थात् ध्यान के ज्ञाता होने से योगवित्, सर्व पदार्थों के ज्ञाता होने से विद्वान्, धर्मरूप सृष्टि के कर्त्ता होने से विधाता, अनुष्ठान व क्रिया के अत्यन्त प्रशंसनीय होने से 'सुविधि' तथा अतिशय बुद्धिमान होने से 'सुधी' कहे जाते हैं।

क्षान्तिभाक्- पृथिवी- मूर्तिः, शान्तिभाक् सलिलात्मकः।
वायुमूर्ति- रसङ्गात्मा, वह्नि- मूर्ति- रधर्मधृक्।।६१।।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (क्षान्तिभाक्) उत्तम क्षमा के धारक होने से क्षान्तिभाक् (पृथिवीमूर्तिः) पृथिवी के समान सहनशील होने से पृथिवीमूर्ति (शान्तिभाक्) शान्तिधारक होने से शान्तिभाक् (सलिलात्मकः) जल के समान अतिनिर्मल होने से सलिलात्मक (वायुमूर्तिः) वायु के समान पदार्थान्तर का संसर्गरहित होने से वायुमूर्ति (असङ्गात्मा) परिग्रहरहित होने से असङ्गात्मा (बह्निमूर्तिः) कर्मरूप ईंधन में भस्मसात्कर्ता होने से बह्निमूर्ति तथा (अधर्मधृक्) अधर्म के नाशक होने से अधर्मधृक् {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप उत्तमक्षमा के धारक होने से क्षान्तिभाक्, पृथ्वी के समान सहनशील होने से पृथ्वीमूर्ति, शान्तिधारक होने से शान्तिभाक्, जल के समान अतिनिर्मल होने से सलिलात्मक, वायु के समान पदार्थान्तर का संसर्गरहित होने से वायुमूर्ति, परिग्रहरहित होने से असङ्गात्मा, कर्मरूप ईंधन के भस्मसात्कर्ता होने से बह्निमूर्ति तथा अधर्म के नाशक होने से अधर्मधक् कहे जाते हैं।

सुयज्वा यज- मानात्मा, सुत्वा सूत्राम- पूजितः।
ऋत्विग्यज्ञ- पति- यज्ञो, यज्ञाङ्ग- ममृतं हविः।।६२।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (सुयज्वा) कर्मरूप सामग्री के होमकर्त्ता होने से सुयज्वा (यजमानात्मा) आत्मस्वरूप की आराधना करने से यजमानात्मा (सुत्वा) आत्मीय आनन्दरूप सिन्धु में स्नानकर्त्ता होने से सुत्वा (सूत्रामपूजितः) सौ इन्द्रों से पूजित होने से सूत्रामपूजित (ऋत्विक्) ध्यानाग्नि में शुभाशुभ कर्मों के भस्मसात् करने से ऋत्विक (यज्ञपतिः) यज्ञ के स्वामी होने से यज्ञपति (यज्ञः) पूज्य होने से यज्ञ (यज्ञाङ्गम्) यज्ञ के साधन होने से यज्ञाङ्ग (अमृतम्) मृत्युरहित होने से अमृत तथा (हविः) ज्ञानयज्ञ में अपनी अशुद्ध आत्मपरिणति को होम देने से हवि {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप कर्मरूप सामग्री के होमकर्ता होने से सुयज्वा, आत्मस्वरूप की आराधना करने से यजमानात्मा, आत्मीय आनन्दरूप सिन्धु में स्नानकर्ता होने से सुत्वा, सौ इन्द्रों से पूजित होने से सुत्रामपूजित, ध्यानाग्नि में शुभाशुभ कर्मों के भस्मसात् करने से ऋत्विक्, यज्ञ के स्वामी होने से यज्ञपति, पूज्य होने से यज्ञ, यज्ञ के साधन होने से यज्ञाङ्ग, मृत्युरहित होने से अमृत तथा ज्ञानयज्ञ में अपनी अशुद्ध आत्मपरिणति को होम देने से हवि कहे जाते हैं।

व्योम- मूर्ति- रमूर्तात्मा, निर्लेपो निर्मलोऽचलः।
सोममूर्तिः सुसौम्यात्मा, सूर्य मूर्ति- र्महाप्रभः।।६३।।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (व्योममूर्तिः) आकाश के समान अतिनिर्मल होने से व्योममूर्ति (अमूर्तात्मा) रूपादि रहित होने से अमूर्तात्मा (निर्लेपः) कर्मरूप लेपरहित होन से निर्लेप (निर्मलः) रागादि वा मूत्रादि मलरहित होने से निर्मल (अचलः) सर्वदा स्थिर हरने से अचल (सोममूर्तिः) चन्द्रसमान प्रकाशमान और शान्त होने से सोममूर्ति (सुसौम्यात्मा) अतिसौम्यात्मा आत्मवान् होने से सुसौम्यात्मा (सूर्यमूर्तिः) सूर्य के समान तेजस्वी होने से सूर्यमूर्ति तथा (महाप्रभः) अतिशय प्रभावशाली होने से महाप्रभ {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप आकाश के समान अतिनिर्मल होने से व्योममूर्ति, रूपादिरहित होने से अमूर्तात्मा, कर्मरूप लेपरहित होने से निर्लेप, रागादि वा मूत्रादि मलरहित होने से निर्मल, सर्वदा स्थिर रहने से अचल, चन्द्रसमान प्रकाशमान और शान्त होने से सोममूर्ति, अतिसौम्य आत्मवान् होने से सुसौम्यात्मा, सूर्य के समान तेजस्वी होने से सूर्यमूर्ति तथा अतिशय प्रभावशाली होने से महाप्रभ कहे जाते हैं।

मन्त्र- विन्मन्त्र कृन्मन्त्री, मन्त्र-मूर्ति- रनन्तगः।
स्वतन्त्रस्तन्त्रकृत्स्वन्तः कृतान्तान्तः कृतान्तकृत्।।६४।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (मन्त्रवित्) मन्त्र होने से मन्त्रवित् (मन्त्रकृत्) मन्त्रों के निर्माता होने से मन्त्रकृत् (मन्त्री) आत्मचिन्तवनकर्ता होने से मन्त्री (मन्त्रमूर्तिः) मन्त्रस्वरूप होने से मन्त्रमूर्ति (अनन्तगः) अनन्त वस्तुओं के ज्ञाता होने से अनन्तग (स्वतन्त्रः) कर्मों की अधीनता से मुक्त होने से स्वतन्त्र (तन्त्रकृत्) आगम के प्रणेता होने से तन्त्रकृत् (स्वन्तः) शुद्ध अन्तःकरण होने से स्वन्त (कृतान्तान्तः) मृत्यु के नाशकर्ता होने से कृतान्तान्त तथा (कृतान्तकृत्) द्वादशाङ्ग आगम के प्रणेता होने से कृतान्तकृत् {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप मन्त्रज्ञ होने से मन्त्रवित्, मंत्रों के निर्माता होने से मंत्रकृत्, आत्मचिन्तवनकर्ता होने से मन्त्री, मन्त्रस्वरूप होने से मन्त्रमूर्ति, अनन्त वस्तुओं के ज्ञाता होने से अनन्तग, कर्मों की अधीनता से मुक्त होने से स्वतन्त्र, आगम के प्रणेता होने से तन्त्रकृत्, शुद्ध अन्तःकरण होने से स्वन्त,मृत्यु के नाशकर्ता होने से कृतान्तान्त तथा द्वादशाङ्ग आगम के प्रणेता होने से कृतान्कृत् कहे जाते हैं।

कृती कृतार्थः सत्कृत्यः, कृतकृत्यः कृतक्रतुः।
नित्यो मृत्युञ्जयोऽमृत्यु-, रमृतात्माऽमृतोद्भवः।।६५।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (कृती) अतिभाग्यवान् होने से कृती (कृतार्थः) मोक्षरूप परम पुरुषार्थ को सिद्ध करने से कृतार्थ (सत्कृत्यः) सभी जीवों के द्वारा समादरयोग्य होने से सत्कृत्य (कृतकृत्यः) समस्त कार्य पूर्ण कर चुकने से कृतकृत्य

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

(कृतक्रतुः) तपश्चरणरूप यज्ञ समाप्त कर चुकने से कृतक्रतु (नित्यः) सदा विद्यमान रहने से नित्य (मृत्युञ्जयः) मृत्यु के विजेता होने से मृत्युञ्जय (अमृत्युः) मृत्युरहित होने से अमृत्यु (अमृतात्मा) अमृत के समान आनन्दप्रद आत्मवान् होने से अमृतात्मा तथा (अमृतोद्भवः) मोक्षप्राप्ति के कारण होने से अमृतोद्भव {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप अतिभाग्यवान् होने से कृती, मोक्षरूप परमपुरुषार्थ को सिद्ध करने से कृतार्थ, सभी जीवों के द्वारा समादारयोग्य होने से सत्कृत्य, समस्त कार्य पूर्ण कर चुकने से कृतकृत्य, तपश्चरणरूप यज्ञ समाप्त कर चुकने से कृतक्रतु, सदा विद्यमान रहने से नित्य, मृत्यु के विजेता होने से मृत्युञ्जय, मृत्युरहित होने से अमृत्यु, अमृत के समान आनन्दप्रद आत्मवान होने से अमृतात्मा तथा मोक्षप्राप्ति के कारण होने से अमृतोद्भव कहे जाते हैं।

ब्रह्म- निष्ठः परंब्रह्म, ब्रह्मात्मा ब्रह्म- सम्भवः।
महाब्रह्मपति- र्ब्रह्मेड्, महाब्रह्म- पदेश्वरः।।६६।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (ब्रह्मनिष्ठः) शुद्ध आत्मस्वरूप में अवस्थित होने से ब्रह्मनिष्ठ (परंब्रह्म) उत्कृष्ट ब्रह्मस्वरूप होने से परंब्रह्म (ब्रह्मात्मा) परमात्मस्वरूप होने से ब्रह्मात्मा (ब्रह्मसम्भवः) शुद्धात्म की प्राप्ति से ब्रह्मसम्भव (महाब्रह्मपतिः) महान् आत्मा गण-धरादि मुनीन्द्रों के स्वामी होने से महाब्रह्मपति (ब्रह्मेट्) केवलज्ञान के अधिपति होने से ब्रह्मेट तथा (महाब्रह्मपदेश्वरः) अरिहन्त वा सिद्ध अवस्था के स्वामी होने से महाब्रह्मपदेश्वर {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप शुद्ध आत्मस्वरूप में अवस्थित होने से ब्रह्मनिष्ठ, उत्कृष्ट ब्रह्मस्वरूप होने से परंब्रह्म, परमात्मस्वरूप होने से ब्रह्मात्मा, शुद्धात्म की प्राप्ति से ब्रह्मसम्भव, महान् आत्मा गणधरादि मुनीन्द्रों के स्वामी होने से महाब्रह्मपति, केवलज्ञान के अधिपति होने से ब्रह्मेट् तथा अरिहन्त व सिद्ध अवस्था के स्वामी होने से महाब्रह्मपदेश्वर कहे जाते हैं।

सुप्रसन्नः प्रसन्नात्मा, ज्ञान- धर्म- दम- प्रभुः।
प्रशमात्मा प्रशान्तात्मा, पुराण- पुरुषोत्तमः।।६७।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (सुप्रसन्नः) सदा आनन्दस्वरूप रहने से सुप्रसन्न (प्रसन्नात्मा) कषायों की मलिनतारहित होने से सुप्रसन्नात्मा (ज्ञानधर्मदमप्रभुः) केवलज्ञान तपश्चरण वा इन्द्रियनिग्रह के स्वामी होने से ज्ञानधर्मदमप्रभु (प्रशमात्मा) क्रोधादिरहित होने से प्रशमात्मा (प्रशान्तात्मा) अतिशान्त आत्मा वाले होने से प्रशान्तात्मा तथा (पुराणपुरुषोत्तमः)

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

शलाकापुरुषों में श्रेष्ठ होने से पुराणपुरुषोत्तम {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप सदा आनन्दस्वरूप रहने से सुप्रसन्न, कषायों की मलिनता रहित होने से सुप्रसन्नात्मा, केवलज्ञान तपश्चरण व इन्द्रियनिग्रह के स्वामी होने से ज्ञानधर्मदमप्रभु, क्रोधादिरहित होने से प्रशमात्मा, अतिशान्त आत्मा वाले होने से प्रशान्तात्मा तथा शलाकापुरुषों में श्रेष्ठ होने से पुराण- पुरुषोत्तम कहे जाते हैं।

।। इति स्थविष्ठादिशतम् ।।३।।

* जो अपने बारे में सोचता है वह समूचे विश्व मे बारे में सोचता है, अपना विश्व भी उतरा ही विराट् है जितना यह विश्व है। अपनी समस्याएँ भी उतनी ही जटिल है जितनी कि विश्व की हैं।

* जो अंग अन्तरात्मा के रहस्य को प्रगट करते हैं वे चेहरे में सौन्दर्य और लावण्य का निर्माण भी करते हैं चाहे वह रहस्य पीड़ा जनक हो अथवा प्रफूल्लता ही क्यों न हो। जो मौन से आत्मा के रहस्य को प्रगट नहीं करते उन्हें सुन्दर नहीं कहा जा सकता फिर वे बाह्य से चाहे कितने ही सुन्दर क्यों न हो।

* प्राणियों के उत्थान के लिए एक सम्यग्दृष्टि धर्मात्मा की वाणी और भावनाएँ होती हैं, तुम अच्छेहो इसलिए यहाँ आकर, सन्तों को शास्त्रों को सुन रहे हो, मैं चाहता हूँ तुम इतने अच्छे बनो कि लोग तुम्हें सुनने को आतुर हो उठें, ऐसा बनने के लिए तुम्हें मात्र अपना अभिप्राय बदलना पड़ेगा बस।

* अपनी व दुसरों की गलती से समझदार बहुत कुछ शिक्षा ले कर सुधार कर सकता है, संवेदन शीलता होना चाहिए।

* जिससे तुम डर रहे हो क्या वो किसी से नहीं डरता है ? अगर डरता है तो तुममें और उसमें क्या अन्तर है ? नहीं कोई अन्तर नहीं है। अपने कर्मों के शिवा डरने किसी से नहीं डरना चाहिए।

* मेरी आत्मा से अज्ञान से (आशक्ति) से एक-एक पदार्थों की उत्पत्ति हुई और उन्हीं पदार्थों से मेरे सद् भाग्य और दुर्भाग्य की उत्पत्ति हुई, परन्तु अनेक बार मौन ही वाणी से अधिक सामर्थ्यवान नहीं होता ? मौन के आँगन में ही मौत हारती है।

दिल में तेरी तस्वीर उतरे, उसे पहले ही हम कर्मों से घिर गये।
तुम्हें पाने के इन्तजार में प्रभु, अश्कों के सिन्धु में हम नहा गये।।
न जाने तुम कब चुपचाप, किस जहाँ में खो गये।
तुम्हारा तो कुछ नहीं बिगड़ा प्रभु, यह यतिम से हो गये।।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

महाऽशोकध्वजोऽशोकः, कः स्रष्टा पद्म- विष्टरः।
पद्मेशः पद्मसम्भूतिः, पद्मनाभि रनुत्तरः।।६८।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (महाशोकध्वजः) अशोक वृक्षप्रातिहार्य सुशोभित होने से महाशोकध्वज (अशोकः) शोकरहित होने से अशोक (कः) सबके पितामह होने से 'क' (स्रष्टा) स्वर्ग और मुक्ति क निर्माता होने से स्रष्टा (पद्मविष्टरः) कमलरूप आसन पर विराजमान होने से पद्मविष्टर (पद्मेशः) पद्मा अर्थात् लक्ष्मी के स्वामी होने से पद्मेश (पद्मसम्भूतिः) विहारकाल में देवों द्वारा चरणों के नीचे कमल रचना किये जाने से पद्मसम्भूति (पद्मनाभिः) कमल के समान सुन्दर नाभि होने से पदम्नाभि तथा (अनुत्तरः) अनन्य श्रेष्ठ होने से अनुत्तर {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप अशोकवृक्षप्रातिहार्य सुशोभित होने से महाशोकध्वज, शोकरहित होने से अशोक, सबके पितामह होने से 'क', स्वर्ग और मुक्ति के निर्माता होने से स्रष्टा, कमलरूप आसन पर विराजमान होने से पद्मविष्टर, पद्मा अर्थात् लक्ष्मी के स्वामी होने से पद्मेश, विहारकाल में देवों द्वारा चरणों के नीचे कमल रचना किये जाने से पद्मसम्भूति, कमल के समान सुन्दर नाभि होने पद्मनाभि तथा अनन्य श्रेष्ठ होने से अनुत्तर कहे जाते हैं।

पद्म- योनिर्जगद्योनि-, रित्यः स्तुत्यः स्तुतीश्वरः।
स्तवनार्हो हृषीकेशो, जितजेयः कृतक्रियः।।६९।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (पद्मयोनिः) पद्माकार गर्भाशय में उत्पन्न होने से पद्मयोनि (जगद्योनिः) धर्मरूप जगत् की उत्पति के कारण होने से जगद्योनि (इत्यः) ज्ञानगम्य होने से इत्य (स्तुत्यः) इन्द्रादिक द्वारा वन्द्य होने से स्तुत्य (स्तुतीश्वरः) समस्त स्तुतियों के ईश्वर होने से स्तुतीश्वर (स्तवनार्हः) स्तुति के योग्य होने स्तवनार्ह (हृषीकेश) हृषीक अर्थात् इन्द्रियों के विजेता होने से हृषीकेश (जितजेयः) जीतने योग्य मोहादि के विजेता होने से जितजेय तथा (कृतक्रियः) कृतकृत्य होने से कृतक्रिय {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप पद्माकार गर्भाशम में उत्पन्न होने से पद्मयोनि, धर्मरूप जगत् की उत्पत्ति के कारण होने से जगद्योनि, ज्ञानगम्य होने से इत्य, इन्द्रादिक द्वारा वन्द्य होने से स्तुत्य, समस्त स्तुतियों के ईश्वर होने से स्तुतीश्वर, स्तुति के योग्य होने से स्तवनार्ह, हृषीक अर्थात् इन्द्रियों के विजेता होने से हृषीकेश, जीतने योग्य मोहादि के विजेता होने से जितजेय तथा कृतकृत्य होने से कृतक्रिय कहे जाते हैं।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

गणाधिपो गणज्येष्ठो, गुण्य पुण्यो गणा- ग्रणीः।
गुणाकरो गुणाम्भोधि-, र्गुणज्ञो गुणनायकः।।७०।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! (गणाधिपः) द्वादश सभाओं के स्वामी होने से गणाधिप (गणज्येष्ठः) समस्त गणों में श्रेष्ठ होने से गणज्येष्ठ (गण्यः) विश्व में गणनायोग्य होने से गण्य (पुण्यः) पवित्र होने से पुण्य (गणाग्रणीः) समवसरण के जीवों के अग्रेसर होने से गणाग्रणी (गुणाकारः) गुणों की खानि होने से गुणाकर (गुणाम्भोधिः) गुणों के सागर होने से गुणाम्भोधि (गुणज्ञः) गुणों के ज्ञाता होने से गुणज्ञ तथा (गुणनायकः) समस्त गुणों के नायक होने से गुणनायक {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप द्वादश सभाओं के स्वामी होने से गणाधिप, समस्त गणों में श्रेष्ठ होने से गणज्येष्ठ, विश्व में गणनायोग्य होने से गण्य, पवित्र होने से पुण्य, समवसरण के जीवों के अग्रेसर होने से गणाग्रणी, गुणों की खानि होने से गुणाकर, गुणों के सागर होने से गुणाम्भोधि, गुणों के ज्ञाता होने से गुणज्ञ तथा समस्त गुणों के नायक होने से गुणनायक कहे जाते हैं।

गुणादरी गुणोच्छेदी, निर्गुणः पुण्य- गीर्गुणः।
शरण्यः पुण्य- वाक्पूतो, वरेण्यः पुण्यनायकः।।७१।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (गुणादरी) गुणों के आदर करने से गुणादरी (गुणोच्छेदी) वैभाविक गुणों के नाशक होने से गुणोच्छेदी (निर्गुणः) वैभाविक गुणरहित होने से निर्गुण (पुण्यगीः) पवित्रवाणी वाले होने से पुण्यगी (गुणः) गुणस्वरूप होने से गुण (शरण्यः) शरणभूत होने से शरण्य (पुण्यवाक्) वचन के पवित्र होने से पुण्यवाक् (पूतः) पवित्र होने से पूत (वरेण्यः) सर्वश्रेष्ठ होने से वरेण्य तथा (पुण्यनायकः) पुण्य के स्वामी होने से पुण्यनायक {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप गुणों का आदर करने से गुणादरी, वैभाविक गुणों के नाशक होने से गुणोच्छेदी, वैभाविक गुणरहित होने से निर्गुण, पवित्रवाणी वाले होने से पुण्यगी, गुणस्वरूप होने से गुण, शरणभूत होने से शरण्य, वचन के पवित्र होने से पुण्यवाक्, पवित्र होने से पूत, सर्वश्रेष्ठ होने से वरेण्य तथा पुण्य के स्वामी होने से पुण्यनायक कहे जाते हैं।

अगण्यः पुण्यधीगण्यः, पुण्यकृत्पुण्यशासनः।
धर्मारामो गुणग्रामः, पुण्यापुण्य- निरोधकः।।७२।।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (अगण्यः) अनन्तगुणों के भण्डार होने से **अगण्य** (पुण्यधीः) पवित्रबुद्धियुक्त होने से पुण्यधी (गुण्यः) गुणों से शोभायमान होने से गुण्य (पुण्यकृत्) पुण्यकर्ता होने से पुण्यकृत् (पुण्यशासनः) पवित्रशासनवान् होने से पुण्यशासन (धर्मारामः) धर्म के उद्यानरूप होने से धर्माराम (गुणग्रामः) गुणों के समूह होने से गुणग्राम तथा (पुण्यापुण्यनिरोधकः) शुद्धभावों के द्वारा पुण्य पाप के निरोधक होने से **पुण्यापुण्य-निरोधक** {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप अनन्तगुणों के भण्डार होने से अगण्य, पवित्रबुद्धियुक्त होने से पुण्यधी, गुणों से शोभायमान होने से गुण्य, पुण्यकर्ता होने से **पुण्यकृत्**, पवित्रशासनवान् होने से पुण्यशासन, धर्म के उद्यानरूप होने से धर्माराम, गुणों के **समूह** होने से गुणग्राम तथा शुद्धभावों के द्वारा पुण्य वा पाप के निरोधक होने से **पुण्यापुण्य** निरोधक कहे जाते हैं।

पापापेतो विपापात्मा, विपाप्मा वीतकल्मषः।
निर्द्वन्द्वो निर्मदः शान्तो, निर्मोहो निरुपद्रवः।।७३।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (पापापेतः) हिंसादि पाप कार्यों से दूर होने से **पापपेत** (विपापात्मा) पापरहित आत्मन होने से विपापात्मा (विपाप्मा) पापक्षय करने से **विपाप्मा** (वीतकल्मषः) कर्ममलरहित होने से वीतकल्मष (निर्द्वन्द्वः) परिग्रहरहित होने से **निर्द्वन्द्व** (निर्मदः) अहङ्काररहित होने से निर्मद (शान्तः) मन्दकषाय होने से शान्त (निर्मोहः) **मोहरहित** होने से निर्मोह तथा (निरुपद्रवः) उपसर्गरहित होने से निरुपद्रव {कथ्यते = कहे **जाते हैं**}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप हिंसादि पापकार्यों से दूर होने से पापपेत, **पापरहित** आत्मवान् होने से विपापात्मा, पापाक्षय करने से विपाप्मा, कर्ममलरहित होने से **वीतकल्मष**, परिग्रह रहित होने से निर्द्वन्द्व, अहङ्काररहित होने से निर्मद, मन्दकषाय होने **से शान्त**, मोहरहित होने से निर्मोह तथा उपसर्गरहित होने से निरुपद्रव कहे जाते हैं।

निर्निमेषो निराहारो, निष्क्रियो निरुपप्लवः।
निष्कलङ्को निरस्तैना, निर्धूतागा निरास्रवः।।७४।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (निर्निमेषः) पलकों के न झपने से निर्निमेष (निराहारः) कवलाहार रहित होने से निराहार (निष्क्रियः) सांसारिक क्रियाओं से रहित होने से निष्क्रय (निरुपप्लवः) निर्बाध होने से निरुपप्लव (निष्कलङ्कः) कलङ्करहित होने से निष्कलङ्क (निस्तैनाः) निष्पाप होने से निरस्तैन (निर्धूतागाः) निरपराध होने से निर्धूताग तथा (निरास्रवः) कर्मास्रवरहित होने से निरास्रव {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

अर्थ :- हे भगवन् ! आप पलकों के न झपने से निर्निमेष, कवलाहाररहित होने से निराहार, सांसारिक क्रियाओं से रहित होने से निष्क्रिय, निर्बाध होने से निरुपप्लव, कलङ्क रहित होने से निष्कलङ्क, निष्पाप होने से निरस्तैन, निरपराध होने से निर्धूताग तथा कर्मास्रव रहित होने से 'निरास्रव' कहे जाते हैं।

विशालो विपुल- ज्योति- रतुलोऽचिन्त्यवैभवः।
सुसंवृतः सुगुप्तात्मा, सुबुप् सुनयतत्त्ववित्।।७५।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् । आप (विशालः) अति महान् होने से विशाल (विपुलज्योतिः) केवलज्ञानरूप महान् प्रकाशयुक्त होने से विपुलज्योति (अतुलः) अनुपम होने से अतुल (अचिन्त्यवैभवः) विभूति के अचिन्त्य होने से अचिन्त्यवैभव (सुसंवृत्तः) पूर्णसंवरयुक्त अथवा गणधरादि से वेष्ठित होने से सुसंवृत (सुगुप्तात्मा) परकीय संरक्षण निरपेक्ष होने से सुगुप्तात्मा (सुबुप्) उत्तम ज्ञाता होने से सुबुप् तथा (सुनयतत्ववित्) नयों के मर्मज्ञ होने से सुनयतत्ववित् {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप अतिमहान् होने से विशाल, केवलज्ञानरूप महान् प्रकाशयुक्त होने से विपुलज्योति, अनुपम होने से अतुल, विभूति के अचिन्त्य होने से अचिन्त्यवैभव, गणधरादि से वेष्ठित होने से सुसंवृत, परकीयसंरक्षणनिरपेक्ष होने से सुगुप्तात्मा, उत्तम ज्ञाता होने से सुभुत् तथा नयों के मर्मज्ञ होने से सुनयतत्वावित् कहे जाते हैं।

एकविद्यो महाविद्यो, मुनिः परिवृढः पतिः।
धीशो विद्यानिधिः साक्षी, विनेता विहतान्तकः।।७६।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (एकविद्यः) एकाकी केवलज्ञान विद्या के स्वामी होने से एकविद्य (महाविद्यः) अनेक महान् विद्याओं के अधिपति होने से महाविद्य (मुनिः) आत्मसाधना सम्पन्न होने से मुनि (परिवृढः) तपस्वियों के स्वामी होने से परिवृढ (पतिः) जगत् के रक्षक होने से पति (धीशः) बुद्धि के स्वामी होने से धीश (विद्यानिधिः) विद्याओं के सागर होने से विद्यानिधि (साक्षी) लोकत्रय के प्रत्यक्ष ज्ञाता होने से साक्षी (विनेता) मुक्तिमार्ग के प्रकाशक होने से विनेता तथा (विहतान्तकः) काल के नाशक होने से विहतान्तक {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप एकाकी केवलज्ञानविद्या के स्वामी होने से एकविद्य, अनेक महान विद्याओं के अधिपति होने से महाविद्य, आत्मसाधनासम्पन्न होने से मुनि, तपस्वियों के स्वामी होने से परिवृढ, जगत के रक्षक होने से पति, बुद्धि के स्वामी होने से धीश, विद्याओं के सागर होने से विद्यानिधि, लोकत्रय के प्रत्यक्ष ज्ञाता होने से साक्षी, मुक्तिमार्ग के प्रकाशक होने से विनेता तथा काल के नाशक होने से विहतान्तक कहे जाते हैं।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

पिता पितामहः पाता, पवित्रः पावनो गतिः।
त्राता भिषग्वरो वर्यो, वरदः परमः पुमान्।।७७।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (पिता) नरकादिगतियों से बचाने के कारण पिता (पितामहः) गुरुओं के भी गुरु होने से पितामह (पाता) सर्वरक्षक होने से पाता (पवित्रः) अतिनिर्मल होने से पवित्र (पावनः) पवित्रकर्ता होने से पावन (गतिः) हितमार्गदर्शक होने से गति (त्राता) रक्षक होने से त्राता (भिषग्वरः) नामस्मृतिमात्र से जन्मादि रोगहर्ता होने से भिषग्वर (वर्यः) सर्वश्रेष्ठ होने से वर्य (वरदः) इच्छितफलदाता होने से वरद (परमः) सर्वोत्कृष्ट ज्ञानादि लक्ष्मीवान् होने से परम तथा (पुमान्) स्व वा पर को पवित्रकर्ता होने से पुमान् {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप नरकादि गतियों से बचाने के कारण पिता, गुरुओं के भी गुरु होने से पितामह, सर्वरक्षक होने से पाता, अतिनिर्मल होने से पवित्र, पवित्रकर्ता होने से पावन, हितमार्गदर्शक होने से गति, रक्षक होने से त्राता, नामस्मृतिमात्र से जन्मादि रोगहर्ता होने से भिषग्वर, सर्वश्रेष्ठ होने से वर्य, इच्छितफलदाता होने से वरद, सर्वोत्कृष्ट ज्ञानादि लक्ष्मीवान् होने से परम तथा स्व तथा पर को पवित्रकर्ता होने से पुमान् कहे जाते हैं।

कविः पुराणपुरुषो वर्षीया- वृषभः पुरुः।
प्रतिष्ठा- प्रसवो हेतु र्भुवनैक- पितामहः।।७८।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (कविः) द्वादशाङ्गरूप आगम का वर्णन करने से कवि (पुराणपुरुषः) आदि मध्य और अनत रहित होने से पुराणपुरुष (वर्षीयान्) गुणों की अपेक्षा सर्व महान् होने से वर्षीयान् (वृषभः) सर्वश्रेष्ठः होने से वृषभ (पुरुः) सर्वप्रथम तीर्थङ्कर होने से पुरु (प्रतिष्ठाप्रसवः) जगन्मान्यता की प्राप्ति के कारण होने से प्रतिष्ठाप्रसव (हेतुः) मोक्ष के कारण होने से हेतु तथा (भुवनैकपितामहः) लोकत्रय के अनन्य गुरु होने से भुवनैकपितामह {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप द्वादशाङ्गरूप आगम का वर्णन करने से कवि, आदि मध्य और अन्तरहित होने से पुराणपुरुष, गुणों की अपेक्षा सर्व महान् होने से वर्षीयान, सर्वश्रेष्ठ होने से वृषभ, सर्वप्रथम तीर्थंकर होने से पुरु, जगन्मान्यता की प्राप्ति के कारण होने से प्रतिष्ठाप्रसव, मोक्ष के कारण होने से हेतु तथा लोकत्रय के अनन्य गुरु होने से भुवनैकपितामह कहे जाते हैं।

।। इति महाशोकध्वजादिशतम्।।४।।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

श्रीवृक्षलक्षणः श्लक्ष्णो, लक्षण्यः शुभलक्षणः।
निरक्षः पुण्डरी- काक्षः पुष्कलः पुष्करेक्षण।।७९।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (श्रीवृक्षलक्षणः) श्रीवृक्ष के चिह्न से अलङ्कृत होने से श्रीवृक्षलक्षण (श्लक्ष्णः) अतिसूक्ष्म होने से श्लक्ष्ण (लक्षण्यः) एक हजार आठ लक्षणों के धारक होने से लक्षण्य (शुभलक्षणः) शुभलक्षणों के धारक होने से शुभलक्षण (निरक्षः) इन्द्रियरहित होने से निरक्ष (पुण्डरीकाक्षः) कमल समान मनोज्ञ नेत्रवान् होने से पुण्डरीकाक्ष (पुष्कलः) आत्मगुणों से पुष्ट होने से पुष्कल तथा (पुष्करेक्षणः) कमल समान रमणीय नेत्रवान् होने से पुष्करेक्षण {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप श्रीवृक्ष के चिह्न के अलङ्कृत होने से श्रीवृक्षलक्षण, अतिसूक्ष्म होने से श्लक्ष्ण, एक हजार आठ लक्षणों के धारक होने से लक्षण्य, शुभलक्षणों के धारक होने से शुभलक्षण, इन्द्रियरहित होने से निरक्ष, कमलसमान मनोज्ञ नेत्रवान् होने से पुण्डरीकाक्ष, आत्मगुणों से पुष्ट होने से पुष्कल तथा कमल समान रमणीय नेत्रवान् होने से पुष्करेक्षण कहे जाते हैं।

सिद्धिदः सिद्ध- सङ्कल्पः, सिद्धात्मा सिद्ध- साधनः।
बुद्धबोध्यो महाबोधि, र्वर्धमानो महर्धिकः।।८०।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (सिद्धिदः) मोक्षरूप सिद्धि के दाता होने से सिद्धिद (सिद्धसङ्कल्पः) सर्वमनोरथों की सिद्धि सम्पन्न होने से सिद्धसङ्कल्प (सिद्धात्मा) भविष्य में सिद्धपर्याय प्राप्ति की योग्यतायुक्त होने से सिद्धात्मा (सिद्ध साधनः) मुक्ति के रत्नत्रयरूप साधन प्राप्त होने से सिद्धसाधन (बुद्धबोध्यः) सम्पूर्ण ज्ञेयपदार्थों के ज्ञाता होने से बुद्धबोध्य (महाबोधिः) बोधि {रत्नत्रय रूप विभूति} के अत्यन्त प्रशंसनीय होने से महाबोधि (वर्धमानः) गुणगरिष्ठ होने से वर्धमान तथा (महर्धिकः) विशाल ऋद्धियों से सुसम्पन्न होने से महर्धिक {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप मोक्षरूप सिद्धि के दाता होने से सिद्धिद, सर्वमनोरथों की सिद्धिसम्पन्न होने से सिद्धसङ्कल्प, भविष्य में सिद्धपर्यायप्राप्ति की योग्यतायुक्त होने से सिद्धात्मा, मुक्ति के रत्नत्रयरूप साधन प्राप्त होने से सिद्धसाधन, सम्पूर्णज्ञेय पदार्थों के ज्ञाता होने से बुद्धबोध्य, बोधि (रत्नत्रयरूप विभूति) के अत्यन्त प्रशंसनीय होने से महाबोधि, गुणगरिष्ठ होने से वर्धमान तथा विशाल ऋद्धियों से सुसम्पन्न होनेसे महर्धिक कहे जाते हैं।

वेदाङ्गो वेदविद् वेद्यो, जातरूपो विदांवरः।
वेदवेद्यः स्वसंवेद्यो, विवेदो वदतांवरः।।८१।।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (वेदाङ्गः) प्रथमानुयोगादि वेदचतुष्टय के कारण होने से वेदाङ्ग (वेदवित्) वेदों अथवा अनुयोगों के ज्ञाता होने से वेदवित् (वेद्यः) मुनीन्द्रों द्वारा जानने योग्य होने से वेद्य (जातरूपः) दिगम्बर मुद्रा के धारक होने से जातरूप (विदांवरः) विद्वानों में श्रेष्ठ होने से विदांवर (वेदवेद्यः) केवलज्ञान द्वारा ज्ञातव्य होने से वेदवेद्य (स्वयंवेद्यः) आत्मानुभवगम्य होने से स्वयंवेद्य (विवेदः) वेदत्रयरहित होने से विवेद तथा (वदतांवरः) वक्ताओं में श्रेष्ठ होने से वदतांवर {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप प्रथमानुयोगादि वेदचतुष्टय के कारण होने से वेदाङ्ग, वेदों (अनुयोगों) के ज्ञाता होने से वेदवित्, मुनीन्द्रों द्वारा जानने योग्य होने से वेद्य, दिगम्बर मुद्रा के धारक होने से जातरूप, विद्वानों में श्रेष्ठ होने से विदांवर, केवलज्ञान द्वारा ज्ञातव्य होने से वेदवेद्य, आत्मानुभवगम्य होने से स्वयंवेद्य, वेदत्रयरहित होने से विवेद तथा वक्ताओं में श्रेष्ठ होने से वदतांवर कहे जाते हैं।

अनादि- निधनोऽव्यक्तो, व्यक्त- वाग्व्यक्त- शासनः।
युगादिकृद्- युगाधारो, युगादि र्जगदा- दिजः।।८२।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् आप (अनादिनिधनः) आदि अन्तरहित होने से अनादि-निधन (अव्यक्तः) इन्द्रियगोचर होने से अव्यक्त (व्यक्तवाक्) वाणी के अतिशय स्पष्ट होने से व्यक्तवाक् (व्यक्तशासनः) शासन के अतिस्पष्ट होने से व्यक्तशासन (युगादिकृत्) युग अर्थात् कर्मभूमि के आदि व्यवस्थापक होने से युगादिकृत् (युगाधारः) युग {कर्मभूमि} के प्राणियों के आश्रयरूप होने से युगाधार (युगादिः) कर्मभूमिरूप युग के आरम्भकर्ता होने से युगादि तथा (जगदादिजः) कर्मभूमिरूप जगत् के प्रारम्भ में जन्मधारण करने से जगदादिज {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप आदि और अन्तरहित होने से अनादिनिधन, इन्द्रियागोचर होने से अव्यक्त, वाणी के अतिशय स्पष्ट होने से व्यक्तवाक्, शासन के अतिस्पष्ट होने से व्यक्तशासन, युग अर्थात् कर्मभूमि के आदि व्यवस्थापक होने से युगादिकृत्, युग (कर्मभूमि) के प्राणियों के आश्रयरूप होने से युगाधार, कर्मभूमिरूप युग के आरम्भकर्ता होने से युगादि तथा कर्मभूमिरूप जगत के प्रारम्भ में जन्म धारण करने से जगदादिज कहे जाते हैं।

अतीन्द्रोऽतीन्द्रियो धीन्द्रो, महेन्द्रोऽतीन्द्रियार्थ- दृक्।
अनिन्द्रियोऽहमिन्द्रार्च्यो, महेन्द्र- महितो महान्।।८३।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (अतीन्द्रः) ऐश्वर्य से इन्द्रों के अतिक्रान्तकर्ता होने से अतीन्द्र (अतीन्द्रियः) इन्द्रियों के गोचर न होने से अतीन्द्रिय (धीन्द्रः) बुद्धि के स्वामी होने से धीन्द्र (महेन्द्रः) इन्द्रों से भी अधिक ऐश्वर्यशाली होने से महेन्द्र, (अतीन्द्रियार्थदृक्)

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

इन्द्रियागोचर पदार्थ के दृष्टा होने से अतीन्द्रियार्थदृक् (अनिन्द्रियः) इन्द्रियरहित होने से अनिन्द्रिय (अहमिन्द्रार्च्यः) अहमिन्द्र देवों के द्वारा पूजित होने से अहमिन्द्राचर्य (महेन्द्रमहितः) महान इन्द्रों द्वारा पूजित होने से महेन्द्रमहित तथा (महान्) प्रमुख गुणकारी होने से महान् {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप ऐश्वर्य से इन्द्रों के अतिक्रान्तकर्ता होने से अतीन्द्र, इन्द्रियों के गोचर न होने से अतीन्द्रिय, बुद्धि के स्वामी होने से धीन्द्र, इन्द्रों से भी अधिक ऐश्वर्यशाली होने से महेन्द्र, इन्द्रियागोचर पदार्थ के दृष्टा होने से अतीन्द्रियार्थदृक्, इन्द्रियरहित होने से अनिन्द्रिय, अहमिन्द्र देवों द्वारा पूजित होने से अहमिन्द्रार्च्य, महान् इन्द्रों द्वारा पूजित होने से महेन्द्रमहित तथा प्रमुख गुणशाली होने से महान् कहे जाते हैं।

उद्भवः कारणं कर्ता, पारगो भवतारकः।
अगाह्यो गहनं गुह्यं, परार्घ्यः परमेश्वरः।।८४।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन ! आप (उद्भवः) जन्ममरण रूप संसार से ऊँचे उठे होने से उद्भव, (कारणम्) मोक्ष के कारण होने से कारण (कर्त्ता) शुद्धभावों के कर्त्ता होने से कर्त्ता (पारगः) संसारसिन्धु के पार को प्राप्त होने से पारग (भवतारकः) संसार से तारक होने से भवतारक (अगाह्यः) अपार गम्भीरतायुक्त होने से अगाह्य (गहनम्) स्वरूप के दुर्ज्ञेय होने से गहन (गुह्यं) इन्द्रियागोचर होने से गुह्य (परार्घ्य·) सर्वोत्कृष्ट होने से परार्घ्य तथा (परमेश्वरः) मोक्षलक्ष्मी के स्वामी होने से परमेश्वर {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप जन्ममरणरूप संसार से ऊँचे उठे होने से उद्भव, मोक्ष के कारण होने से कारण, शुद्ध भावों के कर्त्ता होने से कर्त्ता, संसारसिन्धु के पार को प्राप्त होने से पारग, संसार से तारक होने से भवतारक, अपार गम्भीरतायुक्त होने से अगाह्य, स्वरूप के दुर्ज्ञेय होने से गहन, इन्द्रियागोचर होने से गुह्य, सर्वोत्कृष्ट होने से परार्घ्य तथा मोक्षलक्ष्मी के स्वामी होने से परमेश्वर कहे जाते हैं।

अनन्तर्द्धि- रमेयर्द्धि-, रचिन्त्यर्द्धिः समग्रधीः।
प्राग्र्यः प्राग्रहरोऽभ्यग्रः, प्रत्यग्रोऽग्र्योऽग्रिमोऽग्रजः।।८५।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (अनन्तर्द्धिः) अनन्तऋद्धियों के धारक होने से अनन्तर्द्धि (अमेयर्द्धिः) ऋद्धियों के अपरिमित होने से अमेयर्द्धि (अचिन्त्यर्द्धिः) ऋद्धियों के अचिन्त्य होने से अचिन्त्यर्द्धि (समग्रधीः) ज्ञान की चरमसीमा सम्पन्न होने से समग्रधी (प्राग्र्यः) सर्वप्रधान होने से प्राग्र्य (प्राग्रहरः) लोकोत्तम वस्तुओं में सर्वप्रथम होने से प्राग्रहर (अभ्यग्रः) लोकाग्र में विराजमान होने से अभ्यग्र (प्रत्यग्रः) सम्पूर्ण प्राणियों में विलक्षण होने

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

से प्रत्यग्र (अग्रयः) सबके नायक होने से अग्रय (अग्रिमः) सबके अग्रेसर होने से अग्रिम तथा (अग्रजः) सर्वज्येष्ठ होने से अग्रज {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप अनन्त ऋद्धियों के धारक होने से अनन्तर्द्धि, ऋद्धियों के अपरिमित होने से अमेयर्द्धि, ऋद्धियों के अचिन्त्य होने से अचिन्त्यर्द्धि, ज्ञान की चरसीमासम्पन्न होने से समग्रधी, सर्वप्रधान होने से प्राग्य, लोकोत्तम वस्तुओं में सर्वप्रथम होने से प्राग्रहर, लोकाग्र में विराजमान होने से अभ्यग्र, सबके नायक होने से अग्य, सबके अग्रेसर होने से अग्रिम तथा सर्वज्येष्ठ होने से अग्रज कहे जाते हैं।

महातपा महातेजा, महोदर्को महोदयः।
महायशा महाधामा, महासत्वो महाधृतिः।।८६।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (महातपाः) घोर तपश्चरण करने से महातप (महोतेजाः) अतिशय तेजस्वी होने से महातेज (महोदर्कः) तपश्चरण के महान् फलवान् होने से महोदर्क (महोदयः) ऐश्वर्य के महान् होने से महोदय (महायशाः) विशाल यशस्वी होने से महायश (महाधामा) तेज के महान् होने से महाधाम (महासत्वः) अति बलवान् होने से महासत्व तथा (महाधृतिः) महान् धैर्यधारक होने से महाधृति {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप घोर तपश्चरण करने से महातप, अतिशय तेजस्वी होने से महातेज, तपश्चरण के महान् फलवान् होने से महोदर्क, ऐश्वर्य के महान होने से महोदय, विशाल यशस्वी होने से महायश, तेज के महान् होने से महाधाम, अति बलवान् होने से महासत्व तथा महान् धैर्यधारक होने से महाधृति कहे जाते हैं।

महाधैर्यो महावीर्यो, महा- सम्पन् महाबलः।
महा- शक्ति र्महाज्योति, र्महा- भूति- र्महा- द्युतिः।।८७।।

अन्वयार्थ :- हे भवगन् ! आप (महाधैर्यः) अधीर नहीं होने से महाधैर्य (महावीर्यः) अनन्तवीर्य के धारक होने से महावीर्य (महासम्पत्) समवसरणरूप विभूति के धारक होने से महासम्पत् (महाबलः) अतिशय बलवान् होने से महाबल (महाशक्तिः) अनन्तशक्तिसम्पन्न होने से महाशक्ति (महाज्योतिः) अतिशय कान्तिसम्पन्न होने से महाज्योति (महाभूतिः) पञ्चकल्याणकरूप महा विभूतिसम्पन्न होने से महाभूति तथा (महाद्युतिः) महान् दीप्तिमान् होने से महाद्युति {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप अधीर नहीं होने से महाधैर्य, अनन्तवीर्य के धारक होने से महावीर्य, समवसरणरूप विभूति के धारक होने से महासम्पत्, अतिशय बलवान् होने से महाबल, अनन्तशक्तिसम्पन्न होने से महाशक्ति, अतिशय कान्तिसम्पन्न होने से महाज्योति,

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

पञ्चकल्याणकरूप महाविभूति सम्पन्न होने से महाभूति तथा महान दीप्तिमान् होने से महाद्युति कहे जाते हैं।

महामति र्महानीति, र्महाक्षान्ति र्महादयः।
महाप्राज्ञो महाभागो, महानन्दो महाकविः।।८८।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (महामतिः) अतिशय बुद्धिमान होने से महामति (महानीतिः) अतिशय नीतिमान् होने से महानीति (महाक्षान्तिः) श्रेष्ठ क्षमाधारक होने से महाक्षान्ति (महादयः) अतिशय दयालु होने से महादय (महाप्राज्ञः) अतिप्रवीण होने से महाप्राज्ञ (महाभागः) अतिशय भाग्यशाली होने से महाभाग (महानन्दः) अत्यन्त आनन्दस्वरूप होने से महानन्द तथा (महाकविः) आद्य ग्रन्थकर्ता होने से महाकवि {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप अतिशय बुद्धिमान् होने से महामति, अतिशय नीतिमान् होने से महानीति, क्षेष्ठ क्षमाधारक होने से महाक्षान्ति, अतिशय दयालु होने से महादय, अतिप्रवीण होने से महाप्राज्ञ, अतिशय भाग्यशाली होने से महाभाग, अत्यन्त आनन्दस्वरूप होने से महानन्द तथा आद्य ग्रन्थकर्ता होने से महाकवि कहे जाते हैं।

महामहा महाकीर्ति, र्महाकान्ति र्महावपुः।
महादानो महाज्ञानो, महायोगो महागुणः।।८९।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (महामहाः) अति तेजस्वी होने से महामह (महाकीर्तिः) अत्यन्तयशस्वी होने से महाकीर्ति (महाकान्तिः) अतिशय कान्तियुक्त होने से महाकान्ति (महावपुः) उत्तुङ्गशरीरधारी होने से महावपुः (महादानः) दिव्यध्वनि के उपदेश द्वारा महान् दान देने से महादान (महाज्ञानः) केवलज्ञान धारणकर्ता होने से महाज्ञान (महायोगः) श्रेष्ठ शुक्लध्यानवान होने से महायोग तथा (महागुणः) अनन्त सुखादि गुणों के अधिपति होने से महागुण {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप अतितेजस्वी होने से महामह, अत्यन्त यशस्वी होने से महाकीर्ति, अतिशय कान्तियुक्त होने से महाकान्ति, उत्तुङ्गशरीरधारी होने से महावपु, दिव्यध्वनि के उपदेश द्वारा महान् दान देने से महादान, केवलज्ञान धारणकर्ता होने से महाज्ञान, श्रेष्ठ शुक्ल ध्यानवान् होने से महायोग तथा अनत्नसुखादि गुणों के अधिपति होने से महागुण कहे जाते हैं।

महा- मह- पतिः प्राप्त-, महा- कल्याण- पञ्चकः।
महाप्रभुः र्महाप्राप्ति, हार्या- धीशो महेश्वरः।।९०।।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (महामहपतिः) पञ्चकल्याणस्वरूप महापूजा के अधिकारी होने से महामहपति (प्राप्तमहाकल्याणपञ्चकः) गर्भकल्याणकादि पञ्चकल्याणकों को प्राप्त होने से प्राप्तमहाकल्याणपञ्चकः (महाप्रभुः) अतिशय सामर्थ्यवान् होने से महाप्रभु (महाप्रातिहार्याधीशः) अष्ट महान् प्रातिहार्यों के स्वामी होने से महाप्रातिहार्याधीश तथा (महेश्वरः) शत इन्द्रों के अधीश्वर होने से महेश्वर {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप पञ्चकल्याणकरूप महापूजा के अधिकारी होने से महामहपति, गर्भकल्याणकादि पञ्च कल्याण की प्राप्ति से प्राप्तमहाकल्णापञ्चक, अतिशय सामर्थ्यवान् होने से महाप्रभु, अष्ट महान् प्रातिहार्यों के स्वामी होने से महाप्रातिहार्याधीश तथा शतइन्द्रों के अधीश्वर होने से महेश्वर कहे जाते हैं।

।। इति श्रीवृक्षादिशतम् ।।५।।

* मै मानता हूँ कि व्यथा का दुःख जीवन की महत्वपूर्ण घटना है क्यों कि वह मन और मस्तिष्क में जमे मेल को साफ करके उन्हें सुन्दर और सुकोमल बना देता है। वास्तव में बहुत कठोर हृदय में व्यथा का जन्म होता है और एकान्त में बहुत तंग करता है क्योंकि व्यथा का दुःख आध्यात्मिक प्रवृत्ति का पोषक है वैसे ही एकान्त व्यथा ही सहायता करता है।

* हम एक अपराध का बदला लेने के लिये दूसरा बड़ा अपराध करते हैं और चिल्लाते है कि यह इन्साफ है जो अत्याचारों में रोशनी ढुँढ़ती है। क्योंकि पाक रूहें इस दुनिया से कूच करने से पहले सबके गुनाह माफ कर दिया करती हैं।

* जिस प्रकार पानी पत्थरों के बीच से मार्ग बनाता हुआ अपने लक्ष्य की ओर बढ़ जाता है, उसी प्रकार ज्ञानी (धर्मात्मा) भी अज्ञानीयों के बीच में से मार्ग बनाता हुआ सावधानी से अपने लक्ष्य की ओर बढ़ जाता है। ज्ञानी कहीं न अटकता है, न किसी को भटकाता है झूठे भ्रम में कभी।

* हाथी, स्त्री, राजा और सन्तों को दोड़ना नहीं चाहिए, क्योंकि सागर की मर्यादा होती वैसे ही उपरोक्त चारों की पहचान महानता से गम्भीरता से होती है, सागर अपनी मर्यादा का उलंघन नहीं करता है।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

महा-मुनि र्महा-मौनी, महा-ध्यानी महा-दमः।
महाक्षमो महाशीलो, महायज्ञो महामखः।।९१।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (महामुनिः) मुनियों के प्रमुख होने से महामुनि (महामौनी) दीक्षाधारण के बाद श्रेष्ठवचन गुप्तिरूप मौनधारण करने से महामौनी (महाध्यानी) धर्म्यध्यान और शुक्लध्यान जिनको है वे महाध्यानी (महादमः) इन्द्रियविजेता होने से महादम (महाक्षमः) अतिसमर्थ होने से महाक्षम (महाशीलः) उत्तम शीलसंयुक्त होने से महाशील (महायज्ञः) तपश्चरणरूप अग्नि में कर्मों के होमकर्ता होने से महायज्ञ तथा (महामखः) महान् पूज्य होने से महामख {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप मुनियों के प्रमुख होने से महामुनि, दीक्षाधारण के बाद श्रेष्ठवचन गुप्तिरूप मौनधारण करने से महामौनी, धर्म्यध्यान और शुक्लध्यान जिनको है वे महाध्यानी, इन्द्रियविजेता होने से महादम, अतिसमर्थ होने से महाक्षम, उत्तमशीलसंयुक्त होने से महाशील, तपश्चरणरूप अग्नि में कर्मों के होमकर्ता होने से महायज्ञ तथा महान् पूज्य होने से महामुख कहे जाते हैं।

महा- व्रत- पति- र्मह्यो, महाकान्ति- धरोऽधिपः।
महामैत्री- मयोऽमेयो, महोपायो महोदयः।।९२।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (महाव्रतपतिः) पंचमहाव्रतों की पूर्णता को प्राप्त होने से महाव्रतपति (महयः) विश्ववन्द्य होने से मह्य (महाकान्तिधरः) अपूर्व कान्तिधारक होने से महाकान्तिधर (अधिपः) त्रिलोक के विशेष रक्षक होने से अधिप (महामैत्रीमयः) सभी प्राणियों के प्रति उच्च मित्रता का भाव धारण करने से महामैत्रीमय (अमेयः) वर्णनातीत होने से अमेय (महोपायः) मोक्ष के उपाय के प्रथम उपदेशक होने से महोपाय तथा (महोमयः) केवलज्ञानरूप तेजोयुक्त होने से महोमय {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप पञ्च महाव्रतों की पूर्णता को प्राप्त होने से महाव्रतपति, विश्ववन्द्य होने से मह्य, अपूर्व कान्तिधारक होने से महाकान्तिधर, त्रिलोक के विशेषरक्षक होने से अधिप, सभी प्राणियों के प्रति उच्च मित्रता का भाव धारण करने से महामैत्रीमय, वर्णनातीत होने से अमेय, मोक्ष के उपाय के प्रथम उपदेशक होने से महोपाय तथा केवलज्ञानरूप तेजोयुक्त होने से महोमय कहे जाते हैं।

महा- कारुणिको मन्ता, महामन्त्रो महायतिः।
महानादो महाघोषो, महेज्यो महसांपतिः।।९३।।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (महाकारुणिकः) सम्पूर्ण प्राणियों पर करुणाभाव धारण करने से महाकारुणिक (मन्ता) सर्वतत्वों के ज्ञाता होने से मन्ता (महामन्त्रः) श्रेष्ठमन्त्रों के स्वामी होने से महामन्त्र (महायतिः) साधुओं में प्रमुख होने से महायति (महानादः) गम्भीरदिव्यध्वनियुक्त होने से महानाद (महाघोषः) ध्वनि के अपूर्व और आश्चर्यजनक होने से महाघोष (महेज्यः) इन्द्रों और महापुरुषों के पूज्य होने से महेज्य तथा (महसाम्पतिः) अपूर्व तेजोयुक्त होने से महसाम्पति {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप सम्पूर्ण प्राणियों पर करुणाभाव धारण करने से महाकारुणिक, सर्वतत्वों के ज्ञाता होने से मन्ता, श्रेष्ठ मन्त्रों के स्वामी होने से महामन्त्र, साधुओं में प्रमुख होने से महायति, गम्भीर दिव्यध्वनियुक्त होने से महानाद, ध्वनि के अपूर्व और आश्चर्यजनक होने से महाघोष, इन्द्रों और महापुरुषों के पूज्य होने से महेज्य तथा अपूर्वतेजोयुक्त होने से महसाम्पति कहे जाते हैं।

महाध्वरधरो धुर्य्यो, महौदार्यो महिष्ठवाक्।
महात्मा महसांधाम्, महर्षि र्महितोदयः।।६४।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (महाध्वरधरः) केवलज्ञानरूप अध्वर {यज्ञ} के धारक होने से महाध्वरधर (धुर्यः) सर्वश्रेष्ठ होने से धुर्य (महौदार्यः) अत्यन्त उदार होने से महौदार्य (महिष्ठवाक्) वाणी के परमपूज्य होने से महिष्ठवाक् (महात्मा) अत्यन्त पवित्र आत्मा होने से महात्मा (महासांधाम) तेज के प्रमुख आधार होने से महसांधाम (महर्षिः) ऋषियों के प्रधान होने से महर्षि तथा (महितोदयः) जगत्पूज्य जन्मधारक होने से महितोदय {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप केवलज्ञानरूप अध्वर (यज्ञ) के धारक होने से महाध्वरधर, सर्वश्रेष्ठ होने से धुर्य, अत्यन्त उदार होने से महौदार्य, वाणी के परमपूज्य होने से महिष्ठावाक्, अत्यन्त पवित्र आत्मा होने से महात्मा, तेज के प्रमुख आधर होने से महासांधाम, ऋषियों के प्रधान होने से महर्षि तथा जगत्पूज्य जन्मधारक होने से महितोदय कहे जाते हैं।

महाक्लेशांकुशः शूरो, महा- भूत- पति- र्गुरुः।
महा- परा- क्रमोऽनन्तो, महा- क्रोध-रिपु- र्वशी।।६५।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (महाक्लेशाङ्कुशः) महान् संकटों को दूर करने के लिये अङ्कुशतुल्य होने से महाक्लेशाङ्कुश (शूरः) क्रोधादिशत्रुओं के विजेता होने से शूर (महाभूतपतिः) गणधर चक्रवर्ती आदि महापुरुषों के स्वामी होने से महाभूतपति (गुरुः) आद्यधर्मोपदेशक होने से गुरु (महापराक्रमः) पराक्रम से कर्मशत्रुओं के संहारक होने से महापराक्रम (अनन्तः) विनाशरहित होने से अनन्त (महाक्रोधरिपुः) क्रोध के महान् शत्रु होने से महाक्रोधरिपु तथा (वशी) इन्द्रियविजेता होने से वशी {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

अर्थ :- हे भगवन् ! आप महान् संकटों को दूर करने के लिये अङ्कुशतुल्य होने से महाक्लेशाङ्कुश, क्रोधादि शत्रुओं के विजेता होने से शूर, गणधर चक्रवर्ती आदि महापुरुषों के स्वामी होने से महाभूतपति, आद्य धर्मोपदेशक होने से गुरु, आने पराक्रम से कर्मशत्रुओं के नाशक होने से महापराक्रम, विनाशरहित होने से अनन्त, क्रोध के महान् शत्रु होने से महाक्रोध रिपु तथा इन्द्रियविजेता होने से वशी कहे जाते हैं।

महा- भवाब्धि- संतारी, महा- मोहोऽद्रि- सूदनः।
महा- गुणाकारः क्षान्तो, महा- योगीश्वरः शमी।।९६।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (महाभवाब्धिसन्तारी) संसाररूप महान् सिन्धु के पारक होने से महाभवाब्धिसंतारी (महामोहाद्रिसूदनः) मोहरूप महान् पर्वत के भेदनकर्ता होने से महामोद्रिसूदनः (महागुणाकारः) अनेक प्रशस्त गुणों के खान होने से महागुणाकर (क्षान्तः) कषायों के विजेता होने से क्षान्त (महायोगीश्वरः) महान् योगियों के स्वामी होने से महायोगीश्वर तथा (शमी) अतिशयशान्तभावयुक्त होने से शमी {कथ्यते = **कहे** जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप संसाररूप महान् **सिन्धु** के पारक होने से महाभवाब्धिसन्तारी, मोहरूप महान् पर्वत के भेदनकर्ता होने से महामोहाद्रिसूदन अनेक प्रशस्त गुणों की खानि होने से महागुणाकर, कषायों के विजेता होने से क्षान्त, महान् योगियों के स्वामी होने से महायोगीश्वर तथा अतिशय शान्तभावयुक्त होने से शमी कहे जाते हैं।

महाध्यान- पति- ध्यात-, महाधर्मा महाव्रतः।
महा- कर्मारिहाऽऽत्मज्ञो, महादेवो महेशिता।।९७।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (महाध्यानपतिः) शुक्लध्यानरूप महाध्यान के स्वामी होने से महाध्यानपति (ध्यात महाधर्मा) अहिंसारूप महान् धर्म का ध्यान करने से ध्यातमहाधर्मा (महाव्रतः) महाव्रतों के धारक होने से महाव्रत (महाकर्मारिहा) कर्मरूप महान् शत्रुओं के संहारक होने से महाकर्मारिहा (आत्मज्ञः) आत्मस्वरूप के ज्ञात होने से आत्मज्ञ (महादेवः) समस्त देवों के स्वामी होने से महादेव तथा (महेशिता) विलक्षण समार्थ्यधारक होने से महेशितृ {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप शुक्लध्यानरूप महाध्यान के स्वामी होने से महाध्यानपति, अहिंसारूप महान् धर्म का ध्यान करने से ध्यातमहाधर्मा, महाव्रतों के धारक होने से महाव्रत, कर्मरूप महान् शत्रुओं के संहारक होने से महाकर्मारिहा, आत्मस्वरूप के ज्ञाता होने से आत्मज्ञ, समस्त देवों के स्वामी होने से महादेव तथा विलक्षण सामर्थ्यधारक होने से महेशितृ कहे जाते हैं।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

सर्वक्लेशापहः साधुः, सर्व-दोष- हरो हरः।
असंख्येयोऽप्रमेयात्मा, शमात्मा प्रशमाकरः।।९८।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (सर्वक्लेशापहः) सर्व प्रकार के क्लेशों के नाशक होने से सर्व क्लेशापह (साधुः) आत्मकल्याण के साधक होने से साधु (सर्वदोषहरः) समस्त दोषों के नाशक होने से सवदोषहर (हरः) पापक्षय कर्ता होने से हर (असंख्येयः) गणनातीत गुणसंयुक्त होने से असंख्येय (अप्रमेयात्मा) अनन्शक्तिधारी होने से अप्रमेयात्मा (शमात्मा) परमशान्तिस्वरूप होने से शमात्मा तथा (प्रशमाकरः) उत्तम शान्ति के भण्डार होने से प्रशमाकर {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप सर्व प्रकार के क्लेशों के नाशक होने से सर्वक्लेशापह, आत्मकल्याण के साधक होने से साधु, समस्त दोषों के नाशक होने से सर्वदोषहर, पापक्षयकर्ता होने से हर, गणनातीत गुणसंयुक्त होने से असंख्येय, अनन्तशक्तिधारी होने से अप्रमेयात्मा, परमशान्तिस्वरूप होने से शमात्मा तथा उत्तम शान्ति के भण्डार होने से प्रशमाकर कहे जाते हैं।

सर्व-योगीश्वरोऽचिन्त्यः, श्रुतात्मा विष्टर- श्रवाः।
दान्तान्मा दम तीर्थेशो, योगात्मा ज्ञान- सर्वगः।।९९।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (सर्वयोगीश्वरः) समस्त योगियों के ईश्वर होने से सर्वयोगीश्वर (अचिन्त्यः) छद्मस्थों के चिन्तन में न आने से अचिन्त्य (श्रुतात्मा) भावश्रुतज्ञानस्वरूप होने से श्रुतात्मा (विष्टरश्रवाः) तीनों लोकों के समस्त पदार्थों के ज्ञाता होने से विष्टरश्रव, दान्तात्मा इन्द्रियों के दमनकर्ता होने से दान्तात्मा (दमतीर्थेशः) संयमरूप तीर्थ के स्वामी होने से दमतीर्थेश (योगात्मा) योगस्वरूप होने से योगात्मा तथा (ज्ञानसर्वगः) ज्ञान के द्वारा सर्वत्र व्याप्त होने से ज्ञान सर्वग {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप समस्त योगियों के ईश्वर होने से सर्वयोगीश्वर, छद्मस्थों के चिन्तन में न आने से अचिन्त्य, भावश्रुतज्ञानरूप होने से श्रुतात्मा, तीनों लोकों के समस्त पदार्थों के ज्ञाता होने से विष्टरश्रव, इन्द्रियों के दमनकर्ता होने से दान्तात्मा, संयमरूप तीर्थ के स्वामी होने से दमतीर्थेश, योगस्वरूप होने से योगात्मा तथा ज्ञान के द्वारा सर्वत्र व्याप्त होने से ज्ञानसर्वग कहे जाते हैं।

प्रधान- मात्मा प्रकृतिः, परमः परमोदयः।
प्रक्षीणबन्धः कामारिः, क्षेमकृत्- क्षेमशासनः।।१००।।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (प्रधानम्) तीनों लोकों में सर्वोत्तम होने से प्रधान (आत्मा) ज्ञानस्वरूप होने से आत्मा (प्रकृतिः) प्रकृष्ट {श्रेष्ठ} कृतियुक्त होने से प्रकृति (परमः) उत्कृष्ट मा {लक्ष्मी} के धारक होने से परम (परमोदयः) उत्कृष्ट उदय {उन्नति} को प्राप्त होने से परमोदय (प्रक्षीणबन्धः) कर्मबन्धनविमुक्त होने से प्रक्षीणबन्ध (कामारिः) कामशत्रु के नाशक होने से कामारिः (क्षेमकृत्) कल्याणकारी होने से क्षेमकृत् तथा (क्षेमशासनः) कल्याणकारक उपेदशदाता होने से क्षेमशासन {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप तीनों लोकों में सर्वोत्तम होने से प्रधान, ज्ञानस्वरूप होने से आत्मा, प्रकृष्ट (श्रेष्ठ) कृतियुक्त होने से प्रकृति, उत्कृष्ट मा (लक्ष्मी) के धारक होने से परम, उत्कृष्ट उदय (उन्नति) को प्राप्त होने से परमोदय, कर्मबन्धनविमुक्त होने से प्रक्षीणबन्ध, कामशत्रु के नाशक होने से कामारि, कल्याणकारी होने से क्षेमकृत् तथा कल्याणकारक उपदेश दाता होने से क्षेमशासन कहे जाते हैं।

प्रणवः प्रणयः प्राणः, प्राणदः प्रण- तेश्वरः।
प्रमाणं प्रणिधिर्दक्षो, दक्षिणोऽध्व- र्युरध्वरः।।१०१।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (प्रणवः) ओंकारस्वरूप होने से प्रणव (प्रणयः) लोकप्रिय होने से प्रणय (प्राणः) सब जीवों के रक्षक होने से प्राण (प्राणदः) सम्पूर्ण प्राणियों को जीवनदान देने से प्राणद (प्रणतेश्वरः) प्रणत {नम्रीभूत} भव्य जीवों के स्वामी होने से प्रणतेश्वर (प्रमाणम्) ज्ञानस्वरूप होने से प्रमाण (प्रणिधिः) ज्ञानादि अनुपम आत्मीय निधियों के स्वामी होने से प्रणिधि (दक्षः) समर्थ होने से दक्ष (दक्षिणः) सरल होने से दक्षिण (अध्वर्युः) ज्ञानयज्ञ के कर्ता होने से अध्वर्यु तथा (अध्वरः) सन्मार्गप्रदर्शक होने से अध्वर {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप ओंकारस्वरूप होने से प्रणव, लोकप्रिय होने से प्रणय, सब जीवों के रक्षक होने से प्राण, सम्पूर्ण को जीवनदान देने से प्राणद, प्रणत (नम्रीभूत) भव्य जीवों के स्वामी होने से प्रणतेश्वर, ज्ञानस्वरूप होने से प्रमाण, ज्ञानादि अनुपम आत्मीय निधियों के स्वामी होने से प्रणिधि, समर्थ होने से दक्ष, सरल होने से दक्षिण, ज्ञानयज्ञ के कर्ता होने से अध्वर्यु तथा सन्मार्गप्रदर्शक होने से अध्वर कहे जाते हैं।

आनन्दो नन्दनो नन्दो, वन्द्योऽनिन्द्योऽभिनन्दनः।
कामहा कामदः काम्यः, कामधेनु- रिज्जयः।।१०२।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (आनन्दः) अनन्तसुख सम्पन्न होने से आनन्द (नन्दनः) सबको आनन्ददाता होने से नन्दन (नन्दः) सदासमृद्धियुक्त होने से नन्द (वन्द्यः) इन्द्रादिक द्वारा वन्दनीय होने से वन्द्य (अनिन्द्यः) निन्दा के अयोग्य होने से अनिन्द्य

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

(अभिनन्दनः) अतिशय प्रशंसनीय होने से अभिनन्दन (कामहा) काम के नाशक होने से कामह (कामदः) कामनाओं के पूरक होने से कामद (काम्यः) सम्पूर्ण जगत् के द्वारा चाहने योग्य होने से काम्य (कामधेनुः) मनोरथों के पूरक होने से कामधेनु तथा (अजिरञ्जयः) रागादिक शत्रुओं के विजेता होने से अरिञ्जय {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप अनन्तसुख सम्पन्न होने से आनन्द, सबको आनन्ददाता होने से नन्दन, सदा समृद्धियुक्त होने से नन्द, इन्द्रादिक द्वारा वन्दनीय होने से वन्द्य, निन्दा के अयोग्य होने से अनिन्द्य, अतिशय प्रशंसनीय होने से अभिनन्दन, काम के नाशक होने से कामहा, कामनाओं के पूरक होने से कामद, सम्पूर्ण जगत् के द्वारा चाहने योग्य होने से काम्य, मनोरथों के पूरक होने से कामधेनु तथा रागादिक शत्रुओं के विजेता होने से अरिञ्जय कहे जाते हैं।

।। इति महामुन्यादिशतम् ।।६ ।।

* जहाँ हृदय का विश्वास बोलता है, वहाँ सारी भाषाएँ मौन हो जाती हैं, जहाँ हृदय मौन हो जाता है वहाँ भाषाएँ शान्त हो जाती हैं, भाषा मनुष्य को ठगने का प्रयत्न करती है। जहाँ भाषा है वहाँ द्वैत है।

* कल्पना का चीर इतना झीना है कि उसमें से तुम देख सकते हो मगर उसे पार नहीं हो सकते हो, पुरूषार्थ का चीर इतना मोटा (घना) है कि उसमें से देख नहीं सकते पर उसके माध्यम से पार जा सकते हो।

* दूसरों पर वही अधिक भरोसा करता है जिसे अपनी शक्ति पर भरोसा नहीं है।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

असंस्कृतः सुसंस्कारः, प्राकृतो वैकृतान्तकृत्।
अन्तकृत्कान्तगुः कान्तश्, चिन्तामणिरभीष्टदः।।१०३।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (असंस्कृत) मतान्तरकृत संस्कारविहीन होने से असंस्कृत (सुसंस्कारः) प्रशस्त संस्कारों के धारक होने से सुसंस्कार (प्राकृतः) प्रकृतिस्वरूप होने से प्राकृत (वैकृतान्तकृत्) विकारों के नाशक होने से वैकृतान्तकृत् (अन्तकृत्) जन्ममरणरूप संसार के नाशक होने से अन्तकृत् (कान्तगुः) प्रभा या वाणी के मनोरम होने से कान्तगुः (कान्तः) अतिमनोज्ञ होने से कान्त (चिन्तामणिः) चिन्तामणि के समान इच्छितदाता होने से चिन्तामणि तथा (अभीष्टदः) अतिशय इष्ट स्वर्ग व मोक्ष आदि प्रदाता होने से अभीष्टद {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप मतान्तरकृत संस्कारविहीन होने से असंस्कृत, प्रशस्त संस्कारों के धारक होने से सुसंस्कार, प्राकृतिकस्वरूप होने से प्राकृत, विकारों के नाशक होने से वैकृतान्तकृत्, जन्ममरणरूप संसार के नाशक होने से अन्तकृत्, प्रभा या वाणी के मनोरम होने से कान्तगु, अतिमनोज्ञ होने से कान्त, चिन्तामणि के समान इच्छितदाता होने से चिन्तामणि तथा अतिशय इष्ट स्वर्ग और मोक्ष आदि प्रदाता होने से अभीष्टद कहे जाते हैं।

अजितो जित- कामारि-, रमितोऽमित- शासनः।
जितक्रोधो जितामित्रो, जितक्लेशो जितान्तकः।।१०४।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (अजितः) क्रोधादि योद्धाओं से नहीं जीते जाने से अजित (जितकामारिः) कामशत्रु के विजेता होने से जितकामारि (अमितः) चतुष्टयों के अमर्यादित होने से अमित (अमितशासनः) शासन के अपार होने से अमितशासन (जितक्रोधः) क्रोधविजेता होने से जितक्रोध (जितामित्रः) कर्मरूपशत्रुओं के विजय से जितामित्र (जितक्लेशः) क्लेशों के जीतने से जितक्लेश तथा (जितान्तकः) यमराज को जीतने से जितान्तक {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप क्रोधादि योद्धाओं से नहीं जीते जाने से अजित, कामशत्रु के विजेता होने से जितकामारि, चतुष्टयों के अमर्यादित होने से अमित, शासन के अपार होने से अमितशासन, क्रोधविजेता होने से जितक्रोध, कर्मरूपशत्रुओं के विजय से जितामित्र, क्लेशों के जीतने से जितक्लेश तथा यमराज को जीतने से जितान्तक कहे जाते हैं।

जिनेन्द्रः परमा- नन्दो, मुनीन्द्रो दुन्दुभिस्तनः।
महेन्द्र- वन्द्यो योगीन्द्रो, यतीन्द्रो नाभिनन्दनः।।१०५।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (जिनेन्द्रः) रागादिविकारों के विजेताओं के

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

शिरोमणि होने से जिनेन्द्र (परमानन्दः) श्रेष्ठ आनन्दस्वरूप होने से परमानन्द (मुनीन्द्रः) मुनियों के प्रमुख होने से मुनीन्द्र (दुन्दुभिस्वनः) दुन्दुभिध्वनिरूप प्रातिहार्य विभूषित होने से दुन्दुभिस्वन (महेन्द्रवन्द्यः) महान् इन्द्रों द्वारा वन्दनीय होने से महेन्द्रवन्द्य (योगीन्द्रः) योगियों में प्रधान होने से योगीन्द्र (यतीन्द्रः) यतियों में प्रधान होने से यतीन्द्र तथा (नाभिनन्दनः) महाराज नाभिराज के पुत्र होने से नाभिनन्दन {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप रागादि विकारों के विजेताओं के शिरोमणि होने से जिनेन्द्र श्रेष्ठ आनन्दस्वरूप होने से परमानन्द, मुनियों के प्रमुख होने से मुनीन्द्र, दुन्दुभिध्वनिरूप प्रातिहार्यविभूषित होने से दुन्दुभिस्वन, महान् इन्द्रों द्वारा वन्दनीय होने से महेन्द्रवन्द्य, योगियों में प्रधान होने से योगीन्द्र, यतियों में प्रधान होने से यतीन्द्र तथा महाराज नाभिराज के पुत्र होने से नाभिनन्दन कहे जाते हैं।

नाभेयो नाभिजोऽजातः सुव्रतो मनुरुत्तमः।
अभेद्योऽनत्ययोऽनाश्वा-, नधिकोऽधिगुरुः सुधीः।।१०६।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (नाभेयः) नाभिराजः की सन्तान होने से नाभेय (नाभिजः) नाभिराज से प्रसूत होने से नाभिज (अजातः) शुद्धनय की अपेक्षा जन्मरहित होने से अजात (सुव्रतः) उत्तमव्रतों के धारक होने से सुव्रत (मनुः) मनु कर्मभूमि की व्यवस्था बताने से मनु (उत्तमः) तामसिक भावों से रहित होने से उत्तम (अभेद्यः) अन्य द्वारा भेदन करने योग्य न होने से अभेद्य (अनत्ययः) विनाशरहित होने से अनत्यय (अनाश्वान्) अनशनरूप तपश्चरण धारण करने से अनाश्वान् (अधिकः) सर्वश्रेष्ठ होने से अधिक (अधिगुरुः) आद्य उपदेशक होने से अधिगुरु तथा (सुगीः) अनुपम कल्याणकारी दिव्यध्वनि होने से सुगी {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप नाभिराज की सन्तान होने से नाभेय, नाभिराज से प्रसूत होने से नाभिज, शुद्धनय की अपेक्षा जन्मरहित होने से अजात, उत्तम व्रतों के धारक होने से सुव्रत, मनु (कर्मभूमि) की व्यवस्था बताने से मनु, तामसिक भावों से रहित होने से उत्तम, अन्य द्वारा भेदन करने योग्य न होने से अभेद्य, विनाशरहित होने से अनत्यय, अनशनरूप तपश्चरण धारण करने से अनाश्वान् सर्वश्रेष्ठ होने से अधिक, आद्य उपदेशक होने से अधिगुरु तथा अनुपम कल्याणकारी दिव्यध्वनि होने से सुगी कहे जाते हैं।

सुमेधा विक्रमी स्वामी, दुराधर्षो निरुत्सुकः।
विशिष्टः शिष्टभुक्शिष्टः, प्रत्ययः कामनोऽनघ।।१०७।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (सुमेधाः) श्रेष्ठबुद्धियुक्त होने से सुमेधा (विक्रमी)

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

महान् पराक्रमी होने से विक्रमी (स्वामी) सबके नाथ होने से स्वामी (दुराधर्षः) किसी के द्वारा निवारण नहीं किये जाने से दुराधर्ष (निरुत्सुकः) लालसारहित होने से निरुत्सुक (विशिष्टः) असाधारण गुणयुक्त होने से शिष्ट (प्रत्ययः) ज्ञानात्मक होने से प्रत्यय (कामनः) मनोहर होने से कामन तथा (अनघः) पापरहित होने से अनघ {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप श्रेष्ठ बुद्धियुक्त होने से सुमेधा, महान् पराक्रमी होने से विक्रमी, सबके नाथ होने से स्वामी, किसी के द्वारा निवारण नहीं किये जाने से दुराधर्ष, लालसारहित होने से निरुत्सुक, असाधारण गुणयुक्त होने से विशिष्ट, शिष्टप्राणियों के रक्षक होने से शिष्टभुक्, सदाचार पूर्ण होने से शिष्ट, ज्ञानात्मक होने से प्रत्यय, मनोहर होने से कामन तथा पापरहित होने से अनघ कहे जाते हैं।

क्षेमी क्षेमङ्करोऽक्षय्यः, क्षेम- धर्मपतिः क्षमी।
अग्राह्यो ज्ञान- निग्राह्यो, ध्यानगम्यो निरुत्तरः।।१०८।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (क्षेमी) कल्याणयुक्त होने से क्षेमी (क्षेमङ्करः) क्षेम {कल्याण} जनक होने से क्षेमङ्कर (अक्षय्यः) क्षयरहित होने से अक्षय्य (क्षेमधर्मपतिः) कल्याणकारक धर्म के प्रवर्तक होने से क्षेमधर्मपति (क्षमी) क्षमावान होने से क्षमी (अग्राह्यः) अल्पज्ञों के ज्ञान के अगोचर होने से अग्राह्य (ज्ञाननिग्राह्यः) सम्यग्ज्ञान के द्वारा ग्राह्य होने से ज्ञाननिग्राह्य (ध्यानगम्यः) निर्विकल्पसमाधि के द्वारा ग्रहण करने योग्य होने से ध्यानगम्य तथा (निरुत्तरः) सर्वोत्तम होने से निरुत्तर {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप कल्याणयुक्त होने से क्षेमी, क्षेम (कल्याण) जनक होने से क्षेमङ्कर क्षयरहित होने से अक्षय्य, कल्याणकारक धर्म के प्रवर्तक होने से क्षेमधर्मपति, क्षमावान् होने से क्षमी, अल्पज्ञों के ज्ञान के अगोचर होने से अग्राह्य, सम्यग्ज्ञान के द्वारा ग्राह्य होने से ज्ञाननिग्राह्य, निर्विकल्पसमाधि के द्वारा ग्रहण करने योग्य होने से ध्यानगम्य तथा सर्वोत्तम होने से निरुत्तर कहे जाते हैं।

सुकृती धातु- रिज्यार्हः, सुनयश्चतु- राननः।
श्रीनिवासश्चतु- र्वक्त्रश्, चतुरास्यश्चतु- र्मुखः।।१०९।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (सुकृती) पुण्यवान् होने से सुकृती (धातुः) शब्दों के निर्माता होने से धातु (इज्यार्हः) पूजायोग्य होने से इज्यार्हः (सुनयः) नयों के ज्ञाता होने से सुनय (चतुराननः) एकमुख होने से चारों ओर चार मुखों के दिखने से चतुरानन (श्रीनिवासः) श्री {लक्ष्मी} के निवास स्थान होने से श्रीनिवास तथा (चतुर्वक्त्रः, चतुरास्यः, चतुर्मुखः) चारों ओर चार मुखों के दिखने से चतुर्वक्त्र, चतुरास्य और चतुर्मुख {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

अर्थ :- हे भगवन् ! आप पुण्यवान् होने से सुकृती, शब्दों के निर्माता होने से धातु, पूजायोग्य होने से इज्यार्ह, नयों के ज्ञाता होने से सुनय, एकमुख होने पर भी चारों ओर चार मुखों के दिखने से चतुरानन, श्री (लक्ष्मी) के निवास स्थान होने से श्रीनिवास तथा चारों ओर चार मुखों के दिखने से चतुर्वक्त्र, चतुरास्य और चतुर्मुख कहे जाते हैं।

सत्यात्मा सत्यविज्ञानः, सत्यवाक् सत्यशासनः।
सत्याशीः सत्यसन्धानः, सत्यः सत्यपरायणः।।११०।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (सत्यात्मा) सत्य आत्मवान् होने से सत्यात्मा (सत्यविज्ञानः) सत्यविज्ञानयुक्त होने से सत्यविज्ञान (सत्यवाक्) वाणी के सत्यार्थ होने से सत्यवाक् (सत्यशासनः) शासन के सर्वथा सत्य होने से सत्यशासन (सत्याशीः) प्रशस्त आशीर्वाददाता होने से सत्याशी (सत्यसन्धानः) दृढ़प्रतिज्ञ होने से सत्यसन्धान (सत्यः) शुद्धस्वभाव में स्थित होने से सत्य तथा (सत्यपरायणः) सर्वदा सत्यधर्म में अवस्थित रहने से सत्यपरायण {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप सत्य आत्मवान होने से सत्यात्म, सत्यविज्ञानयुक्त होने से सत्यविज्ञान, वाणी के सत्यार्थ होने से सत्यवाक्, शासन के सर्वथा सत्य होने से सत्यशासन, प्रशस्त आशीर्वाददाता होने से सत्याशी, दृढ़प्रतिज्ञ होने से सत्यसन्धान, शुद्धस्वभाव में स्थित होने से सत्य तथा सर्वदा सत्यधर्म में अवस्थित होने से सत्यपरायण कहे जाते हैं।

स्थेयान् स्थवीयान्, नेदीयान् दवीयान् दूरदर्शनः।
अणु- रणी- याननणु, र्गुरुराद्यो गरीयसाम्।।१११।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (स्थेयान्) अत्यन्त स्थिर होने से स्थेयान् (स्थवीयान्) अत्यन्त विशालहृदय होने से स्थवीयान् (नेदीयान्) भक्तों के अत्यन्त समीप होने से नेदीयान् (दवीयान्) पापों से अत्यन्त दूर रहने से दवीयान् (दूरदर्शनः) योगियों को दूर से ही आपका दर्शन प्राप्त होने से दूरदर्शन, (अणोरणीयान्) आपका शुद्धात्मा मूर्तिमान् पुद्गल परमाणु से भी अत्यन्त सूक्ष्म होने से अणोरणीयान् (अनणुः) परमाणुरूप न होने से अनणु तथा (गरीयसाम् आद्यः गुरुः) गुरुओं के गुरु {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप अत्यन्त स्थिर होने से स्थेयान्, अत्यन्तविशालहृदय होने से स्थवीयान्, भक्तों के अत्यन्त समीप होने से नेदीयान्, पापों से अत्यन्त दूर होने से दवीयान्, योगियों को दूर से ही आपका दर्शन प्राप्त होने से दूरदर्शन, आपका शुद्धात्मा मूतिमान् पुद्गल परमाणु से भी अत्यन्त सूक्ष्म होने से अणोरणीयान्, परमाणुरूप न होने से अनणु तथा गुरुओं के गुरु होने से गुरुओं के गुरु कहे जाते हैं।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

सदायोगः सदाभोगः, सदातृप्तः सदाशिवः।
सदागतिः सदासौख्यः, सदाविद्यः सदोदयः।।११२।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (सदायोगः) सदा आत्मयोग में स्थिर रहने से सदायोग (सदाभोगः) सदा आत्मरस का उपभोगकर्ता होने से सदाभोग (सदातृप्तः) सर्वदा सन्तुष्ट रहने से सदातृप्त (सदाशिवः) सर्वदा कल्याणरूप रहने से सदाशिव (सदागतिः) सदा ज्ञानरूप रहने से सदागति (सदासौख्यः) सदा आनन्द स्वरूप रहने से सदासौख्य (सदाविद्यः) सदा केवलज्ञान विभूषित हरने से सदाविद्य तथा (सदोदयः) सदा अबाधित उत्कर्षवान् होने से सदोदय {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप सदा आत्मयोग में स्थिर रहने से सदायोग, सदा आत्मरस का उपभोगकर्ता होने से सदाभोग, सर्वदा सन्तुष्ट रहने से सदातृप, सर्वदा कल्याणरूप रहने से सदाशिव, सदा ज्ञानरूप रहने से सदागति, सदा आनन्दस्वरूप रहने से सदासौख्य, सदा केवलज्ञान विभूषित रहने से सदाविद्य तथा सदा अबाधित उत्कर्षवान् होने से सदोदय कहे जाते हैं।

सुघोषः सुमुखः सौम्यः, सुखदः सुहितः सुहृत्।
सुगुप्तो गुप्तिभृद् गोप्ता, लोकाध्यक्षो दमेश्वरः।।११३।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (सुघोषः) वाणी के हितमित प्रिय होने से सुघोष (सुमुखः) सर्वसुन्दर मुख वाले होने से सुमुख (सौम्यः) अतिशय शान्त होने से सौम्य (सुखदः) सब जीवों के सुखदायक होने से सुखद (सुहितः) सबके हितकारी होने से सुहित (सुहृत्) उत्तम हृदयधारक होने से सुहृत्, (सुगुप्तः) मिथ्यादृष्टियों के अगम्य होने से सुगुप्त (गुप्तिभृद्) गुप्तियों के पालक होने से गुप्तिभृद् (गोप्ता) रक्षक होने से गोप्ता (लोकाध्यक्षः) लोकत्रय के प्रत्यक्ष ज्ञाता दृष्टा होने से लोकाध्यक्ष (दमेश्वरः) तप से होने वाले क्लेश को सहन करना दम है, दम के ईश्वर होने से दमेश्वर {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप वाणी के हितमित प्रिय होने से सुघोष, सर्वसुन्दर मुख वाले होने से सुमुख, अतिशय शान्त होने से सौम्य, सब जीवों के सुखदायक होने सुखद, सबके हितकारी होने से सुहित, उत्तमहृदयधारक होने से सुहृत, मिथ्यादृष्टियों के अगम्य होने से सुगुप्त, गुप्तियों के पालक होने से गुप्तिभृत् रक्षक होने से गोप्ता, लोकत्रय के प्रत्यक्ष ज्ञाता दृष्टा होने से लोकाध्यक्ष तथा तप से होने वाले क्लेश को सहन करना दम है, दम के ईश्वर होने से दमेश्वर कहे जाते हैं।

।। इति असंस्कृतादिशतम्।।७।।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

बृहन्- बृहस्पति- र्वाग्मी, वाचस्पति- रुदारधीः।
मनीषी धिषणो धीमाञ्, छेमुषीशो गिरांपतिः।।११४।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (बृहद्) सर्वमहान् होने से बृहद् (बृहस्पतिः) इन्द्रों के गुरु होने से बृहस्पति (वाग्मी) प्रशस्त वाणीवान् होने से वाग्मी (वाचस्पतिः) वाणी के स्वामी होने से वाचस्पति (उदारधीः) लोकालोक व्यापीज्ञानवान् होने से उदारधी (मनीषी) मननशक्तिसम्पन्न होने से मनीषी (धिषणः) चातुर्यपूर्णबुद्धियुक्त होने से धिषण (धिमान्) विशेष बुद्धिधारी होने से धीमान् (शेमुषीशः) बुद्धि के स्वामी होने से शेमुषीश तथा (गिराम्पतिः) सप्तभङ्गरूप वाणी के अधिपति होने से गिराम्पति {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप सर्वमहान् होने से बृहद्, इन्द्रों के गुरु होने से बृहस्पति, प्रशस्तवाणीवान् होने से वाग्मी, वाणी के स्वामी होने से वाचस्पति, लोकालोकव्यापिज्ञानवान् होने से उदारधी, मननशक्तिसम्पन्न होने से मनीषी, चातुर्यपूर्ण बुद्धियुक्त होने से धिषण, विशेष बुद्धिधारी होने से धीमान्, बुद्धि के स्वामी होने से शेमुषीश तथा सप्तभङ्गरूप वाणी के अधिपति होने से गिराम्पति कहे जाते हैं।

नैकरूपो नयोत्तुङ्गो, नैकात्मा नैक- धर्मकृत्।
अविज्ञेयोऽप्रतर्क्यात्मा, कृतज्ञः कृत-लक्षणः।।११५।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (नैकरूपः) अनेकान्तरूप वाणी के धारणकर्ता होने से नैकरूप (नयोत्तुङ्गः) नयों के निरूपण द्वारा मान्यताप्राप्त होने से नयोत्तुङ्ग (नैकात्मा) अनन्यगुणस्वरूप होने से नैकात्मा (नैकधर्मकृत्) अनेकान्त शासन के उपदेशक होने से नैकधर्मकृत (अविज्ञेयः) अल्पज्ञों के ज्ञान के अगोचर होने से अविज्ञेय (अप्रतर्क्यात्मा) तर्कवितर्करहित होने से अप्रतर्क्यात्मा (कृतज्ञः) समस्त कार्यों के ज्ञाता होने से कृतज्ञ तथा (कृतलक्षणः) समस्त पदार्थों की परिभाषा के प्रतिपादक होने से कृतलक्षण {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप अनेकान्तरूप वाणी के धारण कर्ता होने से नैकरूप, नयों के निरूपण द्वारा मान्यताप्राप्त होने से नयोतुङ्ग, अनन्तगुणस्वरूप होने से नैकात्मा, अनेकान्त शासन के उपदेशक होने से नैकधर्मकृत्, अल्पज्ञों के ज्ञान के अगोचर होने से अविज्ञेय, तर्क वितर्क रहित होने से अप्रतर्क्यात्मा, समस्त कार्यों के ज्ञाता होने से कृतज्ञ तथा समस्त पदार्थों की परिभाषा के प्रतिपादक होने से कृतलक्षण कहे जाते हैं।

ज्ञान-गर्भो दया-गर्भो, रत्न-गर्भः प्रभा-स्वरः।
पद्मगर्भो जगद्गर्भो, हेमगर्भः सुदर्शनः।।११६।।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (ज्ञानगर्भः) गर्भावस्था में मति श्रुत अवधिज्ञानसम्पन्न होने से ज्ञानगर्भ (दयागर्भः) दयापूर्ण अन्तकरणयुक्त होने से दयागर्भ (रत्नगर्भः) गर्भकल्याणक में रत्नो की वर्षा होने से रत्नगर्भ (प्रभास्वरः) अतिशय देदीप्यमान होने से प्रभाकर (पद्मगर्भः) माता के कमलाकार गर्भाशय में विराजमान होने से पद्मगर्भ (जगद्गर्भः) ज्ञान में समस्त जगत् समाहित होने से जगद्गर्भ (हेमगर्भः) गर्भावतार के समय जन्मपुरी के सुवर्णमय होने से हेमगर्भ तथा (सुदर्शनः) रूप के मनोहर होने से सुदर्शन {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप गर्भावस्था में ही मति, श्रुत, अवधिज्ञान सम्पन्न होने से ज्ञानगर्भ, दयापूर्ण अन्तःकरणयुक्त होने से दयागर्भ, गर्भकल्याणक में रत्नों की वर्षा होने से रत्नगर्भ, अतिशय देदीप्यमान होने से प्रभास्वर, माता के कमलाकार गर्भाशय में विराजमान होने से पद्मगर्भ, ज्ञान में समस्त जगत् समाहित होने से जगद्गर्भ, गर्भावतार के समय जन्मपुरी के स्वर्णमय होने से हेमगर्भ तथा रूप के मनोहर होने से सुदर्शन कहे जाते हैं।

लक्ष्मीवांस् त्रिदशाध्यक्षो, दृढीया- निन ईशिता।
मनोहरो मनोज्ञाङ्गो धीरो, गम्भीर- शासनः।।११७।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (लक्ष्मीवान्) समवसरणरूप लक्ष्मीयुक्त होने से लक्ष्मीवान् (त्रिदशाध्यक्षः) त्रिदश {देवों} के स्वामी होने से त्रिदशाध्यक्ष (दृढीयान्) शरीर के अत्यन्त दृढ होने से दृढीयान् (इनः) सबके स्वामी होने से इन (ईशिता) ऐश्वर्यवान् होने से ईशिता (मनोहरः) भव्यों के चित्त के आकर्षक होने से मनोहर (मनोज्ञाङ्गः) अङ्गोपाङ्गों के मनोज्ञ होने से मनोज्ञाङ्ग (धीरः) परीषहों से विचलित नहीं होने से धीर तथा (गम्भीरशासनः) सिद्धान्त के अतिसूक्ष्म होने से गम्भीरशासन {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप समवसरणरूपलक्ष्मीयुक्त होने से लक्ष्मीवान्, त्रिंदश (देवों) के स्वामी होने से त्रिदशाध्यक्ष, शरीर के अत्यन्त दृढ़ होने से दृढ़ीयान्, सबके स्वामी होने से इन, ऐश्वर्यवान् होने से ईशिता, भव्यों के चित्त के आकर्षक होने से मनोहर, अङ्गोपाङ्गों के मनोज्ञ होने से मनोज्ञाङ्ग, परीषहों से विचिलित नहीं होने से धीर तथा सिद्धान्त के अतिसूक्ष्म होने से गम्भीरशासन कहे जाते हैं।

धर्म-यूपो दया-यागो, धर्म-नेमि र्मुनीश्वरः।
धर्म- चक्रा- युधो देवः, कर्महा धर्म- घोषणः।।११८।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (धर्मयूपः) धर्म के स्तम्भ होने से धर्मयूप (दयायागः) दयामय यज्ञ के उपदेशक होने से दयायाग (धर्मनेमिः) धर्मरथ की नेमि {धुरा} होने से धर्मनेमि (मुनीश्वरः) मुनियों के ईश्वर होने से मुनीश्वर (धर्मचक्रायुधः) धर्मचक्ररूप

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

हथियार के धारक होने से धर्मचक्रायुध (देवः) आत्मस्वरूप में क्रीड करने से देव, (कर्महा) कर्मों के क्षयकर्ता होने से कर्महा तथा (धर्मघोषणः) धर्म का उपदेश देने से धर्मघोषण {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप धर्म के स्तम्भ होने से धर्मयूप, दयामय यज्ञ के उपदेशक होने से दयायाग, धर्मरूप रथ की नेमि (धुरा) होने से धर्मनेमि, मुनियों के ईश्वर होने से मुनीश्वर, धर्मचक्ररूप हथियार के धारक होने से धर्मचक्रायुध, आत्मस्वरूप में क्रीडा करने से देव, कर्मों के क्षयकर्ता होने से कर्महा तथा धर्म का उपदेश देने से धर्मघोषण कहे जाते हैं।

अमोघ- वा- गमोघाज्ञो, निर्मलोऽमोघ- शासनः।
सुरूपः सुभगस् त्यागी, समयज्ञः समाहितः।।११९।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (अमोघवाक्) वाणी के यथार्थबोधक होने से अमोघवाक् (अमोघाज्ञः) आज्ञा के सदा सफल होने से अमोघाज्ञ (निर्मलः) रागद्वेषरूप विकार रहित होने से निर्मल (अमोघशासनः) सफल शासनवान् होने से अमोघशासन (सुरूपः) सुन्दर रूपवान् होने से सुरूप (सुभगः) उत्तम ऐश्वर्ययुक्त होने से सुभग (त्यागी) परपरणति का त्याग करने से त्यागी (समयज्ञः) समय {आत्मा} के ज्ञाता होने से समयज्ञ तथा (समाहितः) सदा सावधान रहने से समाहित {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप वाणी के यथार्थबोधक होने से अमोघवाक्, आज्ञा से सदा सफल होने से अमोघाज्ञ, रागद्वेषरूप विकाररहित होने से निर्मल, सफल शासनवान् होने से अमोघशासन, सुन्दर रूपवान् होने से सुरूप, उत्तम ऐश्वर्ययुक्त होने से सुभग, परपरणति का त्याग करने से त्यागी, समय (आत्मा) के ज्ञाता होने से समयज्ञ तथा सावधान रहने से समाहित कहे जाते हैं।

सुस्थितः स्वास्थ्यभाक्ः स्वस्थो, नीरजस्को निरुद्धवः।
अलेपो निष्कलङ्कात्मा, वीतरागो गतस्पृहः।।१२०।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (सुस्थितः) चैतन्यभाव में लीन रहने से सुस्थित (स्वास्थ्यभाक्) कर्मरोगरहित होने से स्वास्थ्यभाक् (स्वस्थः) स्वस्वरूप में स्थित होने से स्वस्थ (नीरजस्कः) कर्मरज रहित होने से नीरजस्क (निरुद्धवः) स्वामी रहित होने से निरुद्धव (अलेपः) कर्मरूप लेपरहित होने से अलेप (निष्कलङ्कात्मा) कर्मकलङ्कमुक्त होने से निष्कलङ्कात्मा (वीतरागः) रागरहित होने से वीतराग तथा (गतस्पृहः) विषयों की इच्छारहित होने से गतस्पृह {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

अर्थ :- हे भगवन् ! आप चैतन्यभाव में लीन होने से सुस्थित, कर्मरोगरहित होने से स्वास्थ्यभाक्, स्वस्यरूप में स्थित होने से स्वस्थ, कर्मरजरहित होने से नीरजस्क, स्वामिरहित होने से निरुद्धव, कर्मरूपलेपरहित होने से अलेप, कर्मकलङ्क मुक्त होने से निष्कलङ्कात्मा, रागरहित होने से वीतराग, विषयों की इच्छारहित होने से गृतस्पृह कहे जाते हैं।

वश्येन्द्रियो विमुक्तात्मा, निःसपत्नो जितेन्द्रियः।
प्रशान्तोऽनन्त- धामर्षि, र्मङ्गलं मलहा- नयः।।१२१।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (वश्येन्द्रियः) इन्द्रिय विजेता होने से वश्येन्द्रिय (विमुक्तात्मा) कर्मबन्धनमुक्त होने से विमुक्तात्मा (निःसपत्नः) शत्रुविहीन होने से निःसपत्न (जितेन्द्रियः) इन्द्रियविजयी होने से जितेन्द्रिय (प्रशान्तः) शान्तकषाय होने से प्रशान्त (अनन्तधामर्षिः) अनन्त तेजोयुक्त ऋषि होने से अनन्तधामर्षि (मङ्गलम्) कल्याणरूप होने से मङ्गल (मलहा) कर्ममल के नाशक होने से मलह {च = और} (अनयः) पुण्य तथा पाप रहित प्रभु अनय {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप इन्द्रिय विजेता होने से वश्येन्द्रिय, कर्मबन्धनमुक्त होने से विमुक्तात्मा, शत्रुविहीन होने से निःसपत्न, इन्द्रियविजयी होने से जितेन्द्रिय, शान्तकषाय होने से प्रशान्त, अनन्त तेजोयुक्त ऋषि होने से अनन्तधामर्षि, कल्याणरूप होने से मङ्गल, कर्ममल के नाशक होने से मलह और पुण्य तथा पापरहित होने से अनय कहे जाते हैं।

अनी- दृगुप- माभूतो, दिष्टि- र्दैव- मगो- चरः।
अमूर्तो मूर्ति- मानेको, नैको नानैक- तत्वदृक्।।१२२।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (अनीदृक्) अनुपम होने से अनीदृक् (उपमाभूतः) उपमायोग्य होने से उपमाभूत (दिष्टिः) शुभाशुभदर्शक होने से दिष्टि (दैवम्) प्राणियों के भाग्यरूप होने से दैव (अगोचरः) गमन आकाश में होने से अगोचर (अमूर्तः) रूपादि पौद्गलिक गुणरहित होने से अमूर्त (मूर्तिमान्) पुरुषाकार होने से मूर्तिमान (एकः) अद्वितीय होने से एक (नैकः) अनेकरूप होकर भव्यों के हितकारक होने से नैक (नानैकतत्वदृक्) स्याद्वाद दृष्टि से नाना तथा शुद्धदृष्टि से एक आत्मतत्व के ज्ञाता होने से नानैकतत्वदृक् {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप अनुपम होने से अनीदृक्, उपयामोग्य होने से उपमाभूत, शुभाशुभदर्शन होने से दिष्टि, प्राणियों के भाग्यरूप होने से दैव, गमन आकाश में होने से अगोचर, रूपादि पौद्गलिक गुणरहित होने से अमूर्त, पुरुषाकार होने से मूर्तिमान्, अद्वितीय होने से एक, अनेक रूप होकर भव्यों के हितकारक होने से नैक, स्याद्वाद्दृष्टि से नाना तथा शुद्धदृष्टि से एक आत्मतत्व के दृष्टा होने से नानैकतत्वदृक् कहे जाते हैं।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

अध्यात्म- गम्योऽगम्यात्मा, योग- विद्योगि- वन्दितः।
सर्वत्रगः सदाभावी, त्रिकाल- विषयार्थ- दृक्।।१२३।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (अध्यात्मगम्यः) अध्यात्मशास्त्र द्वारा ज्ञातव्य होने से अध्यात्मगम्य (अगम्यात्मा) मिथ्यात्वी प्राणियों के द्वारा ज्ञातव्य न होने से अगम्यात्मा (योगावित्) आत्मध्यान के ज्ञाता होने से योगवित् (योगितन्दितः) योगियों के द्वारा पूजित होने से योगिवन्दित (सर्वत्रगः) केवलज्ञान द्वारा सर्वत्र व्याप्त होने से सर्वत्रग, (सदाभावी) सदा विद्यमान रहने से सदाभावी तथा (त्रिकालविषयार्थदृक्) त्रिकालवर्ती समस्त द्रव्य गुण पर्याप्य के दृष्टा होने से त्रिकालविपयार्थदृक् {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप अध्यात्मशास्त्र द्वारा गम्य होने से अध्यात्मगम्य, मिथ्यात्वी प्राणियों के द्वारा ज्ञातव्य न होने से अगम्यात्मा, आत्मध्यान के ज्ञाता होने से योगवित्, योगियों के द्वारा पूजित होने से योगिवन्दित, केवलज्ञान द्वारा सर्वत्र व्याप्त होने से सर्वत्रम, सदा विद्यमान रहने से सदाभावी तथा त्रिकालवर्ती समस्त द्रव्य गुणपर्याप के दृष्टा होने से त्रिकालविषयार्थदृक् कहे जाते हैं।

शङ्करः शंवदो दान्तो, दमी क्षान्ति- परायणः।
अधिपः परमानन्दः, परात्मज्ञः परात्परः।।१२४।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (शङ्करः) सबको सुखदाता होने से शङ्कर (शंवदः) सुख के मार्ग निरूपक होने से शंवद (दान्तः) मनोविजेता होने से दान्त (दमी) इन्द्रियदमनकर्ता होने से दमी (क्षान्तिपरायणः) क्षमाभाव धारण करने से क्षान्तिपरायण (अधिपः) जगत के अधिपति होने से अधिप (परमानन्दः) अत्यन्त सुखी होने से परमानन्द (परात्मज्ञः) स्व और पर के स्वरूप के ज्ञाता होने से परात्मज्ञ तथा (परात्परः) सर्वश्रेष्ठ होने से परात्पर {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप सबको सुखदाता होने से शङ्कर, सुख के मार्ग के निरूपक होने से शंवद, मनोविजेता होने से दान्त, इन्द्रियदमनकर्ता होने से दमी, क्षमाभाव धारण करने से क्षान्तिपरायण, जगत के अधिपति होने से अधिप, अत्यन्त सुखी होने से परमानन्द, स्व और पर के स्वरूप के ज्ञाता होने से परात्मज्ञ तथा सर्वश्रेष्ठ होने से परात्पर कहे जाते हैं।

त्रिजगद्- बल्लभोऽभ्य- र्च्यस्, त्रिजगन्- मङ्गलोदयः।
त्रिजगत्पतिपूज्याङ्घ्रिस्, त्रिलोकग्रशिखामणिः।।१२५।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (त्रिजगद्बल्लभः) त्रिलोक के प्रिय होने से

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

त्रिजगद्बल्लभ (अभ्यर्च्यः) अतिशय पूज्य होने से अभ्यर्च्य (त्रिजगन्मङ्गलोदयः) त्रिलोक के प्राणियों के मङ्गलदाता होने से त्रिजगन्मङ्गलोदय (त्रिजगत्पतिपूज्याङ्घ्रिः) त्रिलोक के इन्द्रों द्वारा पूजितचरण वाले होने से त्रिजगत्पतिपूज्याङ्घ्रि तथा (त्रिलोकाग्रशिखामणिः) तीनों लोकों के अग्रभाग पर चूडामणि के समान सुशोभित होने से त्रिलोकाग्रशिखामणि {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप त्रिलोक के प्रिय होने से त्रिजगद्वल्लभ, अतिशय पूज्य होने से अभ्यर्च्य, त्रिलोक के प्राणियों के मंगलदाता होने से त्रिजगन्मङ्गलोदय, त्रिलोक के इन्द्रों द्वारा पूजित चरण वाले होने से त्रिजगत्पतिपूज्याङ्घ्रि तथा तीनों लोकों के अग्रभाग पर चूडामणि के समान सुभोभित होने से त्रिलोकाग्रशिखामणि कहे जाते हैं।

।। इतिबृहदादिशतम् ।।८।।

* तुम चलोगे तो तुम्हारे कदमों के निशान पृथ्वी पर अंकि जरूर होंगे। मैं चाहता हूँ कि तुम ऐसे चलो कि लोग तुम्हारे चरण-चिन्हों के पिछे चलने को मजबूर हो जाएँ जैसे ऋषभदि महावीर के पिछे हम चल रहे हैं।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

त्रिकाल- दर्शी लोकेशो, लोकधाता दृढव्रतः।
सर्व- लोकातिगः पूज्यः, सर्वलोकैक- सारथिः।।१२६।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (त्रिकालदर्शी) तीनों कालों की बातों के दर्शक होने से त्रिकालदर्शी (लोकेशः) लोक के स्वामी होने से लोकेश (लोकधाता) लोक के रक्षक होने से लोकधाता (दृढव्रतः) व्रतों में स्थिर हरने से दृढव्रत (सर्वलोकातिगः) सर्वलोक में अपूर्व होने से सर्वलोकातिग (पूज्यः) जगत् के समादरणीय होने से पूज्य तथा (सर्वलोकैकसारथिः) सर्वजीवों को धर्मरथ पर आरूढ़ कर मुक्तिप्रापक अपूर्वसारथिरूप होने से सर्वलोकैकसारिथि {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप तीनों कालों की बातों के दर्शक होने से त्रिकालदर्शी, लोक के स्वामी होने से लोकेश, लोक के रक्षक होने से लोकधाता, व्रतों में स्थिर रहने से दृढ़व्रत, सर्वलोक में अपूर्व होने से सर्वलोकातिग, जगत् के समादरणीय होने से पूज्य तथा सर्वजीवों के धर्मरथ पर आरूढ़ कर मुक्तिप्रापक अपूर्व सारथिरूप होने से सर्वलोकैकसारथि कहे जाते हैं।

पुराणः पुरुषः पूर्वः, कृत- पूर्वाङ्ग- विस्तरः।
आदिदेवः पुराणाद्यः, पुरु- देवोऽधि- देवता।।१२७।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (पुराणः) अतिप्राचीन होने से पुराण (पुरुषः) आत्मीय श्रेष्ठ गुणों के धारक होने से पुरुष (पूर्वः) सर्वप्रथम होने से पूर्व (कृतपूर्वाङ्गविस्तरः) अङ्गों तथा पूर्वों रूप आगम के विस्तारक होने से कृतपूर्वाङ्गविस्तर (आदिदेवः) सर्वदेवों में प्रमुख होने से आदि देव (पुराणाद्यः) पुराणकथित श्रेष्ठ पुरुषों में प्रथम होने से पुराणाद्य (पुरुदेवः) प्रथमतीर्थङ्कर होने से पुरुदेव तथा (अधिदेवता) देवों द्वारा पूज्य होने से अधिदेवता {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप अतिप्राचीन होने से पुराण, आत्मीय श्रेष्ठगुणों के धारक होने से पुरुष, सर्वप्रथम होने से पूर्व, अङ्गों तथा पूर्वों रूप आगम के विस्तारक होने से कृतपूर्वाङ्गविस्तर, सर्वदेवों में प्रमुख होने से आदिदेव, पुराणकथित श्रेष्ठ पुरुषों में प्रथम होने से पुराणाद्य, प्रथम तीर्थङ्कर होने से पुरुदेव तथा देवों द्वारा पूज्य होने से अधिदेवता कहे जाते हैं।

युगमुख्यो युगज्येष्ठो, युगादिस्थिति- देशकः।
कल्याणवर्णः कल्याणः, कल्यः कल्याणलक्षणः।।१२८।।

अन्वयार्थ :- हे भवगन् ! आप (युगमुख्यः) इस सवसर्पिणी काल के मुख्य पुरुष

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

होने से युगमुख्य (युगज्येष्टः) इस युग के सर्व प्रमुख व्यक्ति होने से युगज्येष्ठ (युगादिस्थितिदेशकः) युग के प्रारम्भकाल में कर्त्तव्यपथ का उपदेश देने से युगादिस्थितिदेशक (कल्याणवर्णः) शरीर का वर्ण स्वर्ण के समान होने से कल्याणवर्ण (कल्याणः) कल्याणस्वरूप होने से कल्याण (कल्यः) सबके कल्याणकारी होने से कल्य तथा (कल्याणलक्षणः) माङ्गलिक चिह्नों से अलङ्कृत होने से कल्याणलक्षण {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप इस अवसर्पिणी काल के मुख्य पुरुष होने से युगमुख्य, इस युग के सर्वप्रमुख व्यक्ति होने से युगज्येष्ठ, युग के प्रारम्भ काल में कर्त्तव्यपथ का उपदेश देने से युगादिस्थितिदेशक, शरीर का वर्ण स्वर्ण के समान होने से कल्याणवर्ण, कल्याणस्वरूप होने से कल्याण, सबके कल्याणकारी होने से कल्य तथा माङ्गलिक चिह्नों से अलङ्कृत होने से कल्याणलक्षण कहे जाते हैं।

कल्याण- प्रकृति- दीप्तः, कल्याणात्मा विकल्मषः।
विकलङ्कः कलातीतः, कलिलघ्नः कलाधर।।१२९।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (कल्याणप्रकृतिः) कल्याणरूप स्वभाव होने से कल्याणप्रकृति (दीप्तः) देदीप्यमान होने से दीप्त (कल्याणात्मा) कल्याणस्वरूप होने से कल्याणात्मा (विकल्मषः) पापरहित होने से विकल्मष (विकलङ्कः) कर्मकलङ्करहित होने से विकलङ्क (कलातीतः) शरीररहित होने से कलातीत (कलिलघ्नः) पापनाशक होने से कलिलघ्न तथा (कलाधरः) अनेक कलाओं के धारक होने से कलाधर {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप कल्याणरूप स्वभाव होने से कल्याणप्रकृति, देदीप्यमान होने से दीप्त, कल्याणस्वरूप होने से विकलङ्क, शरीररहित होने से कलातीत, पापनाशक होने से कलिलघ्न तथा अनेक कलाओं के धारक होने से कलाधर कहे जाते हैं।

देवदेवो जगन्नाथो, जगद्- बन्धु र्जगद्विभुः।
जगद्- धितैषी लोकज्ञः, सर्वगो जगदग्रजः।।१३०।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (देवदेवः) इन्द्रादिक देवों के भी देव होने से देवदेव (जगन्नाथः) लोकत्रय के स्वामी होने से जगन्नाथ (जगद्बन्धुः) विश्व के बन्धु होने से जगद्बन्धु (जगद्विभुः) समस्त जगत के प्रभु होने से जगद्विभु (जगद्धितैषी) लोकत्रय के हितचिन्तक होने से जगद्धितैषी (लोकज्ञः) लोकत्रय के ज्ञाता होने से लोकज्ञ (सर्वज्ञः) केवलज्ञान द्वारा सर्वत्र व्याप्त होने से सर्वग तथा (जगदग्रजः) जगत में सर्वश्रेष्ठ होने से जगदग्रज {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

For correction contact Ahimsa forum (www.ahimsaforum.net)

अर्थ :- हे भगवन् ! आप इन्द्रादिक देवों के भी देव होने से देवदेव, लोकत्रय के स्वामी होने से जगन्नाथ, विश्व के बन्धु होने से जगद्बन्धु, समस्त जगत के प्रभु होने से जगद्विभु, लोकत्रय के हितचिन्तक होने से जगद्धितैषी, लोकत्रय के ज्ञाता होने से लोकज्ञ, केवलज्ञान द्वारा सर्वत्र व्याप्त होने से सर्वग तथा जगत में सर्वश्रेष्ठ होने से जगदग्रज कहे जाते हैं।

चरा- चर-गुरु र्गोप्यो, गूढात्मा गूढ- गोचरः।
सद्योजातः प्रकाशात्मा, ज्वलज्ज्वलन सत्प्रभः।।१३१।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (चराचरगुरुः) सभी त्रस तथा स्थावरों के गुरु होने से चराचर गुरु (गोप्यः) अन्तःकरण में सावधानी से विराजमान करने योग्य होने से गोप्य (गूढात्मा) इन्द्रियों के अगोचर होने से गूढ़ात्मा (गूढगोचरः) गूढ़ जीवादि तत्वों के ज्ञाता होने से गूढ़गोचर (सद्योजातः) तत्काल प्रसूत शिशुसदृश निर्विकार होने से सद्योजात (प्रकाशात्मा) तेजोमय होने से प्रकाशात्मा तथा (ज्वलज्ज्वलनसत्प्रभः) देदीप्यमान अग्नि से अधिक शारीरिक प्रभावयुक्त होने से ज्वलज्ज्वलनसत्प्रभः {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप सभी त्रस तथा स्थवरों के गुरु होने से चराचर गुरु, अन्तःकरण में सावधानी से विराजमान करने योग्य होने से गोप्य, इन्द्रियों के अगोचर होने से गूढात्मा, गूढ़ जीवादि तत्वों के ज्ञाता होने से गूढ़गोचर, तत्काल प्रसूत शिशुसदृश निर्विकार होने से सद्योजात, तेजोमय होने से प्रकाशात्मा तथा देदीप्यमान अग्नि से अधिक शारीरिक प्रभायुक्त होने से ज्वलज्ज्वलनसत्प्रभ कहे जाते हैं।

आदित्य- वर्णो भर्माभः, सुप्रभः कनकप्रभः।
सुवर्णवर्णो रुक्माभः, सूर्य- कोटि- समप्रभः।।१३२।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (आदित्यवर्णः) सूर्य के समान वर्णधारक होने से आदित्यवर्ण (भर्माभः) स्वर्ण के समान कान्तिधारक होने से भर्माभ (सुप्रभः) उत्तम प्रभावान् होने से सुप्रभ (कनकप्रभः) स्वर्णसमान प्रभावान् होने से कनकप्रभ (सुवर्णवर्णः) देहकान्ति सुवर्ण के समान होने से सुवर्णवर्ण (रुक्माभः) सुवर्ण के समान होने से रुक्माभ तथा (सूर्यकोटिसमप्रभः) करोड़ सूर्य के समान प्रभावान् होने से सूर्यकोटिसमप्रभ {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप सूर्य के समान वर्ण धारक होने से आदित्यवर्ण, स्वर्णसमान कान्तिधारक होने से भर्माभ, उत्तम प्रभावान् होने से सुप्रभ, स्वर्णसमान प्रभावान् होने से कनकप्रभ, देहकान्ति सुवर्ण के समान होने से सुवर्णवर्ण, सुवर्ण के समान होने से रुक्माभ तथा करोड़ों सूर्यों के समान प्रभावान् होने से सूर्यकोटिसमप्रभ कहे जाते हैं।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

तपनीय- निभस्तुङ्गो, बालार्का- भोऽनलप्रभः।
सन्ध्याभ्रबभ्रु- र्हेमाभ-, स्तप्त- चामीकरच्छविः।।१३३।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (तपनीयनिभः) तप्त स्वर्ण समान देदीप्यमान होने से तपनीयनिभ (तुङ्गः) उन्नतशरीरधारी होने से तुङ्ग (बालार्काभः) बालसूर्य की प्रभासमान प्रभावान् होने से बालार्काभ (अनलप्रभः) अग्निसमान प्रभावान् होने से अनलप्रभः (सन्ध्याभ्रबभ्रुः) सन्ध्याकालीन मेघों के समान देदीप्यमान होने से सन्ध्याभ्रबभ्रु (हेमाभः) स्वर्ण के समान आभावान् होने से हेमाभ तथा (तप्तचामीकरच्छविः) तपाये स्वर्ण के समान कान्तियुक्त होने से तप्तचामीकरच्छवि {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- भगवन् ! आप तप्तस्वर्णसदृश, देदीप्यमान होने से तपनीयनिभ, उन्नतशरीरधारी होने से तुङ्ग, बालसूर्य की प्रभासमान प्रभावान् होने से बालार्काभ, अग्निसमान प्रभावान् होने से अनलप्रभ, सन्ध्याकालीन मेघों के समान देदीप्यमान होने से सन्ध्याभ्रबभ्रु, स्वर्ण के समान आभावान् होने से हेमाभ तथा तपाये स्वर्ण के समान कान्तियुक्त होने से तप्तचामीकरच्छवि कहे जाते हैं।

निष्टप्त- कनकच्छायः, कनत्काञ्चन- सन्निभः।
हिरण्यवर्णः स्वर्णाभः शातकुम्भ- निभप्रभः।।१३४।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (निष्टप्तकनकच्छायः) अत्यन्त तपाये स्वर्ण के समान कान्तिमान् होने से निष्टप्तकनकच्छाय (कनत्काञ्चनसन्निभः) देदीप्यमान स्वर्ण के समान होने से कनत्काञ्चनसन्निभ तथा (हिरण्यवर्णः स्वर्णाभः शातकुम्भ निभप्रभः) स्वर्ण के समान वर्णवान् होने से हिरण्यवर्ण, स्वर्णाभ और शातकुम्भनिभप्रभ {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप अत्यन्त तपाये स्वर्ण के समान कान्तिमान् होने से निष्टप्तकनकच्छाय, देदीप्यमान स्वर्ण के समान होने से कनत्काञ्चनसन्निभ तथा सुवर्ण के समान वर्णवान होने से हिरण्यवर्ण, स्वर्णाभ और शातकुम्भनिभप्रभ कहे जाते हैं।

द्युम्नाभो जात- रूपाभस् तप्त- जाम्बू- नदद्युतिः।
सुधौत- कल- धौतश्रीः, प्रदीप्तो हाटकद्युतिः।।१३५।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (द्युम्नाभः) स्वर्ण के समान प्रभावान होने से द्युम्नाभ (जातरूपाभः) स्वर्ण के समान आभावान् होने से जातरूपाभ (तप्तजाम्बूनदद्युतिः) तपाये स्वर्ण के समान कान्तिमान होने से तप्तजाम्बूनदद्युति (सुधौतकलधौतश्री) अत्यन्त निर्मल स्वर्ण सदृश श्रीसम्पन्न होने से सुधौतकलधौतश्री (प्रदीप्तः) देदीप्यमान होने से प्रदीप्त तथा (हाटकद्युतिः) स्वर्णसदृश कान्तिमान् होने से हाटकद्युति {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

अर्थ :- हे भगवन् ! आप स्वर्ण के समान प्रभावान् होने से द्युम्नाभ, स्वर्ण समान आभावान् होने से जातरूपाभ, तपाये स्वर्ण के समान कान्तिमान् होने से तप्तजाम्बुनदद्युति, अत्यन्त निर्मल स्वर्णसदृश श्रीसम्पन्न होने से सुधौतकलधौतश्री, देदीप्यमान होने से प्रदीप्त तथा स्वर्णसदृश कान्तिमान होने से हाटकद्युति कहे जाते हैं।

शिष्टेष्टः पुष्टिदः पुष्टः, सुपष्टः स्पष्टा- क्षरः क्षमः।
शत्रुघ्नोऽप्रतिघोऽमोघः, प्रशास्ता शासिता स्वभूः।।१३६।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (शिष्टेष्टः) शिष्ट आत्माओं के प्रिय होने से शिष्टेष्ट (पुष्टिदः) पालनकर्ता होने से पुष्टिद (पुष्टः) महाबलवान् होने से पुष्ट (स्पष्टः) प्रकट दिखने से स्पष्ट (स्पष्टाक्षरः) वाणी से स्पष्ट होने से स्पष्टाक्षर (क्षमः) समर्थ होने से क्षम (शत्रुघ्नः) कर्मशत्रु के नाशक होने से शत्रुघ्न (अप्रतिघः) शत्रुरहित होने से अप्रतिघ (अमोघः) सफल होने से अमोघ (प्रशास्ता) श्रेष्ठ उपदेशदाता होने से प्रशास्ता (शासिता) रक्षक होने से शासिता तथा (स्वभूः) आत्मस्वरूप की उपलब्धिकर्ता होने से स्वभू {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप शिष्ट आत्माओं के प्रिय होने से शिष्टेष्ट, पालनकर्ता होने से पुष्टिद, महाबलवान् होने से पुष्ट, प्रगट दिखने से स्पष्ट, वाणी के स्पष्ट होने से स्पष्टाक्षर, समर्थ होने से क्षम, कर्मशत्रु के नाशक होने से शत्रुघ्न, शत्रु रहित होने से अप्रतिघ, सफल होने से अमोघ, श्रेष्ठ उपदेशदाता होने से प्रशास्ता, रक्षक होने से शासिता तथा आत्मस्वरूप की उपलब्धिकर्ता होने से स्वभू कहे जाते हैं।

शान्तिनिष्ठो मुनिज्येष्ठः, शिवतातिः शिवप्रदः।
शान्तिदः शान्तिकृच्छान्तिः, कान्तिमान् कामितप्रदः।।१३७।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (शान्तिनिष्ठः) शान्तियुक्त होने से शान्तिनिष्ठ (मुनिज्येष्ठः) मुनियों के प्रमुख होने से मुनिज्येष्ठ (शिवतातिः) कल्याणपरम्परा को प्राप्त होने से शिवताति (शिवप्रदः) कल्याणदाता होने से शिवप्रद (शान्तिदः) शान्तिदायक होने से शान्तिद (शान्तिकृत्) शान्तिकर्ता होने से शान्तिकृत् (शान्तिः) शान्तभावयुक्त होने से शान्ति (कान्तिमान) कान्तियुक्त होने से कान्तिमान तथा (कामितप्रदः) इच्छित पदार्थ प्रदाता होने से कामितप्रद {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप शान्तियुक्त होने से शान्तिनिष्ठ, मुनियों में प्रमुख होने से मुनिज्येष्ठ, कल्याणपरम्परा को प्राप्त होने से शिवताति, कल्याणदाता होने से शिवप्रद, शान्तिदायक होने से शान्तिद, शान्तिकर्ता होने से शान्तिकृत्, शान्तभावयुक्त होने से शान्ति, कान्तियुक्त होने से कान्तिमान् तथा इच्छित पदार्थ प्रदाता होने से कामितप्रद कहे जाते हैं।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

श्रेया- निधि- रधिष्ठान-, मपतिष्ठः प्रतिष्ठितः।
सुस्थिरः स्थविरः स्थास्नुः प्रथीयान् प्रथितः पृथुः।।१३८।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (श्रेयोनिधिः) कल्याण के भण्डार होने से श्रेयोनिधि (अधिष्ठानम्) धर्म के आधार रूप होने से अधिष्ठानम् (अप्रतिष्ठः) अन्यकृत प्रतिष्ठारहित होने से अप्रतिष्ठ (प्रतिष्ठितः) कीर्तियुक्त होने से प्रतिष्ठित (सुस्थिरः) स्वरूप में अत्यन्त स्थिर रहने से सुस्थिर (स्थाविरः) विहाररहित होने से स्थाविर (स्थास्नुः) अचल होने से स्थास्नु (प्रथीयान्) विस्तृत होने से प्रथीयान् (प्रथितः) अतिशय प्रसिद्ध होने से प्रथित तथा (पृथुः) ज्ञानादिगुणों से महान् होने से पृथु {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप कल्याण के भण्डार होने से श्रेयोनिधि, धर्म के आधार रूप होने से अधिष्ठानम्, अन्यकृत प्रतिष्ठारहित होने से अप्रतिष्ठ, कीर्तियुक्त होने से प्रतिष्ठित, स्वरूप में अत्यन्त स्थिर रहने से सुस्थिर, विहाररहित होने से स्थाविर, अचल होने से स्थास्नु, विस्तृत होने से प्रथीयान्, अतिशय प्रसिद्ध होने से प्रथित तथा ज्ञानादि गुणों से महान होने से पृथु कहे जाते हैं।

।। इति त्रिकालदर्श्यादिशतम्।।९।।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

दिग्वासा वातरसनो, निर्ग्रन्थेशो निरम्बरः।
निष्किञ्चनो निराशंसो, ज्ञान- चक्षु- रमो- मुहः।।१३९।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (दिग्वासाः) दिगम्बर होने से दिग्वासा (वातरसनः) वायुरूप करधनी के धारक होने से वातरसन (निर्ग्रन्थेशः) निर्ग्रन्थ ऋषियों के स्वामी होने से निर्ग्रन्थेश (दिगम्बरः) वस्त्ररहित होने से दिगम्बर (निष्किञ्चनः) परिग्रहरहित होने से निष्किञ्चन (निराशंसः) इच्छारहित होने से निराशंस (ज्ञानचक्षुः) ज्ञानरूपचक्षु के धारक होने से ज्ञानचक्षु तथा (अमोमुहः) अत्यन्त निर्मोह होने से अमोमुह {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप दिगम्बर होने से दिग्वासा, वायुरूप करधनी के धारक होने से वातरसन, निर्ग्रन्थ ऋषियों के स्वामी होने से निर्ग्रन्थेश, वस्त्ररहित होने से दिगम्बर, परिग्रहरहित होने से निष्किञ्चन, इच्छारहित होने से निराशंस, ज्ञानरूप नेत्र के धारक होने से ज्ञानचक्षु तथा अत्यन्त निर्मोह होने से अमोमुह कहे जाते हैं।

तेजो- राशि- रनन्तौजा, ज्ञानाब्धिः शील- सागरः।
तेजो- मयोऽमितज्योति, र्ज्योति मूर्तिस्तमो-पहः।।१४०।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (तेजोराशिः) तेजःपुञ्ज रूप होने से तेजोराशि (अनन्तौजाः) अनन्त ओज {प्रताप} के स्वामी होने से अनन्तौज (ज्ञानाब्धिः) ज्ञान के सागर होने से ज्ञानाब्धि (शीलसागरः) शील के सागर होने से शीलसागर (तेजोमयः) तेजःस्वरूप होने से तेजोमय (अमितज्योतिः) अपरिमित ज्योति के धारक होने से अमितज्योति (ज्योतिर्मूर्तिः) भासमान होने से ज्योतिर्मूर्ति तथा (तमोऽपहः) अज्ञानान्धकर के नाशक होने से तमोऽपह {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप तेजःपुञ्जरूप होने से तेजोराशि, अनन्त ओज (प्रताप) के स्वामी होने से अनन्तौज, ज्ञान के समुद्र होने से ज्ञानाब्धि, शील (सत्स्वभाव) के सागर होने से शीलसागर, तेजः स्वरूप होने से तेजोमय, अपरिमित ज्योतिधारक होने से अमितज्योति, भासमान होने से ज्योतिमूर्ति तथा अज्ञानान्धकार के नाशक होने से तमोऽपह कहे जाते हैं।

जगच्चूडा- मणि- र्दीप्तः, शंवान्- विघ्न- विनायकः।
कलिघ्नः कर्मशत्रुघ्नो, लोकालोक- प्रकाशकः।।१४१।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (जगच्चूडामणिः) मस्तक पर चूड़ामणि के समान त्रिलोक के शिखर पर शोभायमान होने से जगच्चूडामणि (दीप्तः) प्रकाशमान् होने से दीप्त, (शंवान्) अत्यन्त सुखी होने से शंवान् (विघ्नविनायकः) विघ्ननाशक होने से विघ्नविनायक

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

(कलिघ्नः) विसंवाद के विघातक होने से कलिघ्न (कर्मशत्रुघ्नः) कर्मशत्रु के हर्ता से कर्मशत्रुघ्न तथा (लोकालोकप्रकाशकः) लोक और अलोक के विशद विवेचक होने से लोकालोकप्रकाशक {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप मस्तक पर चूड़ामणि के समान त्रिलोक के शिखर पर शोभायमान होने से जगच्चूड़ामणि, प्रकाशमान् होने से दीप्त, अत्यन्त सुखी होने से शंवान्, विघ्ननाशक होने से विघ्नविनायक, विसंवाद विघातक होने से कलिघ्न, कर्मशत्रु के हर्ता होने से कर्मशत्रुघ्न तथा लोकालोक के विशद-विवेचक होने से लोकालोकप्रकाशक कहे जाते हैं।

अनिद्रालु- रतन्द्रालु, जागरूकः प्रमामयः।
लक्ष्मीपति र्जगज्ज्योति, र्धर्मराजः प्रजाहितः।।१४२।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् आप (अनिद्रालुः) निद्रारहित होने से अनिद्रालु (अतन्द्रालुः) प्रमादरहित होने से अतन्द्रालु (जागरूकः) स्वरूप की सिद्धि हेतु जागरणशील रहने से जागरूक (प्रमामयः) प्रभा {ज्ञान} स्वरूप होने से प्रमामय (लक्ष्मीपतिः) अन्तरङ्ग और बाह्य लक्ष्मी से विभूषित होने से लक्ष्मीपति (जगज्ज्योतिः) जगत को प्रकाशित करने से जगज्ज्योति (धर्मराजः) धर्म के शासक होने से धर्मराज तथा (प्रजाहितः) प्रजा के हितकारी होने से प्रजाहित {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप निद्रारहित होने से अनिद्रालु, प्रमादरहित होने से अतन्द्रालु, स्वरूप की सिद्धिहेतु जागरणशील रहने से जागरूक, प्रमा (ज्ञान) स्वरूप होने से प्रमामय, अन्तरङ्ग और बाह्य लक्ष्मी से विभूषित होने से लक्ष्मीपति, जगत् को प्रकाशित करने से जगज्ज्योति, धर्म के शासक होने से धर्मराज तथा प्रजा के हितकारी होने से प्रजाहित कहे जाते हैं।

मुमुक्षु- र्बन्ध- मोक्षज्ञो, जिताक्षो जित- मन्मथः।
प्रशान्त- रस- शैलूषो, भव्य- पेटक- नायकः।।१४३।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (मुमुक्षुः) मुक्ति की कामना करने से मुमुक्षु (बन्धमोक्षज्ञः) बन्ध वा मोक्ष के स्वरूप की ज्ञाता होने से बन्धमोक्षज्ञ (जिताक्षः) इन्द्रियविजेता होने से जिताक्ष (जितमन्मथः) कामविजेता होने से जितमन्मथ (प्रशान्तरसशैलूषः) महान् शान्तरस के प्रदर्शक शैलूष {नट} के समान होने से प्रशान्तरसशैलूष तथा (भव्यपेटकनायकः) भव्यवृन्द के नायक होने से भव्यपेटकनायक {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप मुक्ति की कामना करने से मुमुक्ष, बन्ध व मोक्ष के स्वरूप के ज्ञाता होने से बन्धमोक्षज्ञ, इन्द्रिय विजेता होने से जिताक्ष, कामविजेता होने से

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

जितमन्मथ, महान् शान्तरस के प्रदर्शक शैलूष (नट) के समान होने से प्रशान्तरस शैलूष तथा भव्यवृन्द के नायक होने से भव्यपेटकनायक कहे जाते हैं।

मूलकर्ताऽखिल- ज्योति, र्मलघ्नो मूल- कारणम्।
आप्तो वागीश्वरः श्रेयाञ्, छ्रायसोक्ति र्निरुक्तवाक्।।१४४।।

अन्वयार्थ :- हे भवगन् ! आप (मूलकर्ता) आगम के मूलकर्ता होने से मूलकर्ता (अलिखज्योतिः) समस्त जगत के प्रकाशक होने से अखिलज्योति (मलघ्नः) कर्ममल के नाशक होने से मलघ्न (मूलकारणम्) मोक्षमार्ग के मूलकारण होने से मूलकारण (आप्तः) यथार्थ वक्ता होने से आप्त (वागीश्वरः) वाणी के स्वामी होने से वागीश्वर (श्रेयान्) कल्याणस्वरूप होने से श्रेयान् (श्रायसोक्तिः) वाणी के कल्याणस्वरूप होने से श्रायसोक्ति तथा (निरुक्तवाक्) सार्थक वचनयुक्त होने से निरुक्तवाक् {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन ! आप आगम के मूलकर्ता होने से मूलकर्ता, समस्त जगत् के प्रकाशक होने से अखिल ज्योति, कर्ममल के नाशक होने से मलघ्न, मोक्षमार्ग के मूलकारण होने से मूलकारण, यथार्थवक्ता होने से आप्त, वाणी के स्वामी होने से वागीश्वर, कल्याणास्वरूप होने से श्रेयान्, वाणी के कल्याणस्वरूप होने से श्रायसोक्ति तथा सार्थक वचनयुक्त होने से निरुक्तवाक् कहे जाते हैं।

प्रवक्ता वचसामीशो, मारजिद्- विश्वभाववित्।
सुतनुस्तनु- निर्मुक्तः, सुगतो हत- दुर्नयः।।१४५।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (प्रवक्ता) उत्तमवक्ता होने से प्रवक्ता (वचसामीशः) वाणी के स्वामी होने से वचसामीश (मारजित्) कामविजेता होने से मारजित् (विश्वभाववित्) समस्त पदार्थों के ज्ञाता होने से विश्वभाववित् (सुतनुः) उत्तम शरीरयुक्त होने से सुतनु (तनुनिर्मुक्तः) अशरीर होने से तनुनिर्मुक्त (सुगतः) प्रशस्त ज्ञानवान् होने से सुगत तथा (हतदुर्नय) एकान्त पक्षों के नाशक होने से हतदुर्नय {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप उत्तम वक्ता होने से प्रवक्ता, वाणी के स्वामी होने से वचसामीश, कामविजेता होने से मारजित्, समस्त पदार्थों के ज्ञाता होने से विश्वभाववित् उत्तमशरीरयुक्त होने से सुतनु, अशरीर होने से तनुमिर्मुक्त, प्रशस्तज्ञानवान् होने से सुगत तथा एकान्तपक्षों के नाशक होने से हतदुर्जय कहे जाते हैं।

श्रीशः श्रीश्रिता- पादाब्जो, वीत- भीरभयङ्कर।
उत्सन्नदोषो निर्विघ्नो, निश्चलो लोक- वत्सलः।।१४६।।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (श्रीशः) लक्ष्मी के अधिपति होने से श्रीश (श्रीश्रितपादाब्जः) लक्ष्मी के द्वारा आपके चरणकमलों का आश्रय लेने से श्रीश्रितपादाब्ज (वीतभीः) भयरहित होने से वीतभी (अभयङ्करः) अभयप्रदानकर्ता होने से अभयङ्कर (उत्सन्नदोषः) दोषों के नाशक होने से उत्सन्नदोष (निर्विघ्नः) अन्तराकर्म के विघातक होने से निर्विघ्न (निश्चलः) योगकृत चञ्चलतारहित होने से निश्चल तथा (लोकवत्सलः) विश्वबन्धु होने से लोकवत्सल {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप लक्ष्मी के अधिपति होने से श्रीश, लक्ष्मी द्वारा चरणकमलों को आश्रय लेने से श्रीश्रितपादाब्ज, भयरहित होने से वीतभी, अभयप्रदानकर्ता होने से अभयङ्कर, दोषों के नाशक होने से उत्सन्नदोष, अन्तरायकर्म के विघातक होने से निर्विघ्न, योगकृत चंचलतारहित होने से निश्चल तथा विश्वबन्धु होने से लोकवत्सल कहे जाते हैं।

लोकोत्तरो लोकपति, र्लोकचक्षु- रपारधीः।
धीर- धीर्बुद्ध- सन्मार्गः, शुद्धः सुनृत- पूतवाक्।।१४७।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (लोकोत्तरः) समस्त लोक में उत्कृष्ट होने से लोकोत्तर (लोकपतिः) लोकत्रय के स्वामी होने से लोकपति (लोकचक्षुः) सर्वलोक के युगपत् दृष्टा होने से लोकचक्षु (अपारधीः) अनन्तज्ञान के धारक होने से अपारधी (धीरधीः) ज्ञान के सदा स्थिर रहने से धीरधी (बुद्धसन्मार्गः) प्रशस्त मोक्षमार्ग के ज्ञाता होने से बुद्धसन्मार्ग (शुद्धः) शुद्ध आत्मपरिणति को सम्प्राप्त होने से शुद्ध तथा (सुनृतपूतवाक्) वाणी के यथार्थ और पवित्र होने से सुनृतपूतवाक् {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप समस्त लोक में उत्कृष्ट होने से लोकोत्तर, लोकत्रय के स्वामी होने से लोकपति, सबलोक के युगपत् दृष्टा होने से लोकचक्षु, अनन्तज्ञान के धारक होने से अपारधी, ज्ञान के सदा स्थिर रहने से धीरधी, प्रशस्तमोक्षमार्ग के ज्ञाता होने से बुद्धसन्मार्ग, शुद्ध आत्मपरिणति को सम्प्राप्त होने से शुद्ध तथा वाणी के यथार्थ और पवित्र होने से सुनृतपूतवाक् कहे जाते हैं।

प्रज्ञा- पार- मितः प्राज्ञो, यति- र्नियमितेन्द्रियः।
भदन्तो भद्र- कृद्भद्रः, कल्पवृक्षो वरप्रदः।।१४८।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (प्रज्ञापारमितः) परिपूर्ण ज्ञान के पारङ्गत होने से प्रज्ञापारमित (प्राज्ञः) अतिशय बुद्धिमान होने से प्राज्ञ (यतिः) मोक्ष हेतु प्रयत्नवान् होने से यति (नियमितेन्द्रियः) इन्द्रियविजेता होने से नियमितेन्द्रिय (भदन्तः) पूज्य होने से भदन्त

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

(भद्रकृत्) कल्याणकारी होने से भद्रकृत् (भद्रः) कल्याणरूप होने से भद्र (कल्पवृक्षः) इच्छित पदार्थों के दाता होने से कल्पवृक्ष तथा (वरप्रदः) इष्ट पदर्थों की प्राप्ति करा देने से वरप्रद {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप परिपूर्ण ज्ञान के पारङ्गत होने से प्रज्ञापारमित, अतिशय बुद्धिमान् होने से प्राज्ञ, मोक्ष हेतु प्रयत्नवान् होने से यति, इन्द्रियविजेता होने से नियमितेन्द्रिय, पूज्य होने से भदन्त, कल्याणकारी होने से भद्रकृत्, कल्याणरूप होने से भद्र, इच्छित पदार्थों के दाता होने से कल्पवृक्ष तथा इष्ट पदार्थों की प्राप्ति करा देने से वरप्रद कहे जाते हैं।

समुन्- मूलितकर्मारिः, कर्म- काष्ठाऽऽशुशु- क्षणिः।
कर्मण्यः कर्मठः प्रांशु, र्हेया- देय- विचक्षणः।।१४९।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (समुन्मूलितकर्मारिः) कर्मशत्रुओं के उच्छेदक होने से समुन्मूलितकर्मारि (कर्मकाष्ठाशुशुक्षणिः) कर्मरूपकाष्ठ के दहन हेतु अग्नितुल्य होने से कर्मकाष्ठाशुशुक्षणि (कर्मण्यः) कार्यकुशल होने से कर्मण्य (कर्मठः) कार्य करने में सदा सन्नद्ध एवं सफल होने से कर्मठ (प्रांशुः) सर्वोन्नत होने से प्रांशु तथा (हेयादेयविचक्षणः) हेय और उपादेय पदार्थों के ज्ञाता होने से हेयादेयविचक्षण {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप कर्मशत्रुओं के उच्छेदक होने से समुन्मूलितकर्मारि, कर्मरूप काष्ठ के दहन हेतु अग्नितुल्य होने से कर्मकाष्ठाशुशुक्षणि, कार्यकुशल होने से कर्मण्य, कार्य करने में सदा सन्नद्ध एवं सफल होने में कर्मठ, सर्वोन्नत होने से प्रांशु तथा हेय और उपादेय पदार्थों के ज्ञाता होने से हेयादेय विचक्षण कहे जाते हैं।

अनन्त- शक्ति- रच्छेद्यस्-, त्रिपुरारिस्त्रि- लोचनः।
त्रिनेत्रस्त्र्यम्बकस्त्र्यक्षः, केवल- ज्ञान- वीक्षणः।।१५०।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (अनन्तशक्तिः) अनन्तशक्ति सम्पन्न होने से अनन्तशक्ति (अच्छेद्यः) किसी प्रकार से छिन्न-भिन्न न हो सकने से अच्छेद्य (त्रिपुरारिः) जन्मजरामरणरूप नगरत्रय के नाशक होने से त्रिपुरारि, (त्रिलोचनः त्रिनेत्रः त्र्यम्बकः त्र्यक्षः) त्रिकालवर्ती समस्त पदार्थों के ज्ञाता दृष्टा होने से त्रिलोचन, त्र्यम्बक, त्रिनेत्र और त्र्यक्ष तथा (केवलज्ञानवीक्षणः) केवलज्ञान द्वारा जगत् के ज्ञाता होने से केवलज्ञानवीक्षण {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप अनन्तशक्तिसम्पन्न होने से अनन्तशक्ति, किसी प्रकार

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

से छिन्न-भिन्न न हो सकने से अच्छेद्य, जन्मजरामरणरूप नगरत्रय के नाशक होने से त्रिपुरारि, त्रिकालवर्ती समस्त पदार्थों के ज्ञाता दृष्टा होने से त्रिलोचन त्र्यम्बक, त्रिनेत्र और त्र्यक्ष तथा केवलज्ञान द्वारा जगत के ज्ञाता होने से केवलज्ञानवीक्षण कहे जाते हैं।

समन्तभद्रः शान्तारि, धर्माचार्यो दयानिधिः।
सूक्ष्मदर्शी जितानङ्गः, कृपालु- धर्म- देशकः।।१५१।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (समन्तभद्रः) सभी ओर से मङ्गलमय होने से समन्तभद्र (शान्तारिः) कर्मशत्रु के विजेता होने से शान्तारि (धर्माचार्यः) धर्म के व्यवस्थापक होने से धर्माचार्य (दयानिधिः) दया के भण्डार होने से दयानिधि (सूक्ष्मदर्शी) सूक्ष्मतत्वों के ज्ञाता होने से सूक्ष्मदर्शी (जितानङ्गः) काम के विजेता होने से जितानङ्ग (कृपालुः) दयावान् होने से कृपालु तथा धर्मदेशकः धर्मतत्व के उपदेशक होने से धर्मदेशक {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप सभी ओर से मङ्गलमय होने से समन्तभद्र, कर्मशत्रु के विजेता होने से शान्तारि, धर्म के व्यवस्थापक होने से धर्माचार्य, दया के भण्डार होने से दयानिधि, सूक्ष्म तत्वों के ज्ञाता होने से सूक्ष्मदर्शी, कर्मों के विजेता होने से जितानङ्ग, दयावान् होने से कृपालु तथा धर्मतत्व के उपदेशक होने से धर्मदेशक कहे जाते हैं।

शुभंयु सुखसाद्भूतः, पुण्य- राशि- रनामयः।
धर्मपालो जगत्पालो, धर्म- साम्राज्य- नायकः।।१५२।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (शुभंयुः) शुभयुक्त होने से शुभंयु (सुखसाद्भूतः) आत्मानन्द के अधीन होने से सुखसाद्भूत (पुण्यराशिः) पुण्य के पुंज होने से पुण्यराशि (अनामयः) सर्वदा निरोग रहने से अनायग (धर्मपालः) रत्नत्रय धर्म के रक्षक होने से धर्मपाल (जगत्पालः) जगत के रक्षक होने से जगत्पाल तथा (धर्मसाम्राज्यनायकः) धर्मरूप साम्राज्य के नेता होने से धर्मसाम्राज्यनायक {कथ्यते = कहे जाते हैं}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप शुभयुक्त होने से शुभंयु, आत्मानन्द के अधीन होने से सुखसाद्भूत, पुण्य के पुंज होने से पुण्यराशि, सर्वदा निरोग हरने से अनामय, रत्नत्रयधर्म के रक्षक होने से धर्मपाल, जगत् के रक्षक होने से जगत्पाल तथा धर्मरूप साम्राज्य के नेता होने से धर्मसाम्राज्यनायक कहे जाते हैं।

।। इति दिग्वासाद्यष्टोत्तरशतम् ।१०।।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

धाम्नांपते तवामूनि, नामान्या- गमकोविदैः।
समुच्चितान् यनुध्यायन्, पुमान् पूतस्मृति- र्भवेत्।।१५३।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! आप (धाम्नाम्पते) हे महातेजस्वी जिनेन्द्र (आगमकोविदैः) आगम के ज्ञाता विद्वानों के द्वारा (समुच्चितानि) सङ्कलित (अमूनि) इन (तव) आपके (नामानि) नामों को (अनुध्यानन्) ध्यानकर्ता (पुमान्) मानव (पूतस्मृतिः) विशिष्ट स्मरणशक्तिसम्पन्न {भवेत् = हो जाता है}।

अर्थ :- हे महातेजस्वी जिनेन्द्र ! आप आगम के ज्ञाता विद्वानों के द्वारा सङ्कलित आपके इन एक हजार आठ नामों का जो मानव ध्यान करता है उसकी स्मरणशक्ति विशेष पवित्र हो जाती है।

गोचरोऽपि गिरामासां त्व- मवाग्गोचरो मतः।
स्तोता तथाप्यसन्दिग्धं त्वत्तोऽभीष्टफलं भजेत्।।१५४।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! (आसाम्) इन (गिराम्) शब्दों के (गोचरः) वर्ण्य {सन्} होते हुए (अपि) भी (त्वम्) आप (अवाग्गोचरः) वाणी के अगोचर (मतः) माने गये हो (तथापि) तो भी (स्तोता) स्तवनकर्ता (त्वत्तः) आपसे (असंदिग्धम्) निस्सन्देह (अभीष्टफलम्) अभिलषित फल को (भजेत्) पाता है।

अर्थ :- हे भगवन् ! इन शब्दों के वर्ण्य होते हुए भी आप वाणी के अगोचर माने गये हो, तो भी, स्तवनकर्ता आपसे निःसन्देह अभिलषित फल को पाता है।

त्वमतोऽसि जगद्- बन्धुस्, त्वमतोऽसि जगद् भिषक्।
त्वमतोऽसि जगद्धाता, त्वतमोऽसि जगद्धितः।।१५५।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! (अतः) इसलिये (त्वम्) आप (जगद्बन्धुः) जगत् के बन्धु (असि) हो (त्वम्) आप (जगद्भिषक्) जगद्वैद्य (असि) हो (जगद्धाता) जगद्रक्षक (असि) हो तथा (त्वम्) आप (जगद्धितः) जगद्धितैषी {असि = हो}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप जगत् के बन्धु, जगद्वैद्य, जगद्रक्षक तथा जगद्धितैषी हो।

त्व-मेकं जगतां ज्योतिस्, त्वं द्विरूपोप- योगभाक्।
त्वं त्रिरूपैकमुक्त्यङ्गः, स्वोत्थानन्त- चतुष्टयः।।१५६।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! (त्वम्) आप (एकम्) अनन्य (जगताम्ज्योतिः) जगत् के प्रकाशक ज्ञानज्योतिस्वरूप (त्वम्) आप (द्विरूपोपयोगभाक्) ज्ञानदर्शन रूप द्विविध उपयोग

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

के धारक (त्वम्) आप (त्रिरूपैकमुक्त्यङ्गम्) त्रिविध मोक्षमार्ग के अङ्गस्वरूप तथा (सोत्थानन्तचतुष्टयः) आत्मोत्थ अनन्तचतुष्टय के धारक {असि = हो}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप अनन्य, जगत के प्रकाशक, ज्ञानज्योतिस्वरूप, ज्ञानदर्शनरूप द्विविध उपयोग के धारक, त्रिविध मोक्षमार्ग के अङ्गस्वरूप तथा आत्मोत्थ अनन्तचतुष्टय के धारक हो।

त्वं पञ्च- ब्रह्म- तत्त्वात्मा, पञ्चकल्याण- नायकः।
षड्भेद- भाव- तत्त्वज्ञस्, त्वं सप्तनयसङ्ग्रहः।।१५७।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! (त्वम्) आप (पञ्चब्रह्मतत्वात्मा) पञ्चपरमेष्ठिस्वरूप (पञ्चकल्याणकनायकः) पञ्च कल्याणकों के स्वामी (षड्भेदभावतत्वज्ञः) जीवादि छह द्रव्यों के स्वरूप के ज्ञाता तथा (सप्तनयसंग्रहः) नैगमादि सातों नयों के उपदेशक {असि = हो}।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप पञ्चपरमेष्ठी स्वरूप, पञ्चकल्याणकों के स्वामी, जीवादि छह द्रव्यों के स्वरूप के ज्ञाता तथा नैगमादि सातों नयों के उपदेशक हैं।

दिव्याष्ट- गुण- मूर्तिस्त्वं, नव- केवल- लब्धिकः।
दशावतार- निर्धार्यो, मां पाहि परमेश्वर!।।१५८।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! (त्वम्) आप (दिव्याष्टगुणमूर्तिः) सम्यक्तवादि अष्टाविध गुणस्वरूप (नवकेवललब्धिकः) केवल ज्ञान उत्पन्न होने पर प्राप्त होने वाली नो क्षायिकलब्धियों से संयुक्त तथा (दशावतारनिर्धार्यः) महाबल आदि दश भवों से निर्धारयोग्य {असि = हो}। हे परमेश्वर, (माम्) मुझ भक्त की (पाहि) रक्षा कीजिये।

अर्थ :- हे भगवन् ! आप सम्यक्त्वादि अष्टविध गुणस्वरूप, केवलज्ञान उत्पन्न होने पर प्राप्त होने वाली नो क्षयिक लब्धियों से संयुक्त तथा महाबल आदि दश भवों से निर्धार योग्य हो। हे परमेश्वर मुझ भक्त की रक्षा कीजिये।

युष्मन्नामा- वली- दृब्ध-, विलसत्स्तोत्र- मालया।
भवन्तं वरिवस्यामः, प्रसीदानु- गृहाण नः।।१५९।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! (यष्मन्नमावलीदृब्धविलसत्स्तोत्रमालया) आपकी नामावलि से गुम्फित सुन्दर स्तोत्रमाला से (नः) हम (भवन्तम्) आपकी (वरिवस्यामः) आराधना करते हैं (प्रसीद) प्रसन्न होइये तथा (अनुग्रहाण) अनुग्रह कीजिये।

अर्थ :- हे भगवन ! आपकी नामावलि से गुम्फित सुन्दर स्तोत्रमाल से हम आपकी आराधना करते हैं। प्रसन्न होइये तथा अनुग्रह कीजिये।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

इदं स्तोत्र- मनुस्मृत्य, पूतो भवति भाक्तिकः।
यः संपाठं पठत्येनं, स स्यात्कल्याण- भाजनम्।।१६०।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! (भाक्तिकः) भक्त मानव (इदम्) इस (स्तोत्रम्) स्तोत्र को (अनुस्मृतय) स्मरण करके (पूतः) पवित्र (भवति) हो जाता है तथा (यः) जो (एनम्) इस (संपाठम्) प्रशस्त पाठको (पठति) पढ़ता है (सः) वह (कल्याणभाजनम्) कल्याण का पात्र (स्यात्) होता है।

अर्थ :- हे भगवन् ! भक्त मानव इस स्तोत्र को स्मरण करके पवित्र हो जाता है तथा जो इस प्रशस्त पाठ को पढ़ता है वह कल्याण का पात्र होता है।

ततः सदेदं पुण्यार्थी, पुमान् पठतु पुण्यधीः।
पौरुहूतीं श्रियं प्राप्तुं, परमा- मभि- लाषुकः।।१६१।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! (ततः) इसलिये (पुण्यार्थी) पुण्य का इच्छुक (पुण्यधीः) निर्मल बुद्धि वाला तथा (परमाम्) प्रशस्त (पौरुहूतीम्) इन्द्र सम्बन्धी (श्रियम्) विभूति को (प्राप्तुम्) पाने को (अभिलाषुकः) इच्छुक (सन्) होता हुआ मानव (इदम्) इस स्तोत्र को (सदा) सर्वदा (पठतु) पढ़े।

अर्थ :- इसलिये पुण्य का इच्छुक निर्मल बुद्धिवाला, तथा प्रशस्त इन्द्र सम्बन्धी विभूति को पाने का इच्छुक होता हुआ मानव इस स्तोत्र को सदा पढ़े।

स्तुत्वेति मघवा देवं, चराचर- जगद्गुरुम्।
ततस्तीर्थविहारस्य, व्यधात्प्रस्तावना- मिमाम्।।१६२।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! (इति) इस प्रार (मघवा) इन्द्र ने (चराचरजगद्गुरुम्) स्थावर और जगम प्राणियों के गुरु (देवम्) जिनेन्द्र देव की (स्तुत्वा) स्तुति करके (ततः) पश्चात् (तीर्थविहारस्य) मोक्षमार्ग के उपदेशार्थ विविध प्रान्तों में विहारकर्ता जिनेन्द्रदेव की (इमाम्) यह (प्रस्तावनाम्) प्रार्थना (व्यधात्) की।

अर्थ :- इन्द्र से स्थावर और जंगम प्राणियों के गुरु जिनेन्द्र देव की इस प्रकार स्तुति करके, पश्चात् मोक्षमार्ग के उपदेशार्थ विविध प्रान्तों में विहारकर्ता जिनेन्द्रदेव की प्रार्थना की।

स्तुतिः पुण्य- गुणोत्कीर्तिः, स्तोता भव्यः प्रसन्नधीः।
निष्ठितार्थो भवांस्तुत्यः फलं नैश्रेयसं सुखम्।।१६३।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! (पुण्यगुणोत्कीर्तिः) पवित्र गुणों का प्रशंसापूर्वक कथन।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

(स्तुतिः) स्तुति (प्रसन्नधीः) निर्मल बुद्धि वाला (भव्यः) भव्य (स्तोता) स्तुतिकर्ता (निष्ठितार्थः) समस्त पुरुषार्थसम्पन्न (भवान्) आप (स्तुत्यः) स्तवनीय तथा (नैश्रेयसं सुखम्) मोक्ष सुख (फलम्) स्तुति का फल (अस्ति) है।

अर्थ :- पवित्र गुणों का प्रशंसापूर्वक कथन स्तुति, निर्मल बुद्धिवाला भव्य स्तुतिकर्ता, समस्त पुरुषार्थसम्पन्न आप स्तवनीय तथा मोक्षसुख स्तुति का फल है।

यः स्तुत्यो जगतां त्रयस्य न पुनः, स्तोता स्वयं कस्यचित्
ध्येयो योगिजनस्य यश्च नतरां, ध्याता स्वयं कस्यचित्।
यो नन्तॄन् नयते नमस्कृतिमलं, नन्तव्यपक्षेक्षणः
स श्रीमान् जगतां त्रयस्य च गुरु, र्देवः पुरुः पावनः।।१६४।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! (यः) जो (जगतां त्रयस्य) तीनों लोकों के प्राणियों का (स्तुत्यः) स्तवनीय (अस्ति) है (पुनः) किन्तु (यः) जो (स्वयं) स्वतः (कस्यचित्) किसी का (स्तोता) स्तवनकर्ता (न) नहीं है (यः) जो (नतराम्) सदा (योगिजनस्य) योगिजनों का (ध्येयः) ध्यान का विषय (अस्ति) है किन्तु (यः) जो (स्वयम्) स्वतः (कस्यचित्) किसी का (ध्याता) ध्यानकर्ता (नास्ति) नहीं है (यः) जो (नन्तव्यपक्षेक्षणः) नन्तव्य पक्ष का अन्वेषक होता हुआ (नन्तॄन्) समस्त महापुरुषों को (अलम्) उत्कृष्ट (नमस्कृतिम्) नमस्कार को (नयते) प्राप्त कराता है तथा (यः) जो (श्रीमान्) अन्तरङ्ग बहिरङ्ग लक्ष्मी से विभूषित होता हुआ (पावनः) अतिपवित्र (पुरुः) अरिहन्त देव (अस्ति) है (सः) वह (जगतां त्रयस्य) तीनों लोकों का (गुरुः) गुरु {अस्ति = है}।

अर्थ :- जो तीनों लोकों का स्तवनीय है किन्तु जो स्वयं किसी का स्तोता (स्तुतिकर्ता) नहीं है। जो सर्वदा योगियों का ध्येय है किन्तु जो स्वयं किसी का ध्यानकर्ता नहीं है। दुनिया में कोई भी जिसका नमस्करणीय नहीं है किन्तु जिसे समस्त दुनिया मस्तक झुकाती है तथा जो द्विविध लक्ष्मी से विभूषित, अतिपवित्र एवं अरिहन्त अवस्था सम्प्राप्त है वही लोकत्रय का 'गुरु' है।

तं देवं त्रिदशाधि- पार्चितपदं घातिक्षया- नन्तरं
प्रोत्थानन्त- चतुष्टयं जिनमित्रं भव्याब्जिनीनामिनम्।
मानस्तम्भ- विलोकनानतजगन् मान्यं त्रिलोकीपतिं
प्राप्ताचिन्त्यबहिर्विभूतिमनघं भक्त्या प्रवन्दामहे।।१६५।।

अन्वयार्थ :- हे भगवन् ! (त्रिदशाधिपार्चितपदम्) शत इन्द्रों द्वारा वन्दनीय चरण

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

(घातिक्षयानन्तरम्) घातिया कर्मों के क्षय के पश्चात् (प्रोत्थानचतुष्टयम्) उत्पन्न चार अनन्तचतुष्टयों को सम्प्राप्त (भव्याब्जिनीनाम् इनम्) भव्यरूप कमलों के विकाशार्थ सूर्य समान (मानस्तम्भविलोकनानतजगन्मान्यम्) मानस्तम्भ के अवलोकन से नम्रीभूत जनता के माननीय (त्रिलोकीपतिम्) लोकत्रय के स्वामी (प्राप्ताचिन्त्यबहिर्विभूतिम्) समवसरणरूप अनुपम विभूति को सम्प्राप्त (अनघम्) निर्दोष (तम्) उस प्रसिद्ध (इमम्) इस (जिनं देवम्) जिनेन्द्रदेव को (भक्त्या) भक्ति से (प्रवन्दामहे) हम सब नमस्कार करते हैं।

अर्थ :-शत इन्द्रों द्वारा वन्दनीय, घातिया कर्मों के क्षय के पश्चात् उत्पन्न चार अनन्त चतुष्टयों को सम्प्राप्त, भव्यरूप कमलों के विकाशार्थ सूर्यसमान, मानस्तम्भ के अवलोकन से नम्रीभूत जनता के माननीय, लोकत्रय के स्वामी, समवसरणरूप अनुपम विभूति को सम्प्राप्त तथा निर्दोष उस प्रसिद्ध जिनेन्द्रदेव को भक्ति से हम सब नमस्कार करते हैं।

।। इति श्रीभगवज्जिनसहस्रनामस्तोत्रं समाप्तम् ।।

वज्रपंजरस्तोत्रम्

परमेष्ठी नमस्कारं सारं नवपदात्मकम्।
आत्म रक्षाकरं मंत्रं पंजरं सस्मराम्यहम्।।
ॐ णमो अहंताणं शिर स्कन्ध शिरसंस्थितम्।
ॐ णमो सिद्धाणं मुखो मुख पटंवरम्।।
ॐ णमो आइरियाणं अंग रक्षाति सायिणीम्।
ॐ णमो उवज्झायाणं आयुधं हस्तोयोर्दृढम्।।
ॐ णमो लोए सव्वासाहूणं मोचके पादयोः शुभ।
एसो पंच णमोयारो शिखवज्रमयी तले।।
सव्वपावप्पणससणो शिवज्रो वज्रमयो मही।
मंगलाणं च सव्वेसिं खातिरागादि खातका।।
स्वाहा पंच पदं ज्ञेयं पढमं हवइ मंगलम्।
वज्रो परिवज्रमयं ज्ञेयं विधान देहरक्षणे।।
महाप्रभाव रक्षेयं क्षुद्रोपद्रव नाशिनी।
परमेष्ठिपदोद्भुत्ता कथितापूर्व सूरिभिः।।
यश्चैवं कुरुते रक्षा परमेष्ठि पदैः सदा।
तस्य तस्माद् भयं व्याधिराधिश्चापिकदापि न।।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

श्री जिनसहस्रनाम मंत्रावली

(१) ॐ ह्रीं अर्हं श्रीमते नमः ।
(२) ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंभुवे नमः ।
(३) ॐ ह्रीं अर्हं वृषभाय नमः ।
(४) ॐ ह्रीं अर्हं शंभवाय नमः ।
(५) ॐ ह्रीं अर्हं शंभवे नमः ।
(६) ॐ ह्रीं अर्हं आत्मभुवे नमः ।
(७) ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंप्रभाय नमः ।
(८) ॐ ह्रीं अर्हं प्रभवे नमः ।
(९) ॐ ह्रीं अर्हं भोक्त्रे नमः ।
(१०) ॐ ह्रीं अर्हं विश्वभुवे नमः ।
(११) ॐ ह्रीं अर्हं अपुनर्भवाय नमः ।
(१२) ॐ ह्रीं अर्हं विश्वात्मने नमः ।
(१३) ॐ ह्रीं अर्हं विश्वलोकेशाय नमः ।
(१४) ॐ ह्रीं अर्हं विश्वतश्चक्षुषे नमः ।
(१५) ॐ ह्रीं अर्हं अक्षराय नमः ।
(१६) ॐ ह्रीं अर्हं विश्वविदे नमः ।
(१७) ॐ ह्रीं अर्हं विश्वविद्येशाय नमः ।
(१८) ॐ ह्रीं अर्हं विश्वयोनये नमः ।
(१९) ॐ ह्रीं अर्हं अनश्वराय नमः ।
(२०) ॐ ह्रीं अर्हं विश्वदृश्वने नमः ।
(२१) ॐ ह्रीं अर्हं विभवे नमः ।
(२२) ॐ ह्रीं अर्हं धात्रे नमः ।
(२३) ॐ ह्रीं अर्हं विश्वेशाय नमः !
(२४) ॐ ह्रीं अर्हं विश्वलोचनाय नमः ।
(२५) ॐ ह्रीं अर्हं विश्वव्यापिने नमः ।
(२६) ॐ ह्रीं अर्हं विधये नमः ।
(२७) ॐ ह्रीं अर्हं वेधसे नमः ।
(२८) ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वताय नमः ।
(२९) ॐ ह्रीं अर्हं विश्वतोमुखाय नमः ।
(३०) ॐ ह्रीं अर्हं विश्वकर्मणे नमः ।
(३१) ॐ ह्रीं अर्हं जगज्ज्येष्ठाय नमः ।
(३२) ॐ ह्रीं अर्हं विश्वमूर्तये नमः ।
(३३) ॐ ह्रीं अर्हं जिनेश्वराय नमः ।
(३४) ॐ ह्रीं अर्हं विश्वदृशे नमः ।
(३५) ॐ ह्रीं अर्हं विश्वभूतेशाय नमः ।
(३६) ॐ ह्रीं अर्हं विश्वज्योतिषे नमः ।
(३७) ॐ ह्रीं अर्हं अनीश्वराय नमः ।
(३८) ॐ ह्रीं अर्हं जिनाय नमः ।
(३९) ॐ ह्रीं अर्हं जिष्णवे नमः ।
(४०) ॐ ह्रीं अर्हं अमेयात्मने नमः ।
(४१) ॐ ह्रीं अर्हं विश्वरीशाय नमः ।
(४२) ॐ ह्रीं अर्हं जगत्पतये नमः ।
(४३) ॐ ह्रीं अर्हं अनंतजिते नमः ।
(४४) ॐ ह्रीं अर्हं अचिन्त्यात्मने नमः ।
(४५) ॐ ह्रीं अर्हं भव्यबंधवे नमः ।
(४६) ॐ ह्रीं अर्हं अबंधनाय नमः ।
(४७) ॐ ह्रीं अर्हं युगादिपुरुषाय नमः ।
(४८) ॐ ह्रीं अर्हं ब्रह्मणे नमः ।
(४९) ॐ ह्रीं अर्हं पंचब्रह्ममयाय नमः ।
(५०) ॐ ह्रीं अर्हं शिवाय नमः ।
(५१) ॐ ह्रीं अर्हं पराय नमः ।
(५२) ॐ ह्रीं अर्हं परतराय नमः ।
(५३) ॐ ह्रीं अर्हं सूक्ष्माय नमः ।
(५४) ॐ ह्रीं अर्हं परमेष्ठिने नमः ।
(५५) ॐ ह्रीं अर्हं सनातनाय नमः ।
(५६) ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंज्योतिषे नमः ।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

(५७) ॐ ह्रीं अर्हं **अजाय** नमः ।
(५८) ॐ ह्रीं अर्हं **अजन्मने** नमः ।
(५९) ॐ ह्रीं अर्हं **ब्रह्मयोनये** नमः ।
(६०) ॐ ह्रीं अर्हं **अयोनिजाय** नमः ।
(६१) ॐ ह्रीं अर्हं **मोहारये** नमः ।
(६२) ॐ ह्रीं अर्हं **विजयिने** नमः ।
(६३) ॐ ह्रीं अर्हं **जेत्रे** नमः ।
(६४) ॐ ह्रीं अर्हं **धर्मचक्रिणे** नमः ।
(६५) ॐ ह्रीं अर्हं **दयाध्वजाय** नमः ।
(६६) ॐ ह्रीं अर्हं **प्रशांतारये** नमः ।
(६७) ॐ ह्रीं अर्हं **अनंतात्मने** नमः ।
(६८) ॐ ह्रीं अर्हं **योगिने** नमः ।
(६९) ॐ ह्रीं अर्हं **योगीश्वरार्चिताय** नमः ।
(७०) ॐ ह्रीं अर्हं **ब्रह्मविदे** नमः ।
(७१) ॐ ह्रीं अर्हं **ब्रह्मतत्त्वज्ञाय** नमः ।
(७२) ॐ ह्रीं अर्हं **ब्रह्मोद्याविदे** नमः ।
(७३) ॐ ह्रीं अर्हं **यतीश्वराय** नमः ।
(७४) ॐ ह्रीं अर्हं **सिद्धाय** नमः ।
(७५) ॐ ह्रीं अर्हं **बुद्धाय** नमः ।
(७६) ॐ ह्रीं अर्हं **प्रबुद्धात्मने** नमः ।
(७७) ॐ ह्रीं अर्हं **सिद्धार्थाय** नमः ।
(७८) ॐ ह्रीं अर्हं **सिद्धशासनाय** नमः ।
(७९) ॐ ह्रीं अर्हं **सिद्धसिद्धान्तविदे** नमः ।
(८०) ॐ ह्रीं अर्हं **ध्येयाय** नमः ।
(८१) ॐ ह्रीं अर्हं **सिद्धसाध्याय** नमः ।
(८२) ॐ ह्रीं अर्हं **जगद्धिताय** नमः ।
(८३) ॐ ह्रीं अर्हं **सहिष्णवे** नमः ।
(८४) ॐ ह्रीं अर्हं **अच्युताय** नमः ।
(८५) ॐ ह्रीं अर्हं **अनंताय** नमः ।
(८६) ॐ ह्रीं अर्हं **प्रभविष्णवे** नमः ।
(८७) ॐ ह्रीं अर्हं **भवोद्भवाय** नमः ।
(८८) ॐ ह्रीं अर्हं **प्रभूष्णवे** नमः ।
(८९) ॐ ह्रीं अर्हं **अजराय** नमः ।
(९०) ॐ ह्रीं अर्हं **अजर्याय**[1] नमः।
(९१) ॐ ह्रीं अर्हं **भ्राजिष्णवे** नमः ।
(९२) ॐ ह्रीं अर्हं **धीश्वराय** नमः ।
(९३) ॐ ह्रीं अर्हं **अव्ययाय** नमः ।
(९४) ॐ ह्रीं अर्हं **विभावसे** नमः ।
(९५) ॐ ह्रीं अर्हं **असंभूष्णवे** नमः ।
(९६) ॐ ह्रीं अर्हं **स्वयंभूष्णवे** नमः ।
(९७) ॐ ह्रीं अर्हं **पुरातनाय** नमः ।
(९८) ॐ ह्रीं अर्हं **परमात्मने** नमः ।
(९९) ॐ ह्रीं अर्हं **परमज्योतिषे** नमः ।
(१००) ॐ ह्रीं अर्हं **त्रिजगत् परमेश्वराय** नमः ।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीमदादि-त्रिजगत्-परमेश्वरांतशतनामधराऽर्हत् परमेष्ठिने नमो नमः ।।१।।

जलगंधादिक अष्ट द्रव्य से, प्रभु चरणों का अर्चन है।
अनर्घ पद धारी प्रभुवर को, मम सर्वस्व समर्पण है।
श्री मद आदि शत नामों से जिनवर का गुणगान करूँ।
सकल मनोरथ सिद्धीप्रद को बारम्बार प्रणाम करूँ।।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री मदादि–त्रिजगत्–परमेश्वरांत–शतनामधराऽर्हत् परमेष्ठिने नमः अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठांतर – 1. अयज्याय

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

(१) ॐ ह्रीं अर्हं दिव्य-भाषापतये नमः ।
(२) ॐ ह्रीं अर्हं दिव्याय नमः ।
(३) ॐ ह्रीं अर्हं पूतवाचे नमः ।
(४) ॐ ह्रीं अर्हं पूतशासनाय नमः ।
(५) ॐ ह्रीं अर्हं पूतात्मने नमः ।
(६) ॐ ह्रीं अर्हं परमज्योतिषे नमः ।
(७) ॐ ह्रीं अर्हं धर्माध्यक्षाय नमः ।
(८) ॐ ह्रीं अर्हं दमीश्वराय नमः ।
(९) ॐ ह्रीं अर्हं श्रीपतये नमः ।
(१०) ॐ ह्रीं अर्हं भगवते नमः ।
(११) ॐ ह्रीं अर्हं अर्हते नमः ।
(१२) ॐ ह्रीं अर्हं अरजसे नमः ।
(१३) ॐ ह्रीं अर्हं विरजसे नमः ।
(१४) ॐ ह्रीं अर्हं शुचये नमः ।
(१५) ॐ ह्रीं अर्हं तीर्थकृते नमः ।
(१६) ॐ ह्रीं अर्हं केवलिने नमः ।
(१७) ॐ ह्रीं अर्हं ईशानाय नमः ।
(१८) ॐ ह्रीं अर्हं पूजार्हाय नमः ।
(१९) ॐ ह्रीं अर्हं स्नातकाय नमः ।
(२०) ॐ ह्रीं अर्हं अमलाय नमः ।
(२१) ॐ ह्रीं अर्हं अनंतदीप्तये नमः ।
(२२) ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानात्मने नमः ।
(२३) ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंबुद्धाय नमः ।
(२४) ॐ ह्रीं अर्हं प्रजापतये नमः ।
(२५) ॐ ह्रीं अर्हं मुक्ताय नमः ।
(२६) ॐ ह्रीं अर्हं शक्ताय नमः ।
(२७) ॐ ह्रीं अर्हं निराबाधाय नमः ।
(२८) ॐ ह्रीं अर्हं निष्कलाय नमः ।
(२९) ॐ ह्रीं अर्हं भुवनेश्वराय नमः ।
(३०) ॐ ह्रीं अर्हं निरंजनाय नमः ।
(३१) ॐ ह्रीं अर्हं जगत् ज्योतिषे नमः ।
(३२) ॐ ह्रीं अर्हं निरुक्तोक्तये नमः ।
(३३) ॐ ह्रीं अर्हं निरामयाय नमः ।
(३४) ॐ ह्रीं अर्हं अचलस्थितये नमः ।
(३५) ॐ ह्रीं अर्हं अक्षोभ्याय नमः ।
(३६) ॐ ह्रीं अर्हं कूटस्थाय नमः ।
(३७) ॐ ह्रीं अर्हं स्थाणवे नमः ।
(३८) ॐ ह्रीं अर्हं अक्षयाय नमः ।
(३९) ॐ ह्रीं अर्हं अग्रण्यै नमः ।
(४०) ॐ ह्रीं अर्हं ग्रामण्यै नमः ।
(४१) ॐ ह्रीं अर्हं नेत्रे नमः ।
(४२) ॐ ह्रीं अर्हं प्रणेत्रे नमः ।
(४३) ॐ ह्रीं अर्हं न्यायशास्त्रकृते नमः ।
(४४) ॐ ह्रीं अर्हं शास्त्रे नमः ।
(४५) ॐ ह्रीं अर्हं धर्मपतये नमः ।
(४६) ॐ ह्रीं अर्हं धर्म्याय नमः ।
(४७) ॐ ह्रीं अर्हं धर्मात्मने नमः ।
(४८) ॐ ह्रीं अर्हं धर्मतीर्थकृते नमः ।
(४९) ॐ ह्रीं अर्हं वृषध्वजाय नमः ।
(५०) ॐ ह्रीं अर्हं वृषाधीशाय नमः ।
(५१) ॐ ह्रीं अर्हं वृषकेतवे नमः ।
(५२) ॐ ह्रीं अर्हं वृषायुधाय नमः ।
(५३) ॐ ह्रीं अर्हं वृषाय नमः ।
(५४) ॐ ह्रीं अर्हं वृषपतये नमः ।
(५५) ॐ ह्रीं अर्हं भर्त्रे नमः ।
(५६) ॐ ह्रीं अर्हं वृषभांकाय नमः ।
(५७) ॐ ह्रीं अर्हं वृषोद्भवाय नमः ।
(५८) ॐ ह्रीं अर्हं हिरण्य-नाभये नमः ।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

(५९) ॐ ह्रीं अर्हं **भूतात्मने** नमः ।
(६०) ॐ ह्रीं अर्हं **भूतभृते** नमः ।
(६१) ॐ ह्रीं अर्हं **भूतभावनाय** नमः ।
(६२) ॐ ह्रीं अर्हं **प्रभवाय** नमः ।
(६३) ॐ ह्रीं अर्हं **विभवाय** नमः ।
(६४) ॐ ह्रीं अर्हं **भास्वते** नमः ।
(६५) ॐ ह्रीं अर्हं **भवाय** नमः ।
(६६) ॐ ह्रीं अर्हं **भावाय** नमः ।
(६७) ॐ ह्रीं अर्हं **भवान्तकाय** नमः ।
(६८) ॐ ह्रीं अर्हं **हिरण्यगर्भाय** नमः ।
(६९) ॐ ह्रीं अर्हं **श्रीगर्भाय** नमः ।
(७०) ॐ ह्रीं अर्हं **प्रभूतविभवाय** नमः ।
(७१) ॐ ह्रीं अर्हं **अभवाय** नमः ।
(७२) ॐ ह्रीं अर्हं **स्वयंप्रभाय** नमः ।
(७३) ॐ ह्रीं अर्हं **प्रभूतात्मने** नमः ।
(७४) ॐ ह्रीं अर्हं **भूतनाथाय** नमः ।
(७५) ॐ ह्रीं अर्हं **जगत्प्रभवे** नमः ।
(७६) ॐ ह्रीं अर्हं **सर्वादये** नमः ।
(७७) ॐ ह्रीं अर्हं **सर्वदृशे** नमः ।
(७८) ॐ ह्रीं अर्हं **सार्वाय** नमः ।
(७९) ॐ ह्रीं अर्हं **सर्वज्ञाय** नमः ।
(८०) ॐ ह्रीं अर्हं **सर्वदर्शनाय** नमः ।
(८१) ॐ ह्रीं अर्हं **सर्वात्मने** नमः ।
(८२) ॐ ह्रीं अर्हं **सर्वलोकेशाय** नमः ।
(८३) ॐ ह्रीं अर्हं **सर्वविदे** नमः ।
(८४) ॐ ह्रीं अर्हं **सर्वलोक जिताय** नमः ।
(८५) ॐ ह्रीं अर्हं **सुगतये** नमः ।
(८६) ॐ ह्रीं अर्हं **सुश्रुताय** नमः ।
(८७) ॐ ह्रीं अर्हं **सुश्रुते** नमः ।
(८८) ॐ ह्रीं अर्हं **सुवाचे** नमः ।
(८९) ॐ ह्रीं अर्हं **सूरये** नमः ।
(९०) ॐ ह्रीं अर्हं **बहुश्रुताय** नमः ।
(९१) ॐ ह्रीं अर्हं **विश्रुताय** नमः ।
(९२) ॐ ह्रीं अर्हं **विश्वतः पादाय** नमः ।
(९३) ॐ ह्रीं अर्हं **विश्वशीर्षाय** नमः ।
(९४) ॐ ह्रीं अर्हं **शुचिश्रवसे** नमः ।
(९५) ॐ ह्रीं अर्हं **सहस्रशीर्षाय** नमः ।
(९६) ॐ ह्रीं अर्हं **क्षेत्रज्ञाय** नमः ।
(९७) ॐ ह्रीं अर्हं **सहस्राक्षाय** नमः ।
(९८) ॐ ह्रीं अर्हं **सहस्रपादे** नमः ।
(९९) ॐ ह्रीं अर्हं **भूत-भव्य-भवद् भर्त्रे** नमः ।
(१००) ॐ ह्रीं अर्हं **विश्व विद्या-महेश्वराय** नमः ।

ॐ ह्रीं अर्हं **दिव्य-भाषा-पत्यादि-विश्व-विद्या-महेश्वरान्तशतनामधराऽर्हत् परमेष्ठिने नमो नमः** ।।२।।

जलगंधादिक अष्ट द्रव्य से, प्रभु चरणों का अर्चन है।
अनर्घ पद धारी प्रभुवर को, मम सर्वस्व समर्पण है।
दिव्यभाषापत्यादि शत नामों से जिनवर का गुणगान करूँ।
सकल मनोरथ सिद्धीप्रद को बारम्बार प्रणाम करूँ।2।

ॐ ह्रीं अर्हं दिव्य–भाषा–पत्यादि विश्व –विद्या महेश्वरांत शतनामधराऽर्हत् परमेष्ठिने नमः अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

(१) ॐ ह्रीं अर्हं स्थविष्ठाय नमः ।
(२) ॐ ह्रीं अर्हं स्थविराय नमः ।
(३) ॐ ह्रीं अर्हं ज्येष्ठाय नमः ।
(४) ॐ ह्रीं अर्हं प्रष्ठाय नमः ।
(५) ॐ ह्रीं अर्हं प्रेष्ठाय नमः ।
(६) ॐ ह्रीं अर्हं वरिष्ठधिये नमः ।
(७) ॐ ह्रीं अर्हं स्थेष्ठाय नमः ।
(८) ॐ ह्रीं अर्हं गरिष्ठाय नमः ।
(९) ॐ ह्रीं अर्हं बंहिष्ठाय नमः ।
(१०) ॐ ह्रीं अर्हं श्रेष्ठाय नमः ।
(११) ॐ ह्रीं अर्हं अणिष्ठाय नमः ।
(१२) ॐ ह्रीं अर्हं गरिष्ठगिरे नमः ।
(१३) ॐ ह्रीं अर्हं विश्वमुटे[1] नमः ।
(१४) ॐ ह्रीं अर्हं विश्वसृजे नमः ।
(१५) ॐ ह्रीं अर्हं विश्वटे नमः ।
(१६) ॐ ह्रीं अर्हं विश्वभुजे नमः ।
(१७) ॐ ह्रीं अर्हं विश्वनायकाय नमः ।
(१८) ॐ ह्रीं अर्हं विश्वासिषे नमः ।
(१९) ॐ ह्रीं अर्हं विश्वरूपात्मने नमः ।
(२०) ॐ ह्रीं अर्हं विश्वजिते नमः ।
(२१) ॐ ह्रीं अर्हं विजितांतकाय नमः ।
(२२) ॐ ह्रीं अर्हं विभवाय[2] नमः ।
(२३) ॐ ह्रीं अर्हं विभयाय नमः ।
(२४) ॐ ह्रीं अर्हं वीराय नमः ।
(२५) ॐ ह्रीं अर्हं विशोकाय नमः ।
(२६) ॐ ह्रीं अर्हं विजराय नमः ।
(२७) ॐ ह्रीं अर्हं अजरते नमः ।
(२८) ॐ ह्रीं अर्हं विरागाय नमः ।
(२९) ॐ ह्रीं अर्हं विरताय नमः ।
(३०) ॐ ह्रीं अर्हं असंगाय नमः ।
(३१) ॐ ह्रीं अर्हं विविक्ताय नमः ।
(३२) ॐ ह्रीं अर्हं वीतमत्सराय नमः ।
(३३) ॐ ह्रीं अर्हं विनेयजनता-बंधवे नमः ।
(३४) ॐ ह्रीं अर्हं विलीनाशेष-कल्मषाय नमः ।
(३५) ॐ ह्रीं अर्हं वियोगाय नमः ।
(३६) ॐ ह्रीं अर्हं योगविदे नमः ।
(३७) ॐ ह्रीं अर्हं विदुषे नमः ।
(३८) ॐ ह्रीं अर्हं विधात्रे नमः ।
(३९) ॐ ह्रीं अर्हं सुविधये नमः ।
(४०) ॐ ह्रीं अर्हं सुधिये नमः ।
(४१) ॐ ह्रीं अर्हं क्षांतिभाजे नमः ।
(४२) ॐ ह्रीं अर्हं पृथिवीमूर्तये नमः ।
(४३) ॐ ह्रीं अर्हं शांतिभाजे नमः ।
(४४) ॐ ह्रीं अर्हं सलिलात्मकाय नमः ।
(४५) ॐ ह्रीं अर्हं वायुमूर्तये नमः ।
(४६) ॐ ह्रीं अर्हं असंगात्मने नमः ।
(४७) ॐ ह्रीं अर्हं वह्निमूर्तये नमः ।
(४८) ॐ ह्रीं अर्हं अधर्मधके नमः ।
(४९) ॐ ह्रीं अर्हं सुयज्वने नमः ।
(५०) ॐ ह्रीं अर्हं यजमानात्मने नमः ।
(५१) ॐ ह्रीं अर्हं सुत्वने नमः ।
(५२) ॐ ह्रीं अर्हं सूत्रामपूजिताय नमः ।
(५३) ॐ ह्रीं अर्हं ऋत्विजे नमः ।
(५४) ॐ ह्रीं अर्हं यज्ञपतये नमः ।
(५५) ॐ ह्रीं अर्हं यज्ञाय नमः ।
(५६) ॐ ह्रीं अर्हं यज्ञांगाय नमः ।
(५७) ॐ ह्रीं अर्हं अमृताय नमः ।
(५८) ॐ ह्रीं अर्हं हविषे नमः ।

पाठांतर – 1. विश्वभृटे 2. विभावाय

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

(५९) ॐ ह्रीं अर्हं **व्योममूर्तये** नमः ।
(६०) ॐ ह्रीं अर्हं **अमूर्तात्मने** नमः ।
(६१) ॐ ह्रीं अर्हं **निर्लेपाय** नमः ।
(६२) ॐ ह्रीं अर्हं **निर्मलाय** नमः ।
(६३) ॐ ह्रीं अर्हं **अचलाय** नमः ।
(६४) ॐ ह्रीं अर्हं **सोममूर्तये** नमः ।
(६५) ॐ ह्रीं अर्हं **सुसौम्यात्मने** नमः ।
(६६) ॐ ह्रीं अर्हं **सूर्यमूर्तये** नमः ।
(६७) ॐ ह्रीं अर्हं **महाप्रभाय** नमः ।
(६८) ॐ ह्रीं अर्हं **मंत्रविदे** नमः ।
(६९) ॐ ह्रीं अर्हं **मंत्रकृते** नमः ।
(७०) ॐ ह्रीं अर्हं **मंत्रिणे** नमः ।
(७१) ॐ ह्रीं अर्हं **मंत्रमूर्तये** नमः ।
(७२) ॐ ह्रीं अर्हं **अनंतगाय** नमः ।
(७३) ॐ ह्रीं अर्हं **स्वतंत्राय** नमः ।
(७४) ॐ ह्रीं अर्हं **तंत्रकृते** नमः ।
(७५) ॐ ह्रीं अर्हं **स्वन्ताय** नमः ।
(७६) ॐ ह्रीं अर्हं **कृतांतांताय** नमः ।
(७७) ॐ ह्रीं अर्हं **कृतांतकृते** नमः ।
(७८) ॐ ह्रीं अर्हं **कृतिने** नमः ।
(७९) ॐ ह्रीं अर्हं **कृतार्थाय** नमः ।
(८०) ॐ ह्रीं अर्हं **सत्कृत्याय** नमः ।
(८१) ॐ ह्रीं अर्हं **कृतकृत्याय** नमः ।
(८२) ॐ ह्रीं अर्हं **कृतक्रतवे** नमः ।
(८३) ॐ ह्रीं अर्हं **नित्याय** नमः ।
(८४) ॐ ह्रीं अर्हं **मृत्युंजयाय** नमः ।
(८५) ॐ ह्रीं अर्हं **अमृत्यवे** नमः ।
(८६) ॐ ह्रीं अर्हं **अमृतात्मने** नमः ।
(८७) ॐ ह्रीं अर्हं **अमृतोद्भवाय** नमः ।
(८८) ॐ ह्रीं अर्हं **ब्रह्मनिष्ठाय** नमः ।
(८९) ॐ ह्रीं अर्हं **परंब्रह्मणे** नमः ।
(९०) ॐ ह्रीं अर्हं **ब्रह्मात्मने** नमः ।
(९१) ॐ ह्रीं अर्हं **ब्रह्मसंभवाय** नमः ।
(९२) ॐ ह्रीं अर्हं **महाब्रह्मपतये** नमः ।
(९३) ॐ ह्रीं अर्हं **ब्रह्मेटे** नमः ।
(९४) ॐ ह्रीं अर्हं **महाब्रह्म-पदे-श्वराय** नमः ।
(९५) ॐ ह्रीं अर्हं **सुप्रसन्नाय** नमः ।
(९६) ॐ ह्रीं अर्हं **प्रसन्नात्मने** नमः ।
(९७) ॐ ह्रीं अर्हं **ज्ञान-धर्म-दम-प्रभवे** नमः ।
(९८) ॐ ह्रीं अर्हं **प्रशमात्मने** नमः ।
(९९) ॐ ह्रीं अर्हं **प्रशांतात्मने** नमः ।
(१००) ॐ ह्रीं अर्हं **पुराण-पुरुषोत्तमाय** नमः ।

ॐ ह्रीं अर्हं स्थविष्ठादि-पुराणपुरुषोत्तमांत-शतनामधराऽर्हत् परमेष्ठिने नमो नमः ।। ३।।

जलगंधादिक अष्ट द्रव्य से, प्रभु चरणों का अर्चन है।
अनर्घ पद धारी प्रभुवर को, मम सर्वस्व समर्पण है।
स्थविष्ठ आदि शत नामों से जिनवर का गुणगान करूँ।
सकल मनोरथ सिद्धीप्रद को बारम्बार प्रणाम करूँ।3।

ॐ ह्रीं अर्हं स्थविष्ठादि–पुराण–पुरूषोत्तमांत–शतनामधराऽर्हत्–परमेष्ठिने नमः अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

(१) ॐ ह्रीं अर्हं महाशोकध्वजाय नमः ।
(२) ॐ ह्रीं अर्हं अशोकाय नमः ।
(३) ॐ ह्रीं अर्हं काय नमः ।
(४) ॐ ह्रीं अर्हं स्रष्ट्रे नमः ।
(५) ॐ ह्रीं अर्हं पद्मविष्टराय नमः ।
(६) ॐ ह्रीं अर्हं पद्मेशाय नमः ।
(७) ॐ ह्रीं अर्हं पद्मसंभूतये नमः ।
(८) ॐ ह्रीं अर्हं पद्मनाभये नमः ।
(९) ॐ ह्रीं अर्हं अनुत्तराय नमः ।
(१०) ॐ ह्रीं अर्हं पद्मयोनये नमः ।
(११) ॐ ह्रीं अर्हं जगद्योनये नमः ।
(१२) ॐ ह्रीं अर्हं इत्याय नमः ।
(१३) ॐ ह्रीं अर्हं स्तुत्याय नमः ।
(१४) ॐ ह्रीं अर्हं स्तुतीश्वराय नमः ।
(१५) ॐ ह्रीं अर्हं स्तवनार्हाय नमः ।
(१६) ॐ ह्रीं अर्हं हृषीकेशाय नमः ।
(१७) ॐ ह्रीं अर्हं जितजेयाय नमः ।
(१८) ॐ ह्रीं अर्हं कृतक्रियाय नमः ।
(१९) ॐ ह्रीं अर्हं गणाधिपाय नमः ।
(२०) ॐ ह्रीं अर्हं गणज्येष्ठाय नमः ।
(२१) ॐ ह्रीं अर्हं गण्याय नमः ।
(२२) ॐ ह्रीं अर्हं पुण्याय नमः ।
(२३) ॐ ह्रीं अर्हं गणाग्रण्यै नमः ।
(२४) ॐ ह्रीं अर्हं गुणाकराय नमः ।
(२५) ॐ ह्रीं अर्हं गुणांभोधये नमः ।
(२६) ॐ ह्रीं अर्हं गुणज्ञाय नमः ।
(२७) ॐ ह्रीं अर्हं [1]गुणनायकाय नमः ।
(२८) ॐ ह्रीं अर्हं गुणादरिणे नमः ।
(२९) ॐ ह्रीं अर्हं गुणोच्छेदिने नमः ।
(३०) ॐ ह्रीं अर्हं निर्गुणाय नमः ।
(३१) ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यगिरे नमः ।
(३२) ॐ ह्रीं अर्हं गुणाय नमः ।
(३३) ॐ ह्रीं अर्हं शरण्याय नमः ।
(३४) ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यवाचे नमः ।
(३५) ॐ ह्रीं अर्हं पूताय नमः ।
(३६) ॐ ह्रीं अर्हं वरेण्याय नमः ।
(३७) ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यनायकाय नमः ।
(३८) ॐ ह्रीं अर्हं अगण्याय नमः ।
(३९) ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यधिये नमः ।
(४०) ॐ ह्रीं अर्हं गुण्याय नमः ।
(४१) ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यकृते नमः ।
(४२) ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यशासनाय नमः ।
(४३) ॐ ह्रीं अर्हं धर्मरामाय नमः ।
(४४) ॐ ह्रीं अर्हं गुणग्रामाय नमः ।
(४५) ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यापुण्य निरोधकाय नमः ।
(४६) ॐ ह्रीं अर्हं पापापेताय नमः ।
(४७) ॐ ह्रीं अर्हं विपापात्मने नमः ।
(४८) ॐ ह्रीं अर्हं विपाप्मने नमः ।
(४९) ॐ ह्रीं अर्हं वीतकल्मषाय नमः ।
(५०) ॐ ह्रीं अर्हं निर्द्वन्द्वाय नमः ।
(५१) ॐ ह्रीं अर्हं निर्मदाय नमः ।
(५२) ॐ ह्रीं अर्हं शांताय नमः ।
(५३) ॐ ह्रीं अर्हं निर्मोहाय नमः ।
(५४) ॐ ह्रीं अर्हं निरुपद्रवाय नमः ।
(५५) ॐ ह्रीं अर्हं निर्निमेषाय नमः ।
(५६) ॐ ह्रीं अर्हं निराहाराय नमः ।
(५७) ॐ ह्रीं अर्हं निष्क्रियाय नमः ।
(५८) ॐ ह्रीं अर्हं निरुपप्लवाय नमः ।

पाठांतर – 1. गणनायकाय

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

(५९) ॐ ह्रीं अर्हं **निष्कलंकाय** नमः ।
(६०) ॐ ह्रीं अर्हं **निरस्तैनसे** नमः ।
(६१) ॐ ह्रीं अर्हं **निर्धूतागसे** नमः ।
(६२) ॐ ह्रीं अर्हं **निरास्रवाय** नमः ।
(६३) ॐ ह्रीं अर्हं **विशालाय** नमः ।
(६४) ॐ ह्रीं अर्हं **विपुलज्योतिषे** नमः ।
(६५) ॐ ह्रीं अर्हं **अतुलाय** नमः ।
(६६) ॐ ह्रीं अर्हं **अचिंत्यवैभवाय** नमः ।
(६७) ॐ ह्रीं अर्हं **सुसंवृताय** नमः ।
(६८) ॐ ह्रीं अर्हं **सुगुप्तात्मने** नमः ।
(६९) ॐ ह्रीं अर्हं **सुबुधे**[1] नमः ।
(७०) ॐ ह्रीं अर्हं **सुनयतत्वविदे** नमः ।
(७१) ॐ ह्रीं अर्हं **एकविद्याय** नमः ।
(७२) ॐ ह्रीं अर्हं **महाविद्याय** नमः ।
(७३) ॐ ह्रीं अर्हं **मुनये** नमः ।
(७४) ॐ ह्रीं अर्हं **परिवृढ़ाय** नमः ।
(७५) ॐ ह्रीं अर्हं **पतये** नमः ।
(७६) ॐ ह्रीं अर्हं **धीशाय** नमः ।
(७७) ॐ ह्रीं अर्हं **विद्यानिधये** नमः ।
(७८) ॐ ह्रीं अर्हं **साक्षिणे** नमः ।
(७९) ॐ ह्रीं अर्हं **विनेत्रे** नमः ।
(८०) ॐ ह्रीं अर्हं **विहतांतकाय** नमः ।
(८१) ॐ ह्रीं अर्हं **पित्रे** नमः ।
(८२) ॐ ह्रीं अर्हं **पितामहाय** नमः ।
(८३) ॐ ह्रीं अर्हं **पात्रे** नमः ।
(८४) ॐ ह्रीं अर्हं **पवित्राय** नमः ।
(८५) ॐ ह्रीं अर्हं **पावनाय** नमः ।
(८६) ॐ ह्रीं अर्हं **गतये** नमः ।
(८७) ॐ ह्रीं अर्हं **त्रात्रे** नमः ।
(८८) ॐ ह्रीं अर्हं **भिषग्वराय** नमः ।
(८९) ॐ ह्रीं अर्हं **वर्याय** नमः ।
(९०) ॐ ह्रीं अर्हं **वरदाय** नमः ।
(९१) ॐ ह्रीं अर्हं **परमाय** नमः ।
(९२) ॐ ह्रीं अर्हं **पुंसे** नमः ।
(९३) ॐ ह्रीं अर्हं **कवये** नमः ।
(९४) ॐ ह्रीं अर्हं **पुराणपुरुषाय** नमः ।
(९५) ॐ ह्रीं अर्हं **वर्षीयसे** नमः ।
(९६) ॐ ह्रीं अर्हं **ऋषभाय** नमः ।
(९७) ॐ ह्रीं अर्हं **पुरवे** नमः ।
(९८) ॐ ह्रीं अर्हं **प्रतिष्ठा-प्रभवाय** नमः ।
(९९) ॐ ह्रीं अर्हं **हेतवे** नमः ।
(१००) ॐ ह्रीं अर्हं **भुवनैक-पितामहाय** नमः ।

ॐ ह्रीं अर्हं महाशोकध्वजादि-भुवनैक-पितामहांत-शतनामधराऽर्हत् परमेष्ठिने नमो नमः ।।४।।

जलगंधादिक अष्ट द्रव्य से, प्रभु चरणों का अर्चन है।
अनर्घ पद धारी प्रभुवर को, मम सर्वस्व समर्पण है।
महाशोकध्वजादि शत नामों से जिनवर का गुणगान करूँ।
सकल मनोरथ सिद्धीप्रद को बारम्बार प्रणाम करूँ।4।

ॐ ह्रीं अर्हं महाशोकध्वजादि–भुवनैक–पितामहांत–शतनामधराऽर्हत्–परमेष्ठिने नमः अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. महापुराण में (सुमुते) का पाटांतर भी है।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

(१) ॐ ह्रीं अर्हं श्रीवृक्षलक्षणाय नमः ।
(२) ॐ ह्रीं अर्हं श्लक्षणाय नमः ।
(३) ॐ ह्रीं अर्हं लक्षण्याय नमः ।
(४) ॐ ह्रीं अर्हं शुभलक्षणाय नमः ।
(५) ॐ ह्रीं अर्हं निरक्षाय नमः ।
(६) ॐ ह्रीं अर्हं पुंडरीकाक्षाय नमः ।
(७) ॐ ह्रीं अर्हं पुष्कलाय नमः ।
(८) ॐ ह्रीं अर्हं पुष्करेक्षणाय नमः ।
(९) ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धिदाय नमः ।
(१०) ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धसंकल्पाय नमः ।
(११) ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धात्मने नमः ।
(१२) ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धसाधनाय नमः ।
(१३) ॐ ह्रीं अर्हं बुद्धबोध्याय नमः ।
(१४) ॐ ह्रीं अर्हं महाबोधये नमः ।
(१५) ॐ ह्रीं अर्हं वर्धमानाय नमः ।
(१६) ॐ ह्रीं अर्हं महर्धिकाय नमः ।
(१७) ॐ ह्रीं अर्हं वेदांगाय नमः ।
(१८) ॐ ह्रीं अर्हं वेदविदे नमः ।
(१९) ॐ ह्रीं अर्हं वेद्याय नमः ।
(२०) ॐ ह्रीं अर्हं जातरूपाय नमः ।
(२१) ॐ ह्रीं अर्हं विदांवराय नमः ।
(२२) ॐ ह्रीं अर्हं वेदवेद्याय नमः ।
(२३) ॐ ह्रीं अर्हं स्वसंवेद्याय नमः ।
(२४) ॐ ह्रीं अर्हं विवेदाय नमः ।
(२५) ॐ ह्रीं अर्हं वदतांवराय नमः ।
(२६) ॐ ह्रीं अर्हं अनादि-निधनाय नमः।
(२७) ॐ ह्रीं अर्हं व्यक्ताय नमः ।
(२८) ॐ ह्रीं अर्हं व्यक्तवाचे नमः ।
(२९) ॐ ह्रीं अर्हं व्यक्तशासनाय नमः ।
(३०) ॐ ह्रीं अर्हं युगादिकृते नमः ।
(३१) ॐ ह्रीं अर्हं युगाधाराय नमः ।
(३२) ॐ ह्रीं अर्हं युगादये नमः ।
(३३) ॐ ह्रीं अर्हं जगदादिजाय नमः ।
(३४) ॐ ह्रीं अर्हं अतीन्द्राय नमः ।
(३५) ॐ ह्रीं अर्हं अतीन्द्रियाय नमः ।
(३६) ॐ ह्रीं अर्हं धीन्द्राय नमः ।
(३७) ॐ ह्रीं अर्हं महेन्द्राय नमः ।
(३८) ॐ ह्रीं अर्हं अतीन्द्रियार्थदृशे नमः ।
(३९) ॐ ह्रीं अर्हं अनिंद्रियाय नमः ।
(४०) ॐ ह्रीं अर्हं अहमिन्द्रार्च्याय नमः ।
(४१) ॐ ह्रीं अर्हं महेन्द्र-महिताय नमः ।
(४२) ॐ ह्रीं अर्हं महते नमः ।
(४३) ॐ ह्रीं अर्हं उद्भवाय नमः ।
(४४) ॐ ह्रीं अर्हं कारणाय नमः ।
(४५) ॐ ह्रीं अर्हं कर्त्रे नमः ।
(४६) ॐ ह्रीं अर्हं पारगाय नमः ।
(४७) ॐ ह्रीं अर्हं भवतारकाय नमः ।
(४८) ॐ ह्रीं अर्हं अगाह्याय नमः ।
(४९) ॐ ह्रीं अर्हं गहनाय नमः ।
(५०) ॐ ह्रीं अर्हं गुह्याय नमः ।
(५१) ॐ ह्रीं अर्हं पराध्र्याय नमः ।
(५२) ॐ ह्रीं अर्हं परमेश्वराय नमः ।
(५३) ॐ ह्रीं अर्हं अनंतर्धये नमः ।
(५४) ॐ ह्रीं अर्हं अमेयर्धये नमः ।
(५५) ॐ ह्रीं अर्हं अचिंत्यर्धये नमः ।
(५६) ॐ ह्रीं अर्हं समग्रधिये नमः ।
(५७) ॐ ह्रीं अर्हं प्राग्राय नमः ।
(५८) ॐ ह्रीं अर्हं प्राग्रहराय नमः ।

For correction contact Ahimsa-Forum (www.ahimsaforum.net)

(५९) ॐ ह्रीं अर्हं **अभ्यग्राय** नमः ।
(६०) ॐ ह्रीं अर्हं **प्रत्यग्राय** नमः ।
(६१) ॐ ह्रीं अर्हं **अग्रयाय** नमः ।
(६२) ॐ ह्रीं अर्हं **अग्रिमाय** नमः ।
(६३) ॐ ह्रीं अर्हं **अग्रजाय** नमः ।
(६४) ॐ ह्रीं अर्हं **महातपसे** नमः ।
(६५) ॐ ह्रीं अर्हं **महातेजसे** नमः ।
(६६) ॐ ह्रीं अर्हं **महोदर्काय** नमः ।
(६७) ॐ ह्रीं अर्हं **महोदयाय** नमः ।
(६८) ॐ ह्रीं अर्हं **महायशसे** नमः ।
(६९) ॐ ह्रीं अर्हं **महाधाम्ने** नमः ।
(७०) ॐ ह्रीं अर्हं **महासत्वाय** नमः ।
(७१) ॐ ह्रीं अर्हं **महाधृतये** नमः ।
(७२) ॐ ह्रीं अर्हं **महाधैर्याय** नमः ।
(७३) ॐ ह्रीं अर्हं **महावीर्याय** नमः ।
(७४) ॐ ह्रीं अर्हं **महासंपदे** नमः ।
(७५) ॐ ह्रीं अर्हं **महाबलाय** नमः ।
(७६) ॐ ह्रीं अर्हं **महाशक्तये** नमः ।
(७७) ॐ ह्रीं अर्हं **महाज्योतिषे** नमः ।
(७८) ॐ ह्रीं अर्हं **महाभूतये** नमः ।
(७९) ॐ ह्रीं अर्हं **महाद्युतये** नमः ।
(८०) ॐ ह्रीं अर्हं **महामतये** नमः ।
(८१) ॐ ह्रीं अर्हं **महानीतये** नमः ।
(८२) ॐ ह्रीं अर्हं **महाक्षांतये** नमः ।
(८३) ॐ ह्रीं अर्हं **महादयाय** नमः ।
(८४) ॐ ह्रीं अर्हं **महाप्राज्ञाय** नमः ।
(८५) ॐ ह्रीं अर्हं **महाभागाय** नमः ।
(८६) ॐ ह्रीं अर्हं **महानंदाय** नमः ।
(८७) ॐ ह्रीं अर्हं **महाकवये** नमः ।
(८८) ॐ ह्रीं अर्हं **महामहसे** नमः ।
(८९) ॐ ह्रीं अर्हं **महाकीर्तये** नमः ।
(९०) ॐ ह्रीं अर्हं **महाकांतये** नमः ।
(९१) ॐ ह्रीं अर्हं **महावपुषे** नमः ।
(९२) ॐ ह्रीं अर्हं **महादानाय** नमः ।
(९३) ॐ ह्रीं अर्हं **महाज्ञानाय** नमः ।
(९४) ॐ ह्रीं अर्हं **महायोगाय** नमः ।
(९५) ॐ ह्रीं अर्हं **महागुणाय** नमः ।
(९६) ॐ ह्रीं अर्हं **महामहपतये** नमः ।
(९७) ॐ ह्रीं अर्हं **प्राप्तमहापंच-कल्याणकाय** नमः ।
(९८) ॐ ह्रीं अर्हं **महाप्रभवे** नमः ।
(९९) ॐ ह्रीं अर्हं **महाप्राति-हार्याधीशाय** नमः ।
(१००) ॐ ह्रीं अर्हं **महेश्वराय** नमः ।

ॐ ह्रीं अर्हं **श्री वृक्षलक्षणादि-महेश्वरांत-शतनामधराऽर्हत् परमेष्ठिने नमो नमः** ।।५।।

जलगंधादिक अष्ट द्रव्य से, प्रभु चरणों का अर्चन है।
अनर्घ पद धारी प्रभुवर को, मम सर्वस्व समर्पण है।
श्री वृक्षलक्षणादि शत नामों से जिनवर का गुणगान करूँ।
सकल मनोरथ सिद्धीप्रद को बारम्बार प्रणाम करूँ।5 ।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री वृक्षलक्षणादि–महेश्वरांत–शतनामधराऽर्हत्–परमेष्ठिने नमः अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(१) ॐ ह्रीं अर्हं महामुनये नमः ।
(२) ॐ ह्रीं अर्हं महामौनिने नमः ।
(३) ॐ ह्रीं अर्हं महाध्यानिने नमः ।
(४) ॐ ह्रीं अर्हं महादमाय नमः ।
(५) ॐ ह्रीं अर्हं महाक्षमाय नमः ।
(६) ॐ ह्रीं अर्हं महाशीलाय नमः ।
(७) ॐ ह्रीं अर्हं महायज्ञाय नमः ।
(८) ॐ ह्रीं अर्हं महामखाय नमः ।
(९) ॐ ह्रीं अर्हं महाव्रतपतये नमः ।
(१०) ॐ ह्रीं अर्हं मह्याय नमः ।
(११) ॐ ह्रीं अर्हं महाकांतिधराय नमः ।
(१२) ॐ ह्रीं अर्हं अधिपाय नमः ।
(१३) ॐ ह्रीं अर्हं महामैत्रीमयाय नमः ।
(१४) ॐ ह्रीं अर्हं अमेयाय नमः ।
(१५) ॐ ह्रीं अर्हं महोपायाय नमः ।
(१६) ॐ ह्रीं अर्हं महोमयाय नमः ।
(१७) ॐ ह्रीं अर्हं महाकारुण्यकाय नमः ।
(१८) ॐ ह्रीं अर्हं मंत्रे नमः ।
(१९) ॐ ह्रीं अर्हं महामंत्राय नमः ।
(२०) ॐ ह्रीं अर्हं महायतये नमः ।
(२१) ॐ ह्रीं अर्हं महानादाय नमः ।
(२२) ॐ ह्रीं अर्हं महाघोषाय नमः ।
(२३) ॐ ह्रीं अर्हं महेज्याय नमः ।
(२४) ॐ ह्रीं अर्हं महसांपतये नमः ।
(२५) ॐ ह्रीं अर्हं महाध्वरधराय नमः ।
(२६) ॐ ह्रीं अर्हं धुर्याय नमः ।
(२७) ॐ ह्रीं अर्हं महौदार्याय नमः ।
(२८) ॐ ह्रीं अर्हं महिष्टवाचे नमः ।
(२९) ॐ ह्रीं अर्हं महात्मने नमः ।
(३०) ॐ ह्रीं अर्हं महसांधाम्ने नमः ।
(३१) ॐ ह्रीं अर्हं महर्षये नमः ।
(३२) ॐ ह्रीं अर्हं महितोदयाय नमः ।
(३३) ॐ ह्रीं अर्हं महाक्लेशांकुशाय नमः ।
(३४) ॐ ह्रीं अर्हं शूराय नमः ।
(३५) ॐ ह्रीं अर्हं महाभूतपतये नमः ।
(३६) ॐ ह्रीं अर्हं गुरवे नमः ।
(३७) ॐ ह्रीं अर्हं महापराक्रमाय नमः ।
(३८) ॐ ह्रीं अर्हं अनंताय नमः ।
(३९) ॐ ह्रीं अर्हं महाक्रोधरिपवे नमः ।
(४०) ॐ ह्रीं अर्हं वशिने नमः ।
(४१) ॐ ह्रीं अर्हं महाभवाब्धि-संतारिणे नमः ।
(४२) ॐ ह्रीं अर्हं महामोहाद्रि-सूदनाय नमः ।
(४३) ॐ ह्रीं अर्हं महागुणाकराय नमः ।
(४४) ॐ ह्रीं अर्हं क्षांताय नमः ।
(४५) ॐ ह्रीं अर्हं महायोगीश्वराय नमः ।
(४६) ॐ ह्रीं अर्हं शमिने नमः ।
(४७) ॐ ह्रीं अर्हं महाध्यानपतये नमः ।
(४८) ॐ ह्रीं अर्हं ध्यातमहाधर्मणे नमः ।
(४९) ॐ ह्रीं अर्हं महाव्रताय नमः ।
(५०) ॐ ह्रीं अर्हं महाकर्मारिघ्ने नमः ।
(५१) ॐ ह्रीं अर्हं आत्मज्ञाय नमः ।
(५२) ॐ ह्रीं अर्हं महादेवाय नमः ।
(५३) ॐ ह्रीं अर्हं महेशित्रे नमः ।
(५४) ॐ ह्रीं अर्हं सर्वक्लेशापहाय नमः ।
(५५) ॐ ह्रीं अर्हं साधवे नमः ।
(५६) ॐ ह्रीं अर्हं सर्वदोषहराय नमः ।
(५७) ॐ ह्रीं अर्हं हराय नमः ।
(५८) ॐ ह्रीं अर्हं असंख्येयाय नमः ।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

(५९) ॐ ह्रीं अर्हं अप्रमेयात्मने नमः ।
(६०) ॐ ह्रीं अर्हं शमात्मने नमः ।
(६१) ॐ ह्रीं अर्हं प्रशमाकराय नमः ।
(६२) ॐ ह्रीं अर्हं सर्वयोगीश्वराय नमः ।
(६३) ॐ ह्रीं अर्हं अचिंत्याय नमः ।
(६४) ॐ ह्रीं अर्हं श्रुतात्मने नमः ।
(६५) ॐ ह्रीं अर्हं विष्टरश्रवसे नमः ।
(६६) ॐ ह्रीं अर्हं दान्तात्मने नमः ।
(६७) ॐ ह्रीं अर्हं दमतीर्थेशाय नमः ।
(६८) ॐ ह्रीं अर्हं योगात्मने नमः ।
(६९) ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानसर्वगाय नमः ।
(७०) ॐ ह्रीं अर्हं प्रधानाय नमः ।
(७१) ॐ ह्रीं अर्हं आत्मने नमः ।
(७२) ॐ ह्रीं अर्हं प्रकृतये नमः ।
(७३) ॐ ह्रीं अर्हं परमाय नमः ।
(७४) ॐ ह्रीं अर्हं परमोदयाय नमः ।
(७५) ॐ ह्रीं अर्हं प्रक्षीणबंधाय नमः ।
(७६) ॐ ह्रीं अर्हं कामारये नमः ।
(७७) ॐ ह्रीं अर्हं क्षेमकृते नमः ।
(७८) ॐ ह्रीं अर्हं क्षेमशासनाय नमः ।
(७९) ॐ ह्रीं अर्हं प्रणवाय नमः ।
(८०) ॐ ह्रीं अर्हं प्रणयाय नमः ।
(८१) ॐ ह्रीं अर्हं प्राणाय नमः ।
(८२) ॐ ह्रीं अर्हं प्राणदाय नमः ।
(८३) ॐ ह्रीं अर्हं प्रणतेश्वराय नमः ।
(८४) ॐ ह्रीं अर्हं प्रमाणाय नमः ।
(८५) ॐ ह्रीं अर्हं प्रणिधये नमः ।
(८६) ॐ ह्रीं अर्हं दक्षाय नमः ।
(८७) ॐ ह्रीं अर्हं दक्षिणाय नमः ।
(८८) ॐ ह्रीं अर्हं अध्वर्यवे नमः ।
(८९) ॐ ह्रीं अर्हं अध्वराय नमः ।
(९०) ॐ ह्रीं अर्हं आनंदाय नमः ।
(९१) ॐ ह्रीं अर्हं नन्दनाय नमः ।
(९२) ॐ ह्रीं अर्हं नन्दाय नमः ।
(९३) ॐ ह्रीं अर्हं वंद्याय नमः ।
(९४) ॐ ह्रीं अर्हं अनिन्द्याय नमः ।
(९५) ॐ ह्रीं अर्हं अभिनंदनाय नमः ।
(९६) ॐ ह्रीं अर्हं कामघ्ने नमः ।
(९७) ॐ ह्रीं अर्हं कामदाय नमः ।
(९८) ॐ ह्रीं अर्हं काम्याय नमः ।
(९९) ॐ ह्रीं अर्हं कामधेनवे नमः ।
(१००) ॐ ह्रीं अर्हं अरिंजयाय नमः ।

ॐ ह्रीं अर्हं महामुन्यादि-अरिंजयांतशत नामधराऽर्हत् परमेष्ठिने नमो नमः ।।६।।

जलगंधादिक अष्ट द्रव्य से, प्रभु चरणों का अर्चन है।
अनर्घ पद धारी प्रभुवर को, मम सर्वस्व समर्पण है।
महामुनि आदि शत नामों से, जिनवर का गुणगान करूँ।
सकल मनोरथ सिद्धीप्रद को बारम्बार प्रणाम करूँ।6।

ॐ ह्रीं अर्हं महामुन्यादि–अरिंजयांत–शतनामधराऽर्हत्–परमेष्ठिने नमः अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

(१) ॐ ह्रीं अर्हं असंस्कृतसुसंस्काराय नमः ।
(२) ॐ ह्रीं अर्हं अप्राकृताय नमः ।
(३) ॐ ह्रीं अर्हं वैकृतान्तकृते नमः ।
(४) ॐ ह्रीं अर्हं अंतकृते नमः ।
(५) ॐ ह्रीं अर्हं कांतगवे नमः ।
(६) ॐ ह्रीं अर्हं कांताय नमः ।
(७) ॐ ह्रीं अर्हं चिंतामणये नमः ।
(८) ॐ ह्रीं अर्हं अभीष्टदाय नमः ।
(९) ॐ ह्रीं अर्हं अजिताय नमः ।
(१०) ॐ ह्रीं अर्हं जितकामारये नमः ।
(११) ॐ ह्रीं अर्हं अमिताय नमः ।
(१२) ॐ ह्रीं अर्हं अमितशासनाय नमः ।
(१३) ॐ ह्रीं अर्हं जितक्रोधाय नमः ।
(१४) ॐ ह्रीं अर्हं जितामित्राय नमः ।
(१५) ॐ ह्रीं अर्हं जितक्लेशाय नमः ।
(१६) ॐ ह्रीं अर्हं जितांतकाय नमः ।
(१७) ॐ ह्रीं अर्हं जिनेन्द्राय नमः ।
(१८) ॐ ह्रीं अर्हं परमानंदाय नमः ।
(१९) ॐ ह्रीं अर्हं मुनीन्द्राय नमः ।
(२०) ॐ ह्रीं अर्हं दुंदुभि-स्वनाय नमः ।
(२१) ॐ ह्रीं अर्हं महेन्द्रवंद्याय नमः ।
(२२) ॐ ह्रीं अर्हं योगीन्द्राय नमः ।
(२३) ॐ ह्रीं अर्हं यतीन्द्राय नमः ।
(२४) ॐ ह्रीं अर्हं नाभिनंदनाय नमः ।
(२५) ॐ ह्रीं अर्हं नाभेयाय नमः ।
(२६) ॐ ह्रीं अर्हं नाभिजाय नमः ।
(२७) ॐ ह्रीं अर्हं जातसुव्रताय नमः ।
(२८) ॐ ह्रीं अर्हं मनवे नमः ।
(२९) ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमाय नमः ।
(३०) ॐ ह्रीं अर्हं अभेद्याय नमः ।
(३१) ॐ ह्रीं अर्हं अनत्ययाय नमः ।
(३२) ॐ ह्रीं अर्हं अनाश्वसे नमः ।
(३३) ॐ ह्रीं अर्हं अधिकाय नमः ।
(३४) ॐ ह्रीं अर्हं अधिगुरवे नमः ।
(३५) ॐ ह्रीं अर्हं सुगिरे नमः ।
(३६) ॐ ह्रीं अर्हं सुमेधसे नमः ।
(३७) ॐ ह्रीं अर्हं विक्रमिणे नमः ।
(३८) ॐ ह्रीं अर्हं स्वामिने नमः ।
(३९) ॐ ह्रीं अर्हं दुराधर्षाय नमः ।
(४०) ॐ ह्रीं अर्हं निरुत्सुकाय नमः ।
(४१) ॐ ह्रीं अर्हं विशिष्टाय नमः ।
(४२) ॐ ह्रीं अर्हं शिष्टभुजे नमः ।
(४३) ॐ ह्रीं अर्हं शिष्टाय नमः ।
(४४) ॐ ह्रीं अर्हं प्रत्ययाय नमः ।
(४५) ॐ ह्रीं अर्हं कामनाय नमः ।
(४६) ॐ ह्रीं अर्हं अनघाय नमः ।
(४७) ॐ ह्रीं अर्हं क्षेमिणे नमः ।
(४८) ॐ ह्रीं अर्हं क्षेमंकराय नमः ।
(४९) ॐ ह्रीं अर्हं अक्षय्याय नमः ।
(५०) ॐ ह्रीं अर्हं क्षेमधर्मपतये नमः ।
(५१) ॐ ह्रीं अर्हं क्षमिणे नमः ।
(५२) ॐ ह्रीं अर्हं अग्राह्याय नमः ।
(५३) ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञाननिग्राह्याय नमः ।
(५४) ॐ ह्रीं अर्हं ध्यानगम्याय नमः ।
(५५) ॐ ह्रीं अर्हं निरुत्तराय नमः ।
(५६) ॐ ह्रीं अर्हं सुकृतिने नमः ।
(५७) ॐ ह्रीं अर्हं धातवे नमः ।
(५८) ॐ ह्रीं अर्हं इज्यार्हाय नमः ।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

(५९) ॐ ह्रीं अर्हं सुनयाय नमः ।
(६०) ॐ ह्रीं अर्हं चतुराननाय नमः ।
(६१) ॐ ह्रीं अर्हं श्रीनिवासाय नमः ।
(६२) ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्वक्त्राय नमः ।
(६३) ॐ ह्रीं अर्हं चतुरास्याय नमः ।
(६४) ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्मुखाय नमः ।
(६५) ॐ ह्रीं अर्हं सत्यात्मने नमः ।
(६६) ॐ ह्रीं अर्हं सत्यविज्ञानाय नमः ।
(६७) ॐ ह्रीं अर्हं सत्यवाचे नमः ।
(६८) ॐ ह्रीं अर्हं सत्य-शासनाय नमः ।
(६९) ॐ ह्रीं अर्हं सत्याशिषे नमः ।
(७०) ॐ ह्रीं अर्हं सत्यसंधानाय नमः ।
(७१) ॐ ह्रीं अर्हं सत्याय नमः ।
(७२) ॐ ह्रीं अर्हं सत्य परायणाय नमः ।
(७३) ॐ ह्रीं अर्हं स्थेयसे नमः ।
(७४) ॐ ह्रीं अर्हं स्थवीयसे नमः ।
(७५) ॐ ह्रीं अर्हं नेदीयसे नमः ।
(७६) ॐ ह्रीं अर्हं दवीयसे नमः ।
(७७) ॐ ह्रीं अर्हं दूरदर्शनाय नमः ।
(७८) ॐ ह्रीं अर्हं अणवे नमः ।
(७९) ॐ ह्रीं अर्हं अणीयसे नमः ।
(८०) ॐ ह्रीं अर्हं अनणवे नमः ।
(८१) ॐ ह्रीं अर्हं गरीयसामाद्यगुरवे नमः ।
(८२) ॐ ह्रीं अर्हं सदायोगाय नमः ।
(८३) ॐ ह्रीं अर्हं सदाभोगाय नमः ।
(८४) ॐ ह्रीं अर्हं सदातृप्ताय नमः ।
(८५) ॐ ह्रीं अर्हं सदाशिवाय नमः ।
(८६) ॐ ह्रीं अर्हं सदागतये नमः ।
(८७) ॐ ह्रीं अर्हं सदासौख्याय नमः ।
(८८) ॐ ह्रीं अर्हं सदाविद्याय नमः ।
(८९) ॐ ह्रीं अर्हं सदोदयाय नमः ।
(९०) ॐ ह्रीं अर्हं सुघोषाय नमः ।
(९१) ॐ ह्रीं अर्हं सुमुखाय नमः ।
(९२) ॐ ह्रीं अर्हं सौम्याय नमः ।
(९३) ॐ ह्रीं अर्हं सुखदाय नमः ।
(९४) ॐ ह्रीं अर्हं सुहिताय नमः ।
(९५) ॐ ह्रीं अर्हं सुहृदे नमः ।
(९६) ॐ ह्रीं अर्हं सुगुप्ताय नमः ।
(९७) ॐ ह्रीं अर्हं गुप्तिभृते नमः ।
(९८) ॐ ह्रीं अर्हं गोप्त्रे नमः ।
(९९) ॐ ह्रीं अर्हं लोकाध्यक्षाय नमः ।
(१००) ॐ ह्रीं अर्हं दमेश्वराय नमः ।

ॐ ह्रीं अर्हं असंस्कृतसुसंस्कारादि-दमेश्वरांत-शतनामधराऽर्हत् परमेष्ठिने नमो नमः ।।७।।

जलगंधादिक अष्ट द्रव्य से, प्रभु चरणों का अर्चन है।
अनर्घ पद धारी प्रभुवर को, मम सर्वस्व समर्पण है।
असंस्कृतादि शतनामों से, जिनवर का गुणगान करूँ।
सकल मनोरथ सिद्धीप्रद को बारम्बार प्रणाम करूँ।7।

ॐ ह्रीं अर्हं असंस्कृतादि–दमेश्वरांत–शतनामधराऽर्हत्–परमेष्ठिने नमः अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

(१) ॐ ह्रीं अर्हं वृहद्वृहस्पतये नमः ।
(२) ॐ ह्रीं अर्हं वाग्मिने नमः ।
(३) ॐ ह्रीं अर्हं वाचस्पतये नमः ।
(४) ॐ ह्रीं अर्हं उदारधिये नमः ।
(५) ॐ ह्रीं अर्हं मनीषिणे नमः ।
(६) ॐ ह्रीं अर्हं धिषणाय नमः ।
(७) ॐ ह्रीं अर्हं धीमते नमः ।
(८) ॐ ह्रीं अर्हं शेमुषीशाय नमः ।
(९) ॐ ह्रीं अर्हं गिरांपतये नमः ।
(१०) ॐ ह्रीं अर्हं नैकरूपाय नमः ।
(११) ॐ ह्रीं अर्हं नयोत्तुंगाय नमः ।
(१२) ॐ ह्रीं अर्हं नैकात्मने नमः ।
(१३) ॐ ह्रीं अर्हं नैकधर्मकृते नमः ।
(१४) ॐ ह्रीं अर्हं अविज्ञेयाय नमः ।
(१५) ॐ ह्रीं अर्हं अप्रतर्क्यात्मने नमः ।
(१६) ॐ ह्रीं अर्हं कृतज्ञाय नमः ।
(१७) ॐ ह्रीं अर्हं कृतलक्षणाय नमः ।
(१८) ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानगर्भाय नमः ।
(१९) ॐ ह्रीं अर्हं दयागर्भाय नमः ।
(२०) ॐ ह्रीं अर्हं रत्नगर्भाय नमः ।
(२१) ॐ ह्रीं अर्हं प्रभास्वराय नमः ।
(२२) ॐ ह्रीं अर्हं पद्मगर्भाय नमः ।
(२३) ॐ ह्रीं अर्हं जगद्गर्भाय नमः ।
(२४) ॐ ह्रीं अर्हं हेमगर्भाय नमः ।
(२५) ॐ ह्रीं अर्हं सुदर्शनाय नमः ।
(२६) ॐ ह्रीं अर्हं लक्ष्मीवते नमः ।
(२७) ॐ ह्रीं अर्हं त्रिदशाध्यक्षाय नमः ।
(२८) ॐ ह्रीं अर्हं दृढीयसे नमः ।
(२९) ॐ ह्रीं अर्हं इनाय नमः ।
(३०) ॐ ह्रीं अर्हं ईशित्रे नमः ।
(३१) ॐ ह्रीं अर्हं मनोहराय नमः ।
(३२) ॐ ह्रीं अर्हं मनोज्ञांगाय नमः ।
(३३) ॐ ह्रीं अर्हं धीराय नमः ।
(३४) ॐ ह्रीं अर्हं गंभीरशासनाय नमः ।
(३५) ॐ ह्रीं अर्हं धर्मयूपाय नमः ।
(३६) ॐ ह्रीं अर्हं दयायागाय नमः ।
(३७) ॐ ह्रीं अर्हं धर्मनेमये नमः ।
(३८) ॐ ह्रीं अर्हं मुनीश्वराय नमः ।
(३९) ॐ ह्रीं अर्हं धर्मचक्रायुधाय नमः ।
(४०) ॐ ह्रीं अर्हं देवाय नमः ।
(४१) ॐ ह्रीं अर्हं कर्मघ्ने नमः ।
(४२) ॐ ह्रीं अर्हं धर्मघोषणाय नमः ।
(४३) ॐ ह्रीं अर्हं अमोघवाचे नमः ।
(४४) ॐ ह्रीं अर्हं अमोघाज्ञाय नमः ।
(४५) ॐ ह्रीं अर्हं निर्ममाय नमः ।
(४६) ॐ ह्रीं अर्हं अमोघशासनाय नमः ।
(४७) ॐ ह्रीं अर्हं सुरुपाय नमः ।
(४८) ॐ ह्रीं अर्हं सुभगाय नमः ।
(४९) ॐ ह्रीं अर्हं त्यागिने नमः ।
(५०) ॐ ह्रीं अर्हं समयज्ञाय नमः ।
(५१) ॐ ह्रीं अर्हं समाहिताय नमः ।
(५२) ॐ ह्रीं अर्हं सुस्थिताय नमः ।
(५३) ॐ ह्रीं अर्हं स्वास्थ्यभाजे नमः ।
(५४) ॐ ह्रीं अर्हं स्वस्थाय नमः ।
(५५) ॐ ह्रीं अर्हं नीरजस्काय नमः ।
(५६) ॐ ह्रीं अर्हं निरुद्धवाय नमः ।
(५७) ॐ ह्रीं अर्हं अलेपाय नमः ।
(५८) ॐ ह्रीं अर्हं निष्कलंकात्मने नमः ।

पाठांतर - १. निर्मलाय

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

(५९) ॐ ह्रीं अर्हं **वीतरागाय** नमः ।
(६०) ॐ ह्रीं अर्हं **गतस्पृहाय** नमः ।
(६१) ॐ ह्रीं अर्हं **वश्येन्द्रियाय** नमः ।
(६२) ॐ ह्रीं अर्हं **विमुक्तात्मने** नमः ।
(६३) ॐ ह्रीं अर्हं **निःसपत्नाय** नमः ।
(६४) ॐ ह्रीं अर्हं **जितेन्द्रियाय** नमः ।
(६५) ॐ ह्रीं अर्हं **प्रशांताय** नमः ।
(६६) ॐ ह्रीं अर्हं **अनंतधामर्षये** नमः ।
(६७) ॐ ह्रीं अर्हं **मंगलाय** नमः ।
(६८) ॐ ह्रीं अर्हं **मलघ्ने** नमः ।
(६९) ॐ ह्रीं अर्हं **अनयाय** नमः ।
(७०) ॐ ह्रीं अर्हं **अनीदृशे** नमः ।
(७१) ॐ ह्रीं अर्हं **उपमाभूताय** नमः ।
(७२) ॐ ह्रीं अर्हं **दिष्टये** नमः ।
(७३) ॐ ह्रीं अर्हं **दैवाय** नमः ।
(७४) ॐ ह्रीं अर्हं **अगोचराय** नमः ।
(७५) ॐ ह्रीं अर्हं **अमूर्ताय** नमः ।
(७६) ॐ ह्रीं अर्हं **मूर्तिमते** नमः ।
(७७) ॐ ह्रीं अर्हं **एकस्मै** नमः ।
(७८) ॐ ह्रीं अर्हं **नैकस्मै** नमः ।
(७९) ॐ ह्रीं अर्हं **नानैकतत्वदृशे** नमः ।
(८०) ॐ ह्रीं अर्हं **अध्यात्मगम्याय** नमः ।
(८१) ॐ ह्रीं अर्हं **अगम्यात्मने** नमः ।
(८२) ॐ ह्रीं अर्हं **योगविदे** नमः ।
(८३) ॐ ह्रीं अर्हं **योगिवंदिताय** नमः ।
(८४) ॐ ह्रीं अर्हं **सर्वत्रगाय** नमः ।
(८५) ॐ ह्रीं अर्हं **सदाभाविने** नमः ।
(८६) ॐ ह्रीं अर्हं **त्रिकालविषयार्थदृशे** नमः ।
(८७) ॐ ह्रीं अर्हं **शंकराय** नमः ।
(८८) ॐ ह्रीं अर्हं **शंवदाय** नमः ।
(८९) ॐ ह्रीं अर्हं **दांताय** नमः ।
(९०) ॐ ह्रीं अर्हं **दमिने** नमः ।
(९१) ॐ ह्रीं अर्हं **क्षांतिपरायणाय** नमः ।
(९२) ॐ ह्रीं अर्हं **अधिपाय** नमः ।
(९३) ॐ ह्रीं अर्हं **परमानंदाय** नमः ।
(९४) ॐ ह्रीं अर्हं **परात्मज्ञाय** नमः ।
(९५) ॐ ह्रीं अर्हं **परात्पराय** नमः ।
(९६) ॐ ह्रीं अर्हं **त्रिजगद्बल्लभाय** नमः ।
(९७) ॐ ह्रीं अर्हं **अभ्यर्च्याय** नमः ।
(९८) ॐ ह्रीं अर्हं **त्रिजगन्मंगलोदयाय** नमः ।
(९९) ॐ ह्रीं अर्हं **त्रिजगत्पतिपूजांघ्रये** नमः ।
(१००) ॐ ह्रीं अर्हं **त्रिलोकाग्रशिखामणये** नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं वृहद्वृहस्पत्यादि-त्रिलोकाग्रशिखामण्यंत-शतनामधराऽर्हत् परमेष्ठिने नमो नमः ।।८।।

जलगंधादिक अष्ट द्रव्य से, प्रभु चरणों का अर्चन है।
अनर्घ पद धारी प्रभुवर को, मम सर्वस्व समर्पण है।
वृहद् वृहस्पति शत नामों से, जिनवर का गुणगान करूँ।
सकल मनोरथ सिद्धीप्रद को बारम्बार प्रणाम करूँ।8।

ॐ ह्रीं अर्हं वृहद्वृहस्पत्यादि–त्रिलोकाग्रशिखामण्यंत–शतनामधराऽर्हत्–परमेष्ठिने नमः अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

(१) ॐ ह्रीं अर्हं त्रिकालदर्शिने नमः ।
(२) ॐ ह्रीं अर्हं लोकेशाय नमः ।
(३) ॐ ह्रीं अर्हं लोकधात्रे नमः ।
(४) ॐ ह्रीं अर्हं दृढ़व्रताय नमः ।
(५) ॐ ह्रीं अर्हं सर्वलोकातिगाय नमः ।
(६) ॐ ह्रीं अर्हं पूज्याय नमः ।
(७) ॐ ह्रीं अर्हं सर्वलोकैकसारथये नमः ।
(८) ॐ ह्रीं अर्हं पुराणाय नमः ।
(९) ॐ ह्रीं अर्हं पुरुषाय नमः ।
(१०) ॐ ह्रीं अर्हं पूर्वाय नमः ।
(११) ॐ ह्रीं अर्हं कृतपूर्वांगविस्तराय नमः ।
(१२) ॐ ह्रीं अर्हं आदिदेवाय नमः ।
(१३) ॐ ह्रीं अर्हं पुराणाद्याय नमः ।
(१४) ॐ ह्रीं अर्हं पुरुदेवाय नमः ।
(१५) ॐ ह्रीं अर्हं अधिदेवतायै नमः ।
(१६) ॐ ह्रीं अर्हं युगमुख्याय नमः ।
(१७) ॐ ह्रीं अर्हं युगज्येष्ठाय नमः ।
(१८) ॐ ह्रीं अर्हं युगादिस्थितिदेशकाय नमः ।
(१९) ॐ ह्रीं अर्हं कल्याणवर्णाय नमः ।
(२०) ॐ ह्रीं अर्हं कल्याणाय नमः ।
(२१) ॐ ह्रीं अर्हं कल्याय नमः ।
(२२) ॐ ह्रीं अर्हं कल्याणलक्षणाय नमः ।
(२३) ॐ ह्रीं अर्हं कल्याण प्रकृतये नमः ।
(२४) ॐ ह्रीं अर्हं दीप्तकल्याणात्मने नमः ।
(२५) ॐ ह्रीं अर्हं विकल्मषाय नमः ।
(२६) ॐ ह्रीं अर्हं विकलंकाय नमः ।
(२७) ॐ ह्रीं अर्हं कलातीताय नमः ।
(२८) ॐ ह्रीं अर्हं कलिलघ्नाय नमः ।
(२९) ॐ ह्रीं अर्हं कलाधराय नमः ।
(३०) ॐ ह्रीं अर्हं देवदेवाय नमः ।
(३१) ॐ ह्रीं अर्हं जगन्नाथाय नमः ।
(३२) ॐ ह्रीं अर्हं जगद्बंधवे नमः ।
(३३) ॐ ह्रीं अर्हं जगद्विभवे नमः ।
(३४) ॐ ह्रीं अर्हं जगद्धितैषिणे नमः ।
(३५) ॐ ह्रीं अर्हं लोकज्ञाय नमः ।
(३६) ॐ ह्रीं अर्हं सर्वगाय नमः ।
(३७) ॐ ह्रीं अर्हं जगदग्रजाय नमः ।
(३८) ॐ ह्रीं अर्हं चराचरगुरवे नमः ।
(३९) ॐ ह्रीं अर्हं गोप्याय नमः ।
(४०) ॐ ह्रीं अर्हं गूढात्मने नमः ।
(४१) ॐ ह्रीं अर्हं गूढगोचराय नमः ।
(४२) ॐ ह्रीं अर्हं सद्योजाताय नमः ।
(४३) ॐ ह्रीं अर्हं प्रकाशात्मने नमः ।
(४४) ॐ ह्रीं अर्हं ज्वलज्ज्वलनसप्रभाय नमः ।
(४५) ॐ ह्रीं अर्हं आदित्यवर्णाय नमः ।
(४६) ॐ ह्रीं अर्हं भर्माभाय नमः ।
(४७) ॐ ह्रीं अर्हं सुप्रभाय नमः ।
(४८) ॐ ह्रीं अर्हं कनकप्रभाय नमः ।
(४९) ॐ ह्रीं अर्हं सुवर्णवर्णाय नमः ।
(५०) ॐ ह्रीं अर्हं रुक्माभाय नमः ।
(५१) ॐ ह्रीं अर्हं सूर्यकोटिसमप्रभाय नमः ।
(५२) ॐ ह्रीं अर्हं तपनीयनिभाय नमः ।
(५३) ॐ ह्रीं अर्हं तुंगाय नमः ।
(५४) ॐ ह्रीं अर्हं बालार्काभाय नमः ।
(५५) ॐ ह्रीं अर्हं अनलप्रभाय नमः ।
(५६) ॐ ह्रीं अर्हं संध्याभ्रबभ्रवे नमः ।
(५७) ॐ ह्रीं अर्हं हेमाभाय नमः ।
(५८) ॐॐ ह्रीं अर्हं तप्तचामीकरच्छवये नमः ।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

(५९) ॐ ह्रीं अर्हं **निष्टप्तकनकच्छायाय** नमः ।
(६०) ॐ ह्रीं अर्हं **कनत्कांचनसन्निभाय** नमः ।
(६१) ॐ ह्रीं अर्हं **हिरण्यवर्णाय** नमः ।
(६२) ॐ ह्रीं अर्हं **स्वर्णाभाय** नमः ।
(६३) ॐ ह्रीं अर्हं **शातकुंभनिभप्रभाय** नमः ।
(६४) ॐ ह्रीं अर्हं **द्युम्नाभाय** नमः ।
(६५) ॐ ह्रीं अर्हं **जातरुपाभाय** नमः ।
(६६) ॐ ह्रीं अर्हं **दीप्तजांबुनदद्युतये** नमः ।
(६७) ॐ ह्रीं अर्हं **सुधौतकलधौतश्रिये** नमः ।
(६८) ॐ ह्रीं अर्हं **प्रदीप्ताय** नमः ।
(६९) ॐ ह्रीं अर्हं **हाटकद्युतये** नमः ।
(७०) ॐ ह्रीं अर्हं **शिष्टेष्टाय** नमः ।
(७१) ॐ ह्रीं अर्हं **पुष्टिदाय** नमः ।
(७२) ॐ ह्रीं अर्हं **पुष्टाय** नमः ।
(७३) ॐ ह्रीं अर्हं **स्पष्टाय** नमः ।
(७४) ॐ ह्रीं अर्हं **स्पष्टाक्षराय** नमः ।
(७५) ॐ ह्रीं अर्हं **क्षमाय** नमः ।
(७६) ॐ ह्रीं अर्हं **शत्रुघ्नाय** नमः ।
(७७) ॐ ह्रीं अर्हं **अप्रतिघाय** नमः ।
(७८) ॐ ह्रीं अर्हं **अमोघाय** नमः ।
(७९) ॐ ह्रीं अर्हं **प्रशास्त्रे** नमः ।
(८०) ॐ ह्रीं अर्हं **शासित्रे** नमः ।
(८१) ॐ ह्रीं अर्हं **स्वयंभुवे** नमः ।
(८२) ॐ ह्रीं अर्हं **शांतिनिष्ठाय** नमः ।
(८३) ॐ ह्रीं अर्हं **मुनिज्येष्ठाय** नमः ।
(८४) ॐ ह्रीं अर्हं **शिवतातये** नमः ।
(८५) ॐ ह्रीं अर्हं **शिवप्रदाय** नमः ।
(८६) ॐ ह्रीं अर्हं **शांतिदाय** नमः ।
(८७) ॐ ह्रीं अर्हं **शांतिकृते** नमः ।
(८८) ॐ ह्रीं अर्हं **शान्तये** नमः ।
(८९) ॐ ह्रीं अर्हं **कांतिमते** नमः ।
(९०) ॐ ह्रीं अर्हं **कामितप्रदाय** नमः ।
(९१) ॐ ह्रीं अर्हं **श्रियांनिधये** नमः ।
(९२) ॐ ह्रीं अर्हं **अधिष्ठानाय** नमः ।
(९३) ॐ ह्रीं अर्हं **अप्रतिष्ठाय** नमः ।
(९४) ॐ ह्रीं अर्हं **प्रतिष्ठिताय** नमः ।
(९५) ॐ ह्रीं अर्हं **सुस्थिराय** नमः ।
(९६) ॐ ह्रीं अर्हं **स्थविराय** नमः ।
(९७) ॐ ह्रीं अर्हं **स्थास्णवे** नमः ।
(९८) ॐ ह्रीं अर्हं **प्रथीयसे** नमः ।
(९९) ॐ ह्रीं अर्हं **प्रथिताय** नमः ।
(१००) ॐ ह्रीं अर्हं **पृथवे** नमः ।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिकाल-दर्श्यादि-पृथिव्यंत-शतनाम-धराऽर्हत् परमेष्ठिने नमो नमः ।।९।।

जलगंधादिक अष्ट द्रव्य से, प्रभु चरणों का अर्चन है।
अनर्घ पद धारी प्रभुवर को, मम सर्वस्व समर्पण है।
त्रिकालदर्श्यादि शत नामों से, जिनवर का गुणगान करूँ।
सकल मनोरथ सिद्धीप्रद को बारम्बार प्रणाम करूँ।9।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिकाल–दर्श्यादि–पृथिव्यंत–शतनामधराऽर्हत्–परमेष्ठिने नमः अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

(१) ॐ ह्रीं अर्हं दिग्वाससे नमः ।
(२) ॐ ह्रीं अर्हं वातरसनाय नमः ।
(३) ॐ ह्रीं अर्हं निर्ग्रंथेशाय नमः ।
(४) ॐ ह्रीं अर्हं दिगंबराय नमः ।
(५) ॐ ह्रीं अर्हं निःकिञ्चनाय नमः ।
(६) ॐ ह्रीं अर्हं निराशंसाय नमः ।
(७) ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानचक्षुषे नमः ।
(८) ॐ ह्रीं अर्हं अमोमुहाय नमः ।
(९) ॐ ह्रीं अर्हं तेजोराशये नमः ।
(१०) ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तौजसे नमः ।
(११) ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानाब्धये नमः ।
(१२) ॐ ह्रीं अर्हं शीलसागराय नमः ।
(१३) ॐ ह्रीं अर्हं तेजोमयाय नमः ।
(१४) ॐ ह्रीं अर्हं अमितज्योतिषे नमः ।
(१५) ॐ ह्रीं अर्हं ज्योतिर्मूर्तये नमः ।
(१६) ॐ ह्रीं अर्हं तमोपहाय नमः ।
(१७) ॐ ह्रीं अर्हं जगच्चूड़ामणये नमः ।
(१८) ॐ ह्रीं अर्हं दीप्ताय नमः ।
(१९) ॐ ह्रीं अर्हं शंवते नमः ।
(२०) ॐ ह्रीं अर्हं विघ्नविनायकाय नमः ।
(२१) ॐ ह्रीं अर्हं कलिघ्नाय नमः ।
(२२) ॐ ह्रीं अर्हं कर्मशत्रुघ्नाय नमः ।
(२३) ॐ ह्रीं अर्हं लोकालोक प्रकाशकाय नमः ।
(२४) ॐ ह्रीं अर्हं अनिद्रालवे नमः ।
(२५) ॐ ह्रीं अर्हं अतन्द्रालवे नमः ।
(२६) ॐ ह्रीं अर्हं जागरुकाय नमः ।
(२७) ॐ ह्रीं अर्हं प्रमामयाय नमः ।
(२८) ॐ ह्रीं अर्हं लक्ष्मीपतये नमः ।
(२९) ॐ ह्रीं अर्हं जगज्ज्योतिषे नमः ।
(३०) ॐ ह्रीं अर्हं धर्मराजाय नमः ।
(३१) ॐ ह्रीं अर्हं प्रजाहिताय नमः ।
(३२) ॐ ह्रीं अर्हं मुमुक्षवे नमः ।
(३३) ॐ ह्रीं अर्हं बंधमोक्षज्ञाय नमः ।
(३४) ॐ ह्रीं अर्हं जिताक्षाय नमः ।
(३५) ॐ ह्रीं अर्हं जितमन्मथाय नमः ।
(३६) ॐ ह्रीं अर्हं प्रशान्तरसशैलूषाय नमः ।
(३७) ॐ ह्रीं अर्हं भव्यपेटकनायकाय नमः ।
(३८) ॐ ह्रीं अर्हं मूलकर्त्रे नमः ।
(३९) ॐ ह्रीं अर्हं अखिलज्योतिषे नमः ।
(४०) ॐ ह्रीं अर्हं मलघ्नाय नमः ।
(४१) ॐ ह्रीं अर्हं मूलकारणाय नमः ।
(४२) ॐ ह्रीं अर्हं आप्ताय नमः ।
(४३) ॐ ह्रीं अर्हं वागीश्वराय नमः ।
(४४) ॐ ह्रीं अर्हं श्रेयसे नमः ।
(४५) ॐ ह्रीं अर्हं श्रायसोक्तये नमः ।
(४६) ॐ ह्रीं अर्हं निरुक्तवाचे नमः ।
(४७) ॐ ह्रीं अर्हं प्रवक्त्रे नमः ।
(४८) ॐ ह्रीं अर्हं वचसामीशाय नमः ।
(४९) ॐ ह्रीं अर्हं मारजिते नमः ।
(५०) ॐ ह्रीं अर्हं विश्वभावविदे नमः ।
(५१) ॐ ह्रीं अर्हं सुतनवे नमः ।
(५२) ॐ ह्रीं अर्हं तनुनिर्मुक्ताय नमः ।
(५३) ॐ ह्रीं अर्हं सुगताय नमः ।
(५४) ॐ ह्रीं अर्हं हतदुर्नयाय नमः ।
(५५) ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशाय नमः ।
(५६) ॐ ह्रीं अर्हं श्रीश्रितपादाब्जाय नमः ।
(५७) ॐ ह्रीं अर्हं वीतभिये नमः ।
(५८) ॐ ह्रीं अर्हं अभयंकराय नमः ।
(५९) ॐ ह्रीं अर्हं उत्सन्नदोषाय नमः ।
(६०) ॐ ह्रीं अर्हं निर्विघ्नाय नमः ।
(६१) ॐ ह्रीं अर्हं निश्चलाय नमः ।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)

(६२) ॐ ह्रीं अर्हं **लोकवत्सलाय** नमः ।
(६३) ॐ ह्रीं अर्हं **लोकोत्तराय** नमः ।
(६४) ॐ ह्रीं अर्हं **लोकपतये** नमः ।
(६५) ॐ ह्रीं अर्हं **लोकचक्षुषे** नमः ।
(६६) ॐ ह्रीं अर्हं **अपारधिये** नमः ।
(६७) ॐ ह्रीं अर्हं **धीरधिये** नमः ।
(६८) ॐ ह्रीं अर्हं **बुद्धसन्मार्गाय** नमः ।
(६९) ॐ ह्रीं अर्हं **शुद्धाय** नमः ।
(७०) ॐ ह्रीं अर्हं **सूनृतपूतवाचे** नमः ।
(७१) ॐ ह्रीं अर्हं **प्रज्ञापारमिताय** नमः ।
(७२) ॐ ह्रीं अर्हं **प्राज्ञाय** नमः ।
(७३) ॐ ह्रीं अर्हं **यतये** नमः ।
(७४) ॐ ह्रीं अर्हं **नियमितेन्द्रियाय** नमः ।
(७५) ॐ ह्रीं अर्हं **भदन्ताय** नमः ।
(७६) ॐ ह्रीं अर्हं **भद्रकृते** नमः ।
(७७) ॐ ह्रीं अर्हं **भद्राय** नमः ।
(७८) ॐ ह्रीं अर्हं **कल्पवृक्षाय** नमः ।
(७९) ॐ ह्रीं अर्हं **वरप्रदाय** नमः ।
(८०) ॐ ह्रीं अर्हं **समुन्मूलितकर्मारये** नमः ।
(८१) ॐ ह्रीं अर्हं **कर्मकाष्ठाशुशुक्षणये** नमः ।
(८२) ॐ ह्रीं अर्हं **कर्मण्याय** नमः ।
(८३) ॐ ह्रीं अर्हं **कर्मठाय** नमः ।
(८४) ॐ ह्रीं अर्हं **प्रांशवे** नमः ।
(८५) ॐ ह्रीं अर्हं **हेयादेयविचक्षणाय** नमः ।
(८६) ॐ ह्रीं अर्हं **अनन्तशक्तये** नमः ।
(८७) ॐ ह्रीं अर्हं **अच्छेद्याय** नमः ।
(८८) ॐ ह्रीं अर्हं **त्रिपुरारये** नमः ।
(८९) ॐ ह्रीं अर्हं **त्रिलोचनाय** नमः ।
(९०) ॐ ह्रीं अर्हं **त्रिनेत्राय** नमः ।
(९१) ॐ ह्रीं अर्हं **त्र्यंबकाय** नमः ।
(९२) ॐ ह्रीं अर्हं **त्र्यक्षाय** नमः ।
(९३) ॐ ह्रीं अर्हं **केवलज्ञानवीक्षणाय** नमः ।
(९४) ॐ ह्रीं अर्हं **समन्तभद्राय** नमः ।
(९५) ॐ ह्रीं अर्हं **शान्तारये** नमः ।
(९६) ॐ ह्रीं अर्हं **धर्माचार्याय** नमः ।
(९७) ॐ ह्रीं अर्हं **दयानिधये** नमः ।
(९८) ॐ ह्रीं अर्हं **सूक्ष्मदर्शिने** नमः ।
(९९) ॐ ह्रीं अर्हं **जितानंगाय** नमः ।
(१००) ॐ ह्रीं अर्हं **कृपालवे** नमः ।
(१०१) ॐ ह्रीं अर्हं **धर्मदेशकाय** नमः ।
(१०२) ॐ ह्रीं अर्हं **शुभंयवे** नमः ।
(१०३) ॐ ह्रीं अर्हं **सुखसाद्भूताय** नमः ।
(१०४) ॐ ह्रीं अर्हं **पुण्यराशये** नमः ।
(१०५) ॐ ह्रीं अर्हं **अनामयाय** नमः ।
(१०६) ॐ ह्रीं अर्हं **धर्मपालाय** नमः ।
(१०७) ॐ ह्रीं अर्हं **जगत्पालाय** नमः ।
(१०८) ॐ ह्रीं अर्हं **धर्मसाम्राज्यनायकाय** नमः।

ॐ ह्रीं अर्हं दिग्वासादिधर्मसाम्राज्यनायकान्ताष्टोत्तर शतनामधराऽर्हत् परमेष्ठिने नमो नमः ।।१०।।

जलगंधादिक अष्ट द्रव्य से, प्रभु चरणों का अर्चन है।
अनर्घ पद धारी प्रभुवर को, मम सर्वस्व समर्पण है।
दिग्वासादि शत नामों से, जिनवर का गुणगान करूँ।
सकल मनोरथ सिद्धीप्रद को बारम्बार प्रणाम करूँ।।10।

ॐ ह्रीं अर्हं दिग्वासादि–धर्मसाम्राज्यनायकान्ताष्टोत्तर–शतनामधराऽर्हत्–परमेष्ठिने नमः अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

For correction contact Ahimsa Forum (www.ahimsaforum.net)